www.shabdawanisamachar.page

राष्ट्रीय हिन्दी समाचार पत्र

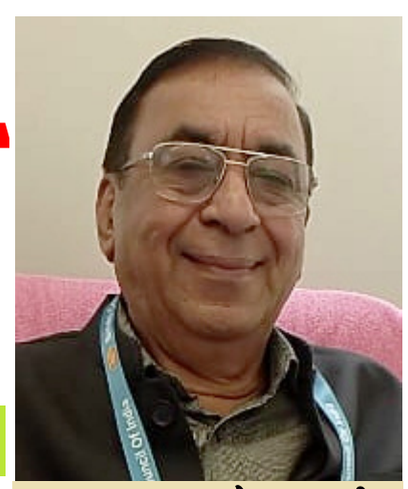
RNI NO. DELHI/2003/09049



दैनिक शब्दवाणी समाचार

नई सोच, नई उम्मीद, बेहतर भविष्य, बेहतर भारत

वर्षः 24 अंकः 304 नई दिल्ली, शुक्रवार , 28 अगस्त, 2026 पृष्ठः संख्या 12 मूल्यः 10 रूपये



सलाहकार संपादक : अशोक लालवानी

Dedicated to Sindhi Council of India

नेपाल बाढ़ में मृतकों की संख्या 359 हुई

1,500 लोगों की तलाश जारी, 300 भारतीय नागरिक भी शामिल

- 30 से ज्यादा देशों के नागरिक इस त्रासदी में लापता
- सबसे ज्यादा शव चितवन जिले से बरामद किए गए
- कई हाइड्रो प्रोजेक्ट में काम करने वाले कर्मी लापता



फोटोः एएनआई

काठमांडू, 27 अगस्त (एजेंसियां)। नेपाल में आई विनाशकारी बाढ़ में मरने वालों की संख्या 359 तक पहुंच गई है और नदी के बहाव की दिशा में पड़ने वाले कई जिलों से अभी भी शव बरामद किए जा रहे हैं। करीब 1,500 लोगों की तलाश जारी है। इनमें 300 भारतीय नागरिक भी शामिल हैं।

लापता लोगों में कई विदेशी नागरिक हैं, जो ट्रेकिंग, गाइडेड टूर या पवित्र हिंदू स्थल की तीर्थयात्रा के लिए इस क्षेत्र में पहुंचे थे। रिकॉर्ड के मुताबिक 30 से ज्यादा देशों के नागरिक इस त्रासदी में लापता हुए हैं। नेपाल पुलिस के अनुसार, सबसे ज्यादा शव दक्षिणी मैदानी इलाकों के चितवन जिले से बरामद किए गए, इसके बाद नवलपरासी ईस्ट, धाडिंग और रसुवा से शव मिले। नेपाल की सरकार ने कहा कि बाढ़ के कारण रिहायशी इलाकों, पनबिजली परियोजनाओं, कस्टम कार्यालयों और बिजली के बुनियादी ढांचे तहस-नहस हो गए और इस वजह से 800 से ज्यादा लोगों से संपर्क नहीं हो पा रहा है। अलग-अलग पनबिजली परियोजनाओं में काम करने वाले कई कर्मचारी लापता हैं।

फिर बाढ़ के खतरे का अलर्ट जारी

इसी बीच प्रशासन ने भोटेकोशी नदी में फिर बाढ़ के खतरे का अलर्ट जारी किया है। चीन से मिली सैटेलाइट तस्वीरों में बाढ़ वाली जगह पर नदी का पानी रुकने से एक झील बनने की जानकारी मिली है। झील में पानी बढ़ रहा है और इसके टूटने का खतरा भी बना हुआ है।

भारत ने राहत सामग्री की दूसरी खेप भेजी

भारत ने नेपाल के लिए 37 टन से अधिक मानवीय सहायता और आपदा राहत सामग्री, दवाइयां तथा खाद्य पैकेट की दूसरी खेप भेजी है। विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि भारत नेपाल के अधिकारियों के साथ लगातार संपर्क में है और राहत कार्यों में पूरा सहयोग दे रहा है।

नेपाल बाढ़ के बाद बिहार में अलर्ट

गंडक नदी से खतरा 9 टीमें तैनात

नई दिल्ली। राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) के आईजी नरेंद्र सिंह बुंदेला ने गुरुवार को कहा कि नेपाल में त्रासदी के बाद बाढ़ की स्थिति को देखते हुए बिहार के संवेदनशील इलाकों में नौ टीमें तैनात की गई हैं। उन्होंने बताया कि जरूरत पड़ने पर सहायता के लिए एनडीआरएफ स्टैंडबाय पर है। उन्होंने कहा कि गंडक नदी उत्तर प्रदेश और बिहार दोनों के कुछ हिस्सों को प्रभावित कर सकती है।

ज्यादातर भारतीय कैलाश मानसरोवर यात्रा पर जा रहे थे

इस बीच, नेपाल के विदेश मंत्री शिशिर खनाल ने पुष्टि की कि हिमालयी देश में आई विनाशकारी बाढ़ के बाद करीब 300 भारतीय नागरिकों के लापता होने की खबर है, जिनमें से ज्यादातर कैलाश मानसरोवर यात्रा पर जा रहे तीर्थयात्री थे।

नेशनल लॉ स्कूल ने रद्द किया दीक्षांत समारोह

सीजेआई को चीफ गेस्ट बनाने का विरोध कर रहे थे छात्र





पिछले एक माह में चौथे संस्थान ने रद्द किया समारोह

बेंगलुरु, 27 अगस्त (एजेंसियां)। सीजेआई सूर्यकांत को चीफ गेस्ट बनाए जाने के विरोध के बीच गुरुवार को बेंगलुरु नेशनल लॉ स्कूल ने 12 सितंबर को होने वाला अपना दीक्षांत समारोह रद्द कर दिया। यहां के छात्र सीजेआई को चीफ गेस्ट बनाने का विरोध कर रहे थे। यूनिवर्सिटी ने 27 अगस्त को यह जानकारी दी, हालांकि नोटिस में छात्रों के विरोध का जिक्र नहीं है। पिछले एक महीने में यह चौथा संस्थान है, जहां सीजेआई के विरोध के बाद दीक्षांत समारोह को या तो कैंसिल कर दिया गया या उसका मुख्य अतिथि बदल दिया गया। नेशनल लॉ स्कूल, बेंगलुरु के 700 से ज्यादा मौजूदा और पूर्व छात्रों ने सीजेआई सूर्यकांत और बार काउंसिल ऑफ इंडिया के चेयरमैन मनन कुमार मिश्रा को दीक्षांत समारोह में आमंत्रित किए जाने पर आपत्ति जताई थी। विरोध करने वालों में 574 मौजूदा छात्र और 128 पूर्व छात्र शामिल थे। उन्होंने बार काउंसिल ऑफ इंडिया से नालसार हैदराबाद के छात्रों और शिक्षकों से बिना शर्त माफी मांगने की मांग भी की थी।

विरोध की शुरुआत नालसार हैदराबाद से हुई

कॉकरोच जनता पार्टी के प्रदर्शन के बाद चीफ जस्टिस सूर्यकांत का विरोध लॉ यूनिवर्सिटीज में शुरू हुआ था। इसकी शुरुआत नालसार हैदराबाद से हुई। यहां करीब 1,400 छात्र पढ़ते हैं। करीब 450 छात्रों ने यूनिवर्सिटी प्रशासन को पत्र लिखकर सीजेआई को चीफ गेस्ट बनाने का न्योता वापस लेने की मांग की थी। नालसार हैदराबाद के छात्रों ने सीजेआई सूर्यकांत को मुख्य अतिथि बनाए जाने का विरोध किया।

सार संक्षेप

एनएचआरसी ने हरियाणा में दुष्कर्म पीड़िता की मौत पर संज्ञान लिया

नई दिल्ली। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने हरियाणा के पानीपत स्थित सरकारी अस्पताल में निदान परीक्षण के दौरान दुष्कर्म पीडित महिला की मृत्यु पर स्वतः संज्ञान लिया। एनएचआरसी ने बताया कि आयोग ने गत 16 अगस्त को एक नैदानिक परीक्षण के दौरान दुष्कर्म की शिकार हुई 57 वर्षीय महिला की मृत्यु से संबंधित मीडिया रिपोर्ट पर स्वतः संज्ञान लिया है।

गोवा में पुनर्विकसित हुतात्मा स्मृति स्मारक का उद्घाटन



नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बुधवार को गोवा के पत्रादेवी में पुनर्विकसित हुतात्मा स्मृति स्मारक का उद्घाटन किया। रक्षा मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि यह स्थल पुर्तगाली शासन के खिलाफ राज्य के मुक्ति संघर्ष से जुड़ा एक ऐतिहासिक स्थल है। गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत और विद्युत एवं नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री श्रीपाद येसो नाईक इस अवसर पर उपस्थित थे।

कानपुर में प्रशिक्षण विमान दुर्घटनाग्रस्त, दोनों पायलटों की मौत



कानपुर। उत्तर प्रदेश के कानपुर में गंगा नदी के किनारे स्थित एक खेत में गुरुवार को दो इंजन वाला प्रशिक्षण विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस हादसे में विमान में सवार दोनों पायलटों की मौत हो गई। हादसे की सूचना मिलते ही स्थानीय प्रशासन की टीमें मौके पर पहुंच गईं। दुर्घटना के सटीक कारणों का अभी पता नहीं चल सका है, हालांकि अधिकारियों का कहना है कि विमान दुर्घटनाग्रस्त होने से पहले संभवतः नियंत्रण खो बैठा था।

सुभाष चंद्रा को 99.97 फीसदी कर्ज छूट देने के फैसले को चुनौती देगा बैंक

नई दिल्ली, 27 अगस्त (एजेंसियां)। एस्सेल ग्रुप के संस्थापक सुभाष चंद्रा को व्यक्तिगत दिवाला समाधान प्रक्रिया में बड़ी राहत देने वाले राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण (नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल-एनसीएलटी) के फैसले के खिलाफ एचडीएफसी बैंक अपील करने की तैयारी कर रहा है। बैंक ने गुरुवार को कहा कि वह इस मामले में राष्ट्रीय कंपनी विधि अपीलीय न्यायाधिकरण (एनसीएलएटी) के समक्ष अपील दायर करने की संभावना पर विचार कर रहा है।

एचडीएफसी बैंक की यह प्रतिक्रिया उस फैसले के बाद आई है, जिसमें एनसीएलटी ने एक ऐसी पुनर्भुगतान योजना को मंजूरी दी है, जिसके तहत लगभग 22,006.57 करोड़ रुपए के स्वीकृत दावों के बदले केवल 6.5 करोड़ रुपए का भुगतान किया जाएगा। यह लेनदारों के लिए लगभग 99.97 प्रतिशत कर्ज छूट (हेयरकट) के बराबर है।



- केवल 6.5 करोड़ रुपए में निपटाया मामला

बैंक के एक प्रवक्ता ने बताया कि इस मामले में एचडीएफसी बैंक का स्वीकृत दावा कुल दावों का केवल 3.2 प्रतिशत था। यह ऋण सुविधा बैंक को एचडीएफसी लिमिटेड और एचडीएफसी बैंक के विलय के बाद विरासत में मिली थी।

स्वीकृत दावा कुल राशि का केवल 3.2 प्रतिशत था

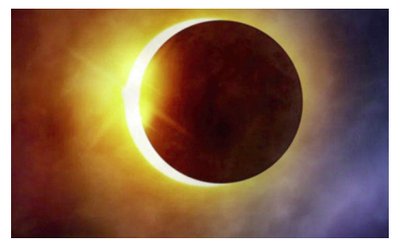
प्रवक्ता ने आगे कहा, 'एनसीएलटी मामले में एचडीएफसी बैंक का स्वीकृत दावा कुल राशि का केवल 3.2 प्रतिशत था। यह ऋण सुविधा पहले एचडीएफसी लिमिटेड द्वारा प्रदान की गई थी और विलय के बाद बैंक को प्राप्त हुई।' उन्होंने आगे कहा कि बैंक इस आदेश के खिलाफ एनसीएलएटी में अपील दायर करने के विकल्प पर विचार कर रहा है। बैंक ने यह भी स्पष्ट किया कि संबंधित ऋण के लिए आवश्यक प्रावधान पहले ही किए जा चुके हैं और यह खाता विलय प्रक्रिया के हिस्से के रूप में बैंक की पुस्तकों में आया था। कई लेनदारों ने इस योजना का विरोध किया था।

रक्षाबंधन की पूर्णिमा पर लगेगा आंशिक चंद्र ग्रहण, तांबे जैसा लाल दिखाई देगा चांद

भोपाल। खगोल विज्ञान में रुचि रखने वाले लोगों के लिए 28 अगस्त का दिन बेहद खास होने जा रहा है। इस दिन सावन मास की पूर्णिमा पर जब पूरा देश रक्षाबंधन मना रहा होगा, तब अंतरिक्ष में एक गहरा आंशिक चंद्र ग्रहण (डीप पार्शियल लुनर इकलिप्स) लगेगा, जिसमें चंद्रमा का 96.3 फीसदी हिस्सा पृथ्वी की घनी छाया में छिप जाएगा और वह तांबे जैसा लाल दिखाई देगा।

मध्य प्रदेश की नेशनल अवार्ड प्राप्त खगोल विज्ञान प्रसारक सारिका घारू ने गुरुवार को इस खगोलीय के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय समयानुसार यह घटना सुबह के समय घटित होगी, जब भारत में चंद्रमा क्षितिज से नीचे रहेगा। यही कारण है कि यह चंद्र ग्रहण भारत में बिल्कुल भी दिखाई नहीं देगा। यह ग्रहण उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका, पश्चिमी यूरोप, पश्चिम अफ्रीका और अटलांटिक के कुछ भागों में देखा जा सकेगा। सारिका ने बताया कि जब सूर्य और चंद्रमा के बीच पृथ्वी इस स्थिति में आती है कि पृथ्वी की गहरी छाया चंद्रमा को पूरी तरह नहीं ढंक पाती है, बल्कि आंशिक भाग को ढंकती है तो चंद्रमा का गहरी छाया से ढंका भाग ग्रहणग्रस्त दिखाई देता है। इसे आंशिक चंद्र ग्रहण या पार्शियल लुनर इकलिप्स कहते हैं। उन्होंने बताया कि एक गणितीय अनुमान के अनुसार, रक्षाबंधन में लगने वाले चंद्र ग्रहण को विश्व की लगभग 41 प्रतिशत जनसंख्या देख सकेगी।

सारिका ने कहा कि इससे पहले 12 अगस्त को हुए सूर्य ग्रहण के 15 दिन के अंतराल से यह घटना होने पर सोशल मीडिया में यह बताया जा रहा है कि 15 दिन के अंतर से ग्रहण होना अनिष्ट करता है, जबकि वैज्ञानिक तथ्य यह है कि कोई भी ग्रहण अकेला नहीं होता है। हर ग्रहण जोड़ी के रूप मे 15 दिन के अंतर पर होता है। आज तक जितने भी ग्रहण हुए हैं, उनके 15 दिन के अंतर पर दूसरा ग्रहण होता ही है, इसलिए शुक्रवार का चंद्र ग्रहण कोई अनोखी घटना नहीं है। सारिका ने बताया कि आंशिक ग्रहण प्रातः 08 बजकर 03 मिनिट 54 सेकंड पर आरंभ होगा और दोपहर 11 बजकर 21 मिनिट 59 सेकंड पर समाप्त हो जाएगा।



इस आंशिक चंद्र ग्रहण की अवधि लगभग 03 घंटे 18 मिनिट रहेगी। इसके बाद अगला ग्रहण 06 फरवरी, 2027 लगेगा, जो कि वलयाकार सूर्य ग्रहण और भारत मे नहीं दिखेगा। इसके बाद 20-21 फरवरी, 2027 को लगने वाले उपछाया चंद्र ग्रहण को भारत में देखा जा सकेगा। हालांकि, उपछाया ग्रहण की मान्यता नहीं है। सारिका ने बताया कि इसके बाद अगला पूर्ण सूर्यग्रहण 02 अगस्त, 2027 को लगेगा, जो कि भारत में आंशिक सूर्यग्रहण के रूप में दिखेगा। इसके बाद 16-17 अगस्त, 2027 को लगने वाला उपछाया चंद्रग्रहण भारत में नहीं दिखेगा।

अभिषेक बनर्जी के दफ्तर से नगर निगम ने हटाया अवैध बिलबोर्ड, पुलिस से भिड़े समर्थक

कोलकाता, 27 अगस्त (हि.स.)। कोलकाता के कैमैक स्ट्रीट स्थित तृणमूल कांग्रेस सांसद अभिषेक बनर्जी के दफ्तर में गुरुवार को उस समय तनाव की स्थिति पैदा हो गई, जब कोलकाता नगर निगम के अधिकारियों ने अवैध तरीके से लगाए गए बिलबोर्ड को हटाने की कार्रवाई की। कार्रवाई के दौरान अभिषेक बनर्जी के समर्थकों और पुलिस के बीच धक्का-मुक्की और हाथापाई की स्थिति बन गई। पुलिस ने कुछ लोगों को हिरासत में लिया है।

बताया गया कि बिलबोर्ड को अवैध तरीके से लगाए जाने की शिकायत कोलकाता पुलिस की ओर से नगर निगम में की गई थी। इसके बाद नगर निगम के विज्ञापन विभाग के अधिकारी गुरुवार दोपहर कैमैक स्ट्रीट स्थित दफ्तर पहुंचे। कार्रवाई की जानकारी मिलने पर अभिषेक बनर्जी के साथ तृणमूल नेता वैश्वानर चट्टोपाध्याय और डेरेक ओ'ब्रायन भी मौके पर पहुंच गए।

तृणमूल नेताओं ने नगर निगम अधिकारियों द्वारा लाए गए आदेश की वैधता पर सवाल उठाया। काफी देर तक अधिकारियों और तृणमूल नेताओं के बीच बहस चलती रही। इसके बाद नगर निगम के अधिकारी लौट गए, लेकिन बाद में बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों के साथ दोबारा पहुंचे और दफ्तर में प्रवेश किया।

बिलबोर्ड दफ्तर की छत पर लगा था। उसे हटाने के लिए पुलिस और नगर निगम के अधिकारियों को छत तक पहुंचना था। आरोप है कि अभिषेक बनर्जी के समर्थकों ने सीढ़ियों पर पुलिस का रास्ता रोक दिया। इस दौरान दोनों पक्षों के बीच धक्का-मुक्की हुई। डेरेक ओ'ब्रायन के भी सीढ़ियों पर गिरने की बात सामने आई है। बाद में पुलिसकर्मी आगे बढ़ते हुए छत पर पहुंचे और बिलबोर्ड वाले हिस्से का ताला तोड़कर उसे हटा दिया। पहले बिलबोर्ड से तृणमूल कांग्रेस का नाम वाला बैनर हटाया गया और इसके बाद पूरा बोर्ड खोल दिया गया।

अभिषेक बनर्जी ने कार्रवाई को निजी संपत्ति में अवैध हस्तक्षेप बताया। उन्होंने आरोप लगाया कि इलाके में फुटपाथ और दुकानों के ऊपर कई बिलबोर्ड लगे हैं, लेकिन केवल उनके दफ्तर के बोर्ड को निशाना बनाया जा रहा है। उन्होंने इसे राजनीतिक प्रतिशोध करार देते हुए भाजपा और मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी पर निशाना साधा।

अभिषेक ने कहा कि तृणमूल कांग्रेस को खत्म करने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने दावा किया कि पार्टी को बैठक और जुलूस की अनुमति नहीं देने, नेताओं पर कार्रवाई करने और पार्टी कार्यालय तथा बिलबोर्ड तोड़ने जैसी कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने कहा कि तृणमूल घासफूल है और जितना काटा जाएगा, उतना ही बढ़ेगा।

प्रधानमंत्री मोदी का ओलंपिक खेलों में भागीदारी बढ़ाने का आह्वान

हमें अभी से ओलंपिक 2036 की तैयारी शुरू करनी होगी

नई दिल्ली, 27 अगस्त (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को ओलंपिक खेलों में भागीदारी बढ़ाने और ओलंपिक 2036 के लिए तैयारी अभी से शुरू करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि देश का खेल विजन केवल पदक जीतने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह 'विकसित भारत' के निर्माण में खेल और युवाओं की ताकत का उपयोग करने के एक बड़े मिशन का हिस्सा है। श्री मोदी ने यहां वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए 'खेलो इंडिया डायलॉग' को संबोधित करते हुए खेल, युवा नेतृत्व, फिटनेस, नागरिक जिम्मेदारी और राष्ट्र-निर्माण पर देशव्यापी चर्चा के तहत देशभर के युवाओं से बातचीत की।



- अधिक अंतरराष्ट्रीय खेलों में प्रतिस्पर्धा करने की जरूरत पर बल दिया

'मेरा युवा भारत' द्वारा राष्ट्रीय खेल दिवस समारोह के हिस्से के रूप में आयोजित इस कार्यक्रम का मकसद युवाओं को भारत की खेल यात्रा से जुड़ने, अपनी उम्मीदें साझा करने और देश के युवा और खेल अर्थव्यस्था को मजबूत करने के लिए विचार देने का मंच प्रदान करना है।

बीपीसीएल के चेयरमैन ने किया साफ

ई20 पेट्रोल को ई10 से बदलने की कोई योजना नहीं

नई दिल्ली, 27 अगस्त (एजेंसियां)। भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) के चेयरमैन और एमडी संजय खन्ना ने गुरुवार को कहा कि ई20 पेट्रोल को ई10 से बदलने का कोई प्रस्ताव नहीं है। उन्होंने स्पष्ट किया कि वर्तमान में जो चर्चा चल रही है, वह केवल इस बात को लेकर है कि क्या पुराने वाहनों के लिए 10 प्रतिशत एथेनॉल मिश्रित ईंधन का अलग विकल्प उपलब्ध कराया जाना चाहिए। कंपनी की वार्षिक आम बैठक के बाद मीडिया से बातचीत में बीपीसीएल के चेयरमैन ने कहा कि कुछ हलकों में यह बहस चल रही है कि पुराने वाहनों को कम एथेनॉल मिश्रण वाले ईंधन की सुविधा मिलनी चाहिए या नहीं। उन्होंने कहा, 'मैंने कभी नहीं कहा कि ई20 को ई10 में बदला जाएगा।

उपराष्ट्रपति ने किया 'संकल्प से सिद्धि का मोदी युग' पुस्तक का विमोचन

नई दिल्ली, 27 अगस्त (हि.स.)। उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन ने गुरुवार को भवन में राज्यसभा सांसद घनश्याम तिवाड़ी द्वारा लिखित पुस्तक 'संकल्प से सिद्धि का मोदी युग' का विमोचन किया।

'संकल्प से सिद्धि का मोदी युग' पुस्तक के शीर्षक को एक सशक्ती और प्रेरणादायक संदेश से परिपूर्ण बताते हुए, सी.पी. राधाकृष्णन ने कहा कि संकल्प केवल एक इच्छा मात्र नहीं है, बल्कि यह समर्पण, कड़ी मेहनत और अनुशासन पर आधारित एक दृढ़ निश्चय है।

उन्होंने कहा कि यह पुस्तक पिछले बारह वर्षों की भारत की यात्रा को रेखांकित करती है, जिसमें प्रशासनिक सफलताओं के साथ-साथ एक वैचारिक पुनर्जागरण भी शामिल है, और यह इस पूरी यात्रा को 'विकसित भारत @ 2047' के विजन के संदर्भ में प्रस्तुत करती है।



उपराष्ट्रपति ने इस बात पर प्रकाश डाला कि यह पुस्तक हमारी समकालीन शासन व्यवस्था को स्वामी विवेकानंद, रवींद्रनाथ टैगोर, केशव बलिराम हेडगेवार, वीर सावरकर और अटल बिहारी वाजपेयी जैसे महान राष्ट्रीय विचारकों के विचारों और आदर्शों से जोड़ने का एक सार्थक प्रयास है। उन्होंने इस तथ्य पर ध्यान आकृष्ट किया कि लेखक ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सही मायनों में 'सेतु पुरुष' - यानी सपनों और वास्तविकता के बीच का सेतु के रूप में वर्णित किया , जो इन महान विचारकों के 'संकल्प' और आज के भारत में उसकी 'सिद्धि' के बीच की कड़ी को दर्शाता है।

सी.पी. राधाकृष्णन ने कहा कि यह पुस्तक 'राष्ट्र प्रथम', एकात्म मानववाद और अंत्योदय, राष्ट्रीय अखंडता, सामाजिक व आर्थिक न्याय, महिला-नेतृत्व वाले विकास, आत्मनिर्भर शिक्षा और पारदर्शी शासन की भावना को एक साथ लाती है। उन्होंने कहा कि यह कृति शासन की विभिन्न पहलों को शाश्वत राष्ट्रीय विचारों को मूर्त रूप प्रदान करने के एक प्रयास के रूप में प्रस्तुत करती है, तथा पाठकों को भारत की विकास यात्रा पर चिंतन करने एवं पूर्ण आत्मविश्वास तथा आशावाद के साथ भविष्य की ओर देखने के लिए प्रेरित करती है।

इस अवसर पर केंद्रीय विधि और न्याय मंत्रालय के राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, राज्यसभा सांसद व लेखक घनश्याम तिवाड़ी, राज्यसभा सांसद लहर सिंह सिरोया और प्रभात प्रकाशन के पवन कुमार भी उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

मुख्यमंत्री ने दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों से आए बच्चों संग मनाया रक्षाबंधन का पर्व

नई दिल्ली, 27 अगस्त (हि.स.)। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने रक्षाबंधन की पूर्व संध्या पर गुरुवार को मुख्यमंत्री जनसेवा सदन में दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों से आए बच्चों के साथ आत्मीयता और उल्लास के साथ रक्षाबंधन का पर्व मनाया। इस अवसर पर बच्चों ने मुख्यमंत्री को अपने हाथों से राखियां बांधीं, मिठाई खिलाई, कविताएं और गीत सुनाए। मुख्यमंत्री ने उनके साथ खुलकर संवाद किया और उनके स्कूल, पढ़ाई और परिवार से जुड़ी बातें पूछीं। बच्चों ने भी पूरे उत्साह के साथ मुख्यमंत्री से बातचीत की और उन्हें रक्षाबंधन की शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री ने बच्चों को उपहार देकर उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। इस दौरान कई बच्चों ने उनके लिए विशेष रूप से कविताएं और गीत तैयार किए थे, जिन्हें उन्होंने मुख्यमंत्री के सामने प्रस्तुत किया। मुख्यमंत्री ने बच्चों की प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए उन्हें प्रोत्साहित किया और कहा कि राखी केवल एक धागा नहीं, बल्कि एक-दूसरे के प्रति प्रेम, विश्वास और जिम्मेदारी का प्रतीक है। बच्चों के साथ सहज संवाद के दौरान मुख्यमंत्री ने उनसे पूछा कि वे अपने भाई-बहन के साथ झगड़ते हैं या नहीं। बच्चों के जवाब पर मुख्यमंत्री ने मुस्कुराते हुए उन्हें रक्षाबंधन के दिन एक-दूसरे से झगड़ा न करने और हमेशा प्यार से रहने का वादा भी कराया। इस दौरान पूरा माहौल हंसी, अपनापन और बच्चों की मासूमियत से भर गया। इस दौरान एक बच्ची ने मुख्यमंत्री से प्रेरित होकर कहा कि वह भी बड़ी होकर आप जैसी बनना चाहती है। बच्ची की इस बात पर मुख्यमंत्री ने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा कि वह खूब पढ़े और अपने सपनों को पूरा करे। मुख्यमंत्री ने बच्चों को शिक्षा के महत्व के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि उनका भविष्य उनकी पढ़ाई और मेहनत से बनेगा तथा सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि हर बच्चे को आगे बढ़ने के अवसर मिलें। इस अवसर पर बच्चों ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के लिए स्वयं बनाई हुई राखियां भी भेंट कीं। बच्चों ने बताया कि इन राखियों को उन्होंने काफी मेहनत से तैयार किया है। बच्चों के समूह ने मुख्यमंत्री के स्वच्छ यमुना अभियान से प्रेरणा लेने की बात भी कही। मुख्यमंत्री ने बच्चों की रचनात्मकता और जागरूकता की सराहना करते हुए उन्हें दिल्ली को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने में योगदान देने के लिए प्रेरित किया। रक्षाबंधन के अवसर पर मुख्यमंत्री ने बच्चों को उपहार और चॉकलेट्स भी दिए। उन्होंने बच्चों से कहा कि वे अपनी मां के लिए भी उपहार लेकर जाएं और उन्हें अपनी ओर से भेंट करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि बच्चों के बीच त्योहारों की खुशी और भी विशेष होती है। उन्होंने कहा कि दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों से आए इन बच्चों ने जिस प्यार, अपनापन और उत्साह के साथ रक्षाबंधन मनाया, वह उनके लिए बेहद भावुक और यादगार क्षण है। बच्चों का प्यार और आशीर्वाद किसी सौगात से कम नहीं है। उनकी मासूम मुस्कान, उत्साह और सपने दिल्ली के भविष्य की तस्वीर हैं। उन्होंने कामना की कि हर बच्चे की मुस्कान हमेशा बनी रहे, उन्हें अपने सपनों को पूरा करने के लिए हर आवश्यक अवसर मिले और दिल्ली उनके लिए सुरक्षित, संवेदनशील और संभावनाओं से भरी जगह बने।

दिल्ली में 24 घंटों में एच1एन1 के 166 मामले, स्वास्थ्य मंत्री ने किया इंदिरा गांधी अस्पताल का निरीक्षण

नई दिल्ली, 27 अगस्त (हि.स.)। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने बुधवार को राजधानी में एच1एन1 के मामलों को देखते हुए द्वारका के इंदिरा गांधी अस्पताल का निरीक्षण किया। उन्होंने अस्पताल और स्वास्थ्य विभाग की तैयारियों की भी समीक्षा की। दिल्ली में पिछले 24 घंटों में एच1एन1 के 166 मामले सामने आए हैं, जबकि राजधानी में कुल मामलों की संख्या बढ़कर 2612 हो गई है। वहीं इन्फ्लूएंजा-ए के कुल मामले लगभग 3300 हो गए हैं। स्वास्थ्य मंत्री अस्पताल में बनाए गए विशेष एन1एन1 आइसोलेशन वार्ड का बारीकी से निरीक्षण करने के साथ मरीजों के इलाज और देखभाल के इंतजामों का भी जायजा लिया। उन्होंने अस्पताल के डॉक्टरों, हेल्थकेयर वर्करों और मरीजों से बातचीत की और बेड, ऑक्सीजन, दवाइयों, फ़्लूइड, टेस्टिंग सुविधाओं और दूसरी जरूरी मेडिकल सुविधाओं की उपलब्धता का भी जायजा लिया। मंत्री ने जागरूकता और जनसंपर्क अभियान के तहत इस्तेमाल किए जा रहे आईईसी मटीरियल की भी समीक्षा की, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि एच1एन1 की रोकथान और बचाव, लक्षणों और जरूरी सावधानियों के बारे में लोगों तक सही जानकारी समय पर पहुंचाई जा सके। इंदिरा गांधी अस्पताल के निरीक्षण के बाद स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि मैं दिल्ली की जनता को भरोसा दिलाना चाहता हूं कि किसी भी व्यक्ति को घबराने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं है। दिल्ली सरकार और हमारा स्वास्थ्य विभाग पूरी तरह से तैयार हैं। हमारे डॉक्टर, नर्स, लैब टेक्नीशियन और अन्य स्वास्थ्यकर्मी पूरी तरह से सतर्क हैं और पूरी गंभीरता और समर्पण के साथ अपनी जिम्मेदारियां निभा रहे हैं। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि इंदिरा गांधी अस्पताल का आज का दौरा जमीनी स्तर पर तैयारियों का जायजा लेने की हमारी सरकार की लगातार कोशिशों का हिस्सा है। उन्होंने आगे कहा कि अस्पताल में एच1एन1 मरीजों के लिए एक विशेष आइसोलेशन वार्ड बनाया गया है। ऑक्सीजन, दवाइयों, फ़्लूइड, टेस्टिंग और दूसरी जरूरी मेडिकल सुविधाओं के लिए पर्याप्त इंतजाम किए गए हैं। हम लगातार अस्पताल की तैयारियों की समीक्षा कर रहे हैं और यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि मरीजों की देखभाल में किसी भी तरह की कोई कमी नहीं रहे। अस्पताल ने स्वाइन फ्लू/एच1एन1 के लिए एक स्पेशल क्लिनिक भी बनाया है, जहां पर संदिग्ध मरीजों की सबसे पहले जांच की जाएगी। स्वास्थ्य मंत्री ने दिल्ली के नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि किसी को भी घबराने की कोई जरूरत नहीं है। इस बीमारी के लक्षण ज्यादातर आम मौसमी फ़्लू या बुखार जैसे ही हैं और मरीज इलाज के बाद ठीक होकर अपने घर लौट रहे हैं। वर्तमान में जो मरीज फिलहाल अस्पतालों में भर्ती हैं, उनका डॉक्टर उचित इलाज और निगरानी कर रहे हैं।

ओम प्रकाश कोहली स्मृति समिति द्वारा विकसित भारत 2047 और नागरिक की भूमिका पर विशेष व्याख्यान का आयोजन



नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय में ओम प्रकाश कोहली स्मृति समिति के द्वारा विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद थे। आयोजन की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. योगेश सिंह ने की।

इस अवसर पर इंद्रमोहन कपाही, बलराम पानी, ऋतु कोहली आदि विद्वान अतिथि के रूप में मंचासीन रहे। आयोजन की शुरूआत प्रो. राजकुमार भाटिया जी के वक्तव्य एवं कोहली जी के संस्मरणों से हुई।

श्री राम नाथ कोविंद ने कहा कि ओमप्रकाश कोहली एक बेहतर शिक्षक थे। उन्होने अभाव में अपना जीवन जिया। आपातकाल के दौरान अपने विचारों के साथ समझौता नहीं किया। राज्यसभा सांसद व राज्यपाल के रूप से बेहतरीन सेवा दी। उन्होंने जीवन में साधारण रहकर श्रेष्ठता का प्रणाम दिया। राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार के नेतृत्व की प्रशंसा की।

एक अच्छा इंसान ही एक अच्छा नागरिक बनाता है, जिसमें शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आने वाली पीढ़ी में सही मूल्यों का संचार होना चाहिए।

प्रो. योगेश सिंह जी ने कहा कि ओमप्रकाश जी नदी की तरह थे जहां गए मिट्टी गीली की। जीवन मे संवेदना का होना बहुत आवश्यक है। विकसित भारत के मायने 25 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को हासिल करना है।

जिसमें समरसता हो कोई छोटा बड़ा न हो। हम अपने कर्तव्य ठीक से निभाते हैं तो विकसित भारत बनेगा। अनुशासन, राष्ट्र एवं चरित्र निर्माण के द्वारा ही विकसित भारत बनेगा। दिल्ली विश्वविद्यालय को शिखर पर पहुचना भी है और ठहरना भी है।

इस मौके पर उनके परिवार से सुपर्णा खुराना, ऋतु कोहली और आकांक्षा खुराना आदि उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन प्रो इंद्रमोहन कपाही ने प्रस्तुत किया।

डीयू में विकसित भारत @ 2047 और नागरिकों की भूमिका विषय पर पूर्व राष्ट्रपति ने किया संबोधित

नई दिल्ली, 27 अगस्त (हि.स.)। दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) और ह्यओम प्रकाश कोहली स्मृति समिति की ओर से ओम प्रकाश कोहली मेमोरियल लेक्चर के तहत विकसित भारत @ 2047 और नागरिकों की भूमिका विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। वाइस रीगल लॉज स्थित कन्वेंशन हॉल में आयोजित कार्यक्रम में भारत के पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद मुख्य अतिथि रहे, जबकि अध्यक्षता डीयू के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने की। अपने संबोधन में पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि ह्जीवन में साधारण बनना सबसे बड़ा काम है। उन्होंने कहा कि यदि कोई व्यक्ति बड़े पद पर पहुंचने के बाद भी साधारण बना रहता है तो यह उसके लिए श्रेष्ठ उपलब्धि है। ओम प्रकाश कोहली को याद करते हुए उन्होंने कहा कि कोहली किसी भी पद पर रहे, लेकिन उनके भीतर एक विनम्र शिक्षक हमेशा जीवित रहा।

रामनाथ कोविंद ने कहा कि 2047 तक विकसित भारत का निर्माण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का सामूहिक संकल्प है। उन्होंने कहा कि भारत ने पिछले एक दशक में आर्थिक, सामाजिक, रक्षा और अंतरिक्ष सहित विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। अब देश के सामने विकास को टिकाऊ और समावेशी बनाने की चुनौती है।

पूर्व राष्ट्रपति ने ओम प्रकाश कोहली को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि वह केवल विचारक नहीं, बल्कि अपने आप में एक संस्था थे। कठिन परिस्थितियों और आपातकाल के दौर में भी वे अपने दायित्वों और सिद्धांतों से विचलित नहीं हुए। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख माध्यम बताते हुए कहा कि शिक्षक की जिम्मेदारी केवल ज्ञान देना नहीं है, बल्कि ज्ञान को मूल्यों और कौशल से जोड़कर विद्यार्थियों को बेहतर इंसान और जिम्मेदार नागरिक बनाना भी है।

आदर्श नगर में औद्योगिक अवसंरचना और हरित क्षेत्र को मजबूत करेगी सरकार : सिरसा

नई दिल्ली, 27 अगस्त (हि.स.)। दिल्ली के उद्योग, खाद्य एवं आपूर्ति एवं पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने गुरुवार को आदर्श नगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक राज कुमार भाटिया के साथ बैठक की। बैठक में आदर्श नगर विधानसभा क्षेत्र में औद्योगिक अवसंरचना, पर्यावरण संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन और हरित क्षेत्र के विस्तार से संबंधित विभिन्न मुद्दों की समीक्षा की गई। बैठक में डीएसआईआईडीसी के वरिष्ठ अधिकारी, उत्तर-पश्चिमी दिल्ली के जहांगीरपुरी स्थित राजस्थान उद्योग नगर से जुड़े प्रतिनिधि तथा वन एवं खाद्य एवं आपूर्ति विभाग के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

राजस्थान उद्योग नगर, जो लघु एवं मध्यम उद्यमों, कार्यशालाओं, हल्के विनिर्माण और थोक व्यापारिक गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण औद्योगिक एवं वाणिज्यिक क्षेत्र है, वहां अवसंरचना के विकास और रखरखाव से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई।

राजस्थान उद्योग नगर में डीएसआईआईडीसी द्वारा कराए जा रहे सड़क और वर्षा जल निकासी कार्यों की समीक्षा करते हुए सिरसा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी इन्फ्रास्ट्रक्चर कार्य टिकाऊ, दीर्घकालिक और स्वीकृत डिजाइन एवं तकनीकी मानकों के अनुरूप हों। मंत्री सिरसा ने कहा, इन अवसंरचना परियोजनाओं पर जनता का पैसा खर्च हो रहा है, इसलिए गुणवत्ता के साथ किसी भी प्रकार का समझौता स्वीकार्य नहीं है।

हमारा उद्देश्य केवल कार्य पूरा करना नहीं, बल्कि ऐसी अवसंरचना तैयार करना होना चाहिए जो वर्षों तक टिकाऊ और सुचारू रूप से कार्य करती रहे। डिजाइन और कार्यान्वयन, दोनों स्तरों पर उचित ऑडिट सुनिश्चित किया जाना चाहिए। मंत्री ने अधिकारियों को वर्षा जल निकासी नालों की नियमित सफाई और रखरखाव के लिए एक प्रभावी व्यवस्था विकसित करने के भी निर्देश दिए।

डॉ. भीमराव आंबेडकर कॉलेज में लचीलापन और आत्म-जागरूकता पर इंटरैक्टिव सत्र आयोजित

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. भीमराव आंबेडकर कॉलेज ने ब्रह्माकुमारीज के प्रतिष्ठित वक्ताओं के सहयोग से लचीलापन और आत्म-जागरूकता विषय पर एक इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किया। इस सत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को अपने भावनात्मक कल्याण पर विचार करने, स्वयं को बेहतर ढंग से समझने और दैनिक जीवन में अधिक स्वस्थ आदतें विकसित करने के लिए प्रेरित करना था।



कार्यक्रम की शुरूआत बीके राकेश ने की, जिन्होंने विद्यार्थियों को ब्रह्माकुमारीज, इसके मूल मूल्यों तथा आध्यात्मिक विकास और कल्याण के प्रति इसके दृष्टिकोण से परिचित कराया। इसके बाद बीके मीनू ने लचीलापन और भावनात्मक प्रबंधन के विषय पर चर्चा की तथा इस बात पर ध्यान आकर्षित किया कि अपेक्षाएँ हमारी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। विद्यार्थियों को कठिन परिस्थितियों का सामना अधिक स्वीकार्यता, लचीलेपन और अनुकूलनशीलता के साथ करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

चर्चा को आगे बढ़ाते हुए बीके किरण ने आत्म-जागरूकता के बारे में बात की और स्वयं की गहरी समझ विकसित करने के लिए बाहरी पहचान तथा सामाजिक भूमिकाओं से आगे देखने के महत्व पर प्रकाश डाला। बीके बबीता ने युवाओं पर डिजिटल आदतों, विशेष रूप से लंबे समय तक सोशल मीडिया के उपयोग और देर रात तक स्क्रॉल करने के बढ़ते प्रभाव को संबोधित किया। उन्होंने तकनीक के प्रति अधिक जागरूक और संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

एक निर्देशित ध्यान सत्र कार्यक्रम का अभिन्न हिस्सा रहा, जिसने विद्यार्थियों को कुछ समय रुकने, आराम करने और शांत आत्म-चिंतन में संलग्न होने का अवसर दिया।

यह सत्र प्राचार्य प्रो. सदा नंद प्रसाद के प्रोत्साहन और सहयोग से, प्रो. अनीता श्रीवास्तव, संयोजक; डॉ. नेहा अरोड़ा, सह-संयोजक; तथा डॉ. सीमा सोढ़ी, कार्यक्रम समन्वयक के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। संकाय सदस्यों और विद्यार्थियों ने सक्रिय एवं उत्साहपूर्ण भागीदारी की।

कार्यक्रम का समापन चिंतनपूर्ण वातावरण में हुआ, जिसमें समग्र कल्याण को बढ़ावा देने में लचीलापन, भावनात्मक संतुलन, आत्म-जागरूकता और सजग जीवनशैली के महत्व को रेखांकित किया गया।

एमसीडी की विभिन्न समितियों के अध्यक्ष-उपाध्यक्ष पद के लिए नामांकन दाखिल, 2 और 3 सितंबर को होगा चुनाव

नई दिल्ली, 27 अगस्त (हि.स.)। दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) की वर्ष 2026-27 के लिए विशेष, तदर्थ एवं वैधानिक समितियों के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष पद के चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो गई है। गुरुवार को नामांकन दाखिल करने की अंतिम तिथि पर विभिन्न पदों के लिए पार्षदों ने पर्चे दाखिल किए। समितियों के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का चुनाव उनकी पहली बैठक में 2 और 3 सितंबर को होगा।

निगम सचिव कार्यालय में नामांकन प्रक्रिया के दौरान महापौर प्रवेश वाही, उप महापौर डॉ. मोनिका पंत, सदन के नेता जय भगवान यादव सहित बड़ी संख्या में पार्षद मौजूद रहे। नामांकन प्रक्रिया पूरी होने के बाद महापौर ने सभी उम्मीदवारों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि समितियों में वरिष्ठता, अनुभव, युवाओं और महिलाओं को संतुलित प्रतिनिधित्व देने का प्रयास किया गया है। वैधानिक समितियों में शिक्षा समिति के अध्यक्ष पद के लिए योगेश वर्मा (वार्ड 064) और उपाध्यक्ष पद के लिए अमित खरखड़ी (वार्ड 127) ने नामांकन किया है। वहीं, नियुक्ति, पदोन्नति, अनुशासनात्मक एवं संबद्ध मामले समिति के अध्यक्ष पद के लिए वरिष्ठ पार्षद मुकेश कुमार गोयल (वार्ड 015) और उपाध्यक्ष पद के लिए रीना माहेश्वरी (वार्ड 221) ने पर्चा भरा है। मुकेश गोयल ने जिम्मेदारी के लिए भाजपा नेतृत्व का आभार जताया। वर्क्स कमेटी के अध्यक्ष पद के लिए प्रीति (वार्ड 217) और उपाध्यक्ष पद के लिए धर्मवीर शर्मा (वार्ड 051) ने नामांकन किया। चिकित्सा राहत एवं जन स्वास्थ्य समिति के अध्यक्ष पद के लिए विकेश सेठी (वार्ड 068) तथा उपाध्यक्ष पद के लिए रमेश कुमार गर्ग (वार्ड 204) उम्मीदवार हैं। पर्यावरण



प्रबंधन सेवा समिति में संदीप कपूर (वार्ड 211) अध्यक्ष और अनिता (वार्ड 161) उपाध्यक्ष पद की प्रत्याशी हैं। उद्यान समिति के अध्यक्ष पद के लिए नरेंद्र कुमार सिंह (वार्ड 023) और उपाध्यक्ष पद के लिए वीणा असीजा (वार्ड 065), विधि एवं सामान्य प्रयोजन समिति के अध्यक्ष पद के लिए प्रियंका गौतम (वार्ड 194) और उपाध्यक्ष पद के लिए मोनिका गोयल (वार्ड 048) ने नामांकन किया है। पार्षदों की आचार संहिता समिति के अध्यक्ष पद के लिए नरेंद्र कुमार (वार्ड 119) और उपाध्यक्ष पद के लिए सुमन त्यागी (वार्ड 092) उम्मीदवार हैं। उच्चाधिकार प्राप्त संपत्ति कर समिति और नगर लेखा समिति के पदेन अध्यक्ष के रूप में स्थायी समिति की अध्यक्ष सत्या शर्मा रहेंगी। संपत्ति कर समिति के उपाध्यक्ष पद के लिए रेनू चौधरी (वार्ड 197) और नगर लेखा समिति के उपाध्यक्ष पद के लिए अनुराधा शर्मा (वार्ड 122) ने नामांकन किया है। खेल संवर्धन समिति के अध्यक्ष पद के लिए इंद्रजीत सहरावत (वार्ड 133) और उपाध्यक्ष पद के लिए पूनम सैनी (वार्ड 046), आश्वासन समिति के अध्यक्ष पद के लिए कमल भारद्वाज (वार्ड 148) और उपाध्यक्ष पद के लिए सोनी पांडे (वार्ड 249) ने नामांकन किया। हिंदी समिति के अध्यक्ष पद के लिए उप महापौर डॉ. मोनिका पंत और उपाध्यक्ष पद के लिए मनीषा सिंह (वार्ड 233) प्रत्याशी हैं।

खाद्य सुरक्षा विभाग ने 131 किलो एक्सपायर्ड खाद्य पदार्थों को किया नष्ट

नई दिल्ली, 27 अगस्त (हि.स.)। दिल्ली खाद्य सुरक्षा विभाग ने रक्षाबंधन और अन्य त्योहार से पहले डेयरी पदार्थों, मिठाइयों और खाने-पीने की वस्तुओं की मांग बढ़ने की संभावना को देखते हुए दिल्ली में जांच, निगरानी और नियमों को कड़ाई से लागू करने के अभियान को तेज कर दिया है। यह अभियान दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह के निर्देश पर चलाया जा रहा है। अभियान के तहत लगभग 131 किलो एक्सपायर हो चुके खाद्य पदार्थ को मौके पर नष्ट कर दिया गया। स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि खाद्य सुरक्षा विभाग की टीमों ने मिठाई बनाने वाली जगहों, मंडियों, बाजार, खाने-पीने की दुकानों और दूसरी संवेदनशील जगहों पर जांच और सैंपलिंग अभियान तेज कर दिए हैं। इसमें डेयरी पदार्थों जैसे पनीर, खोया और घी के साथ-साथ मिठाइयों और ज्यादा मांग वाली खाने की वस्तुओं पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

एनडीएमसी उपाध्यक्ष ने नवयुग स्कूल में विद्यार्थियों के साथ मनाया रक्षाबंधन, स्कूल का निरीक्षण कर अधिकारियों को दिए निर्देश

नई दिल्ली, 27 अगस्त (हि.स.)। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) के उपाध्यक्ष कुलजीत सिंह चहल ने गुरुवार को लक्ष्मीबाई नगर स्थित नवयुग स्कूल के विद्यार्थियों के साथ रक्षाबंधन का त्योहार मनाया। कार्यक्रम के दौरान स्कूल में राखी बनाने की प्रतियोगिता आयोजित की गई। विद्यार्थियों ने रंग-बिरंगी राखियां बनाईं और चहल को राखी बांधी।

उन्होंने कार्यक्रम के आयोजन के लिए स्कूल की प्रधानाचार्या, शिक्षकों और कर्मचारियों की प्रशंसा की। इस अवसर पर कुलजीत सिंह चहल ने कहा कि रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के प्रेम का त्योहार नहीं है, बल्कि यह प्रेम, सम्मान, विश्वास और जिम्मेदारी का संदेश भी देता है।

उन्होंने कहा कि बेटियों और महिलाओं को आगे बढ़ने के समान अवसर देना एक मजबूत और विकसित भारत के लिए जरूरी है। उन्होंने विद्यार्थियों को मेहनत से पढ़ाई करने और अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित किया। स्कूल की प्रधानाचार्या अर्चना ने चहल का स्कूल आने और विद्यार्थियों के साथ रक्षाबंधन मनाने के लिए आभार व्यक्त किया।

रक्षा बंधन पर दिल्ली भाजपा महिला मोर्चा पदाधिकारियों ने प्रदेश भाजपा अध्यक्ष को राखी बांध दीघार्यु की कामना की

नई दिल्ली, 27 अगस्त (हि.स.)। रक्षाबंधन के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) दिल्ली महिला मोर्चा की महिलाओं एवं कार्यकर्ताओं ने मोर्चा अध्यक्ष अर्चना गुप्ता के नेतृत्व में दिल्ली भाजपा अध्यक्ष एवं केंद्रीय राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा को राखी बांधकर भाई-बहन के पवित्र रिश्ते में स्नेह, विश्वास और सम्मान की भावना को मजबूत किया।

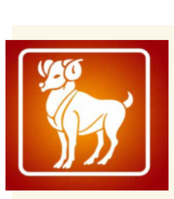
महिला मोर्चा की बहनों ने हर्ष मल्होत्रा को राखी बांधते हुए उनके स्वस्थ एवं दीघार्यु जीवन की कामना की।

मोर्चा अध्यक्ष अर्चना गुप्ता ने कहा कि मात्र 20 माह में दिल्ली में 27 वर्ष बाद आई भाजपा की रेखा गुप्ता सरकार ने जहां दिल्ली का रखरखाव सुधारा है तो वहीं तीज त्योहार पर फ्री गैस सिलेंडर, विधा वाहिनी योजना एवं अब दिल्ली लक्ष्मी योजना लागू करके दिल्ली की सामान्य वर्ग की महिलाओं के जीवन में सार्थक परिवर्तन ला दिया है।

राखी लोकतांत्रिक संस्थाओं और भावी पीढ़ी के बीच एक बंधनकारी संकल्प : विजेंद्र गुप्ता

नई दिल्ली, 27 अगस्त (हि.स.)। दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि राखी का धागा केवल सुरक्षा का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह लोकतांत्रिक संस्थाओं और भावी पीढ़ी के बीच एक ऐसा बंधनकारी संकल्प है, जो एक मजबूत, जागरूक और जिम्मेदार भारत के निर्माण का वचन देता है। यह बात विजेंद्र गुप्ता ने गुरुवार को विधानसभा में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान कही। इस हर्षोल्लासपूर्ण और भावनात्मक कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने विजेंद्र गुप्ता की कलाई पर राखियां बांधीं और उनके साथ उत्साह के साथ रक्षाबंधन का पर्व मनाया। विद्यार्थियों से रूबरू होते हुए विजेंद्र गुप्ता ने सभी विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं और उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने तथा उच्च नैतिक मूल्यों के साथ नेतृत्व करने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान विद्यार्थियों ने भारत की संसदीय विरासत की एक समृद्ध और ज्ञानवर्धक यात्रा का अनुभव किया, जिसकी शुरूआत ऐतिहासिक विधानसभा भवन के महत्व को समझने से हुई। वर्ष 1912 में निर्मित यह भवन पूर्व में ऐतिहासिक केंद्रीय विधान सभा का सदन रहा है और विट्ठलभाई पटेल जैसी महान विभूतियों की अमिट विरासत को संजोए हुए है।

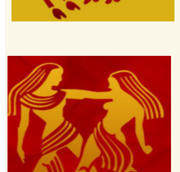
भविष्यफल



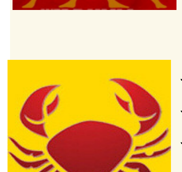
मेष- कामकाज की व्यस्तता से सुख-चैन प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूति मिलेगी। लाभमार्ग प्रशस्त होगा। नवीन उद्योगों के अवसर बढ़ेंगे व अभिलाषाएं पूर्ण होगी। आनन्ददायक वातावरण बनेगा। शुभांक-3-6-8



वृष- आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। शुभांक-1-3-5



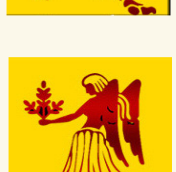
मिथुन- व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें, शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। खान-पान में सावधानी रखें। नौकरी में अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। शुभांक-2-4-7



कर्क- अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। रुपये पैसों की सुविधा नहीं मिल पाएगी। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा। शुभांक-1-5-8



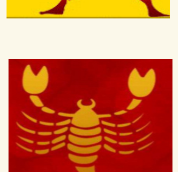
सिंह- नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम को प्राथमिकता से करें। कारोबारी काम में बाधा उभरने से मानसिक अशांति बनी रहेगी। शुभांक-3-6-8



कन्या- आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध होंगे। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते हैं। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। अच्छे समय इन्तजार करें। कर्म प्रधान विचार धारा बनाये रखें। शुभांक-6-7-9



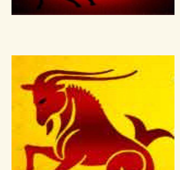
तुला- लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ होगा और पुराने मित्रों से समागम भी होगा। दैनिक सुख-सुविधा में वृद्धि होगी। शुभांक-5-7-8



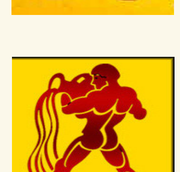
वृश्चिक- शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बना रहेगा। बचते-बचते कलह विवाद का डर बना रहेगा। शुभांक-2-5-7



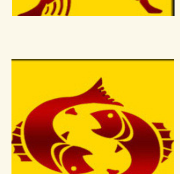
धनु- यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। कामकाज में आ रही बाधा को दूर कर लेंगे। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बन जाएगी। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम पर पैनी नजर रखिए। विरोधी नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा। शुभांक-3-6-8



मकर- मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने के प्रयास सफल होंगे। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। शुभांक-4-6-8



कुम्भ- आलसी न बनें। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। शुभांक-3-5-6



मीन- बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। शुभांक-5-6-8

न्यूयॉर्क में 'अहेड' का एक्स अकाउंट फिर से बहाल

न्यूयॉर्क, 27 अगस्त (हि.स.)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत के न्यूयॉर्क में प्रस्तावित कार्यक्रम से ठीक पहले आयोजक संगठन अहेड का सोशल मीडिया मंच एक्स पर अकाउंट सस्पेंड किया गया था, लेकिन अब यह अकाउंट फिर से बाहल हो गया है।यह जानकारी अहेड संगठन ने एक्स पर साझा करते हुए लिखा कि हम वापस आ गए हैं। अहेड संगठन ने अपने आधिकारिक हैंडल से पोस्ट कर कहा, हम वापस आ गए हैं। संगठन का आरोप है कि कुछ विरोधियों ने एक्स के एल्गोरिदम का गलत इस्तेमाल करते हुए बॉट्स के जरिए उसके अकाउंट को ब्लॉक कराने की कोशिश की। संगठन ने एक्स और उसकी सपोर्ट टीम का धन्यवाद करते हुए कहा कि अकाउंट को तुरंत बहाल किया गया और कथित बॉट्स को हटा दिया गया।

अहेड ने कहा कि अब संगठन अपने मुख्य उद्देश्य ह्यूनिवर्सल हार्मनी और यूनिवर्सल वननेस का जश्न मनाने पर वापस ध्यान केंद्रित करेगा।संघ प्रमुख मोहन भागवत का यह कार्यक्रम शनिवार, 29 अगस्त को न्यूयॉर्क के मैडिसन स्क्वायर गार्डन स्थित इंफोसिस थिएटर में यूनिवर्सल ओणम/वननेस सेलिब्रेशन के तहत आयोजित किया जाना है। संघ की स्थापना के शताब्दी वर्ष के वैश्विक जनसंपर्क अभियान के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में करीब 5 हजार भारतीय-अमेरिकियों के शामिल होने की उम्मीद है। हालांकि, अकाउंट सस्पेंड किए जाने के बाद जारी अपने बयान में अहेडसंगठन ने कहा था कि उसका मानना है कि यह निलंबन संभवतः गलती से हुआ होगा।

सरसंघचालक डॉ मोहन भागवत का यह दौरा संघ के शताब्दी वर्ष पर आयोजित वैश्विक संपर्क अभियान का हिस्सा है। अमेरिका के बाद वे कनाडा और ब्रिटेन का भी दौरा करेंगे। इसी के तहत डॉ भागवत शनिवार, 29 अगस्त को न्यूयॉर्क के प्रसिद्ध मैडिसन स्क्वेयर गार्डन में आयोजित ह्यूयूनिवर्सल वननेस कार्यक्रम में शामिल होंगे। आयोजकों के अनुसार इस कार्यक्रम में लगभग पांच हजार भारतीय मूल के नागरिकों के शामिल होने की उम्मीद है। हालांकि, इस कार्यक्रम को लेकर अमेरिका में राजनीतिक विरोध और प्रदर्शन शुरू हो गए हैं। सरसंघचालक के अमेरिका दौरे को लेकर न्यूयॉर्क के मेयर जोहरान ममदानी ने आपत्ति जताई। एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में उनसे पूछा गया कि क्या मैडिसन स्क्वेयर गार्डन में प्रस्तावित कार्यक्रम को रद्द कर दिया जाना चाहिए। इसपर उन्होंने कहा कि वह इस रैली का समर्थन नहीं करते हैं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि किसी निजी कार्यक्रम को रद्द करने का अधिकार शहर प्रशासन के पास है या नहीं, इसकी उन्हें जानकारी नहीं है। इस कार्यक्रम के विरोध में हिंदूज फॉर ह्यूमन राइट्स, इंडियन अमेरिकन मुस्लिम काउंसिल और इंटरफेथ सेंटर ऑफ न्यूयॉर्क सहित भारत और हिंदू संस्कृति के विरोध में सक्रिय संगठनों ने न्यूयॉर्क सिटी हॉल के बाहर प्रदर्शन किया।

ब्रीफ न्यूज

मणिपुर के कांगपोकपी में फिर भड़की हिंसा, 4 लोगों की मौत

इम्फाल, आरएनएन। मणिपुर के कांगपोकपी में गुरुवार की सुबह एक बार फिर हिंसा भड़क उठी। इम्फाल-तामेंगलॉन्ग रोड पर स्थित गांवों के पास अज्ञात शस्त्रधारियों ने अचानक हमला कर दिया। इस अंधाधुंध गोलीबारी में नागा समुदाय के चार आम नागरिकों की मौत हो गई, जबकि एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल है। हिंसा के बाद से एक ग्रामीण लापता भी बताया जा रहा है। जानकारी के मुताबिक, ये घटना गुरुवार सुबह करीब 8:30 बजे मकुई आशांग और थानम्बा नागा गांवों के बीच घटी। गोलीबारी में जान गंवाने वाले चारों लोग नागा समुदाय से जुड़े सामाजिक और शैक्षणिक चेहरे थे।

यूपी में जेवर के साथ 30 किलो शक्कर भी उठा ले गए चोर

सीतापुर, आरएनएन। यूपी के सीतापुर में चोरी की एक ऐसी वारदात सामने आई है, जिसने लोगों को हैरान कर दिया है। इमलिया सुल्तानपुर थाना क्षेत्र के उदयपुर गांव के मजरा कोरिया में चोरों ने एक घर में घुसकर कीमती सामान के साथ 30 किलो शक्कर भी चोरी कर ली।गांव के रहने वाले चंद्रपाल के मुताबिक, दो दिन पहले रात में उनका परिवार घर के अंदर सो रहा था। इसी दौरान अज्ञात चोर मकान में दाखिल हुए। बदमाशों ने सबसे पहले घर सोने-चांदी के जवरों पर हाथ साफ कर दिया। इसके बाद घर में रखी करीब 30 किलो शक्कर भी अपने साथ ले गए।

ममता को हाईकोर्ट से झटका, नहीं खुलेंगे टीएमसी के फ्रीज बैंक खाते



कोलकाता, आरएनएन। ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस को फ्रीज बैंक खातों के मामले में कलकत्ता हाईकोर्ट से फिलहाल राहत नहीं मिली है। पार्टी ने चार बैंक खातों को फिर से इस्तेमाल करने की इजाजत मांगी थी, लेकिन अदालत ने अंतरिम राहत देने से इनकार कर दिया। कोर्ट ने सभी पक्षों को अगले पांच हफ्तों में अपना जवाब दाखिल करने को कहा है। इसके बाद मामले की सुनवाई दुर्गा पूजा की छुट्टियों के दो हफ्ते बाद होगी।

कानपुर में प्रशिक्षण के दौरान विमान दुर्घटनाग्रस्त, 2 की मौत

कानपुर, आरएनएन। यूपी में कानपुर के नवाबगंज क्षेत्र में गंगा बैराज के पास गुरुवार दोपहर प्रशिक्षण उड़ान के दौरान ट्विन इंजन विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे में विमान में सवार प्रशिक्षु पायलट और प्रशिक्षक दोनों की मृत्यु हो गई। हादसा इतना भीषण था कि विमान के गिरते ही उसके परखच्चे उड़ गए। हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंच गए तथा राहत एवं बचाव कार्य शुरू कराया गया। पुलिस आयुक्त रघुबीर लाल ने बताया कि इस हादसे में विमान के इंस्ट्रक्टर सचिन भाटिया और प्रशिक्षण ले रहे अभिषेक पुजारी की मौके पर ही मौत हो गई। सचिन गुजरात के निवासी थे जबकि अभिषेक पुजारी कर्नाटक के रहने वाले हैं।

दिल्ली पुलिस ने कहा- दंगों के मास्टरमाइंड थे शरजील व उमर

नई दिल्ली, आरएनएन। दिल्ली पुलिस ने 2020 के दिल्ली दंगों की साजिश के मामले में आरोपी उमर खालिद और शरजील इमाम को मास्टरमाइंड बताया है। अदालत में पुलिस ने अपना जवाब दाखिल करते हुए उमर खालिद और शरजील इमाम की जमानत याचिकाओं का भी विरोध किया। पिछली सुनवाई (31 जुलाई) में दिल्ली हाईकोर्ट ने इस मामले में दिल्ली पुलिस ने जवाब दाखिल करने को कहा था। गुरुवार को सुनवाई के दौरान दिल्ली पुलिस ने हाईकोर्ट में कहा कि इमाम और खालिद दिल्ली दंगों के मास्टरमाइंड थे। पुलिस के पास इनके खिलाफ दंगों की योजना बनाने, लोगों को जुटाने और दंगों में रणनीतिक भूमिका निभाने से जुड़े अहम सबूत हैं। दिल्ली पुलिस ने यह भी कहा कि दोनों की नई जमानत याचिकाएं अपने आप में ही गैरकानूनी और कोर्ट को गुमराह करने वाली हैं।

केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू के बयान से गरमाई सियासत

परिसीमन बिल पर विशेष सत्र लाएगी केंद्र सरकार

कांग्रेस हुई सतर्क, मल्लिकार्जुन खड़गे ने पीएम मोदी को चिट्ठी लिखकर स्थिति स्पष्ट करने को कहा

● **नई दिल्ली/ : (एजेंसी)**





केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू के द्वारा एक टीवी इंटरव्यू के दौरान परिसीमन बिल को लेकर दिए गए बयान ने देश की राजनीति को गरमा दिया है। उनके बयान को राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने गंभीरता से लिया है। उन्होंने प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखकर इस मुद्दे पर स्थिति स्पष्ट करने को कहा है। साथ ही उन्होंने एक सर्वदलीय बैठक बुलाने की भी मांग की है। अपनी चिट्ठी में खड़गे ने मांग की है कि लोकसभा की मौजूदा 543 सीटों की संख्या और राज्यों के आधार पर सीटों के आवंटन को अगले 25 वर्षों के लिए फ्रीज कर दिया जाए।

इसके अलावा मल्लिकार्जुन खड़गे ने 2029 के अगले लोकसभा चुनावों से ही महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण तुरंत प्रभाव से लागू करने की मांग की है। पीएम मोदी के नाम लिखी इस चिट्ठी में खड़गे ने कहा है कि सरकार परिसीमन को लेकर जो भी प्रस्ताव तैयार कर रही है उस पर चर्चा के लिए सभी राजनीतिक दलों और राज्य सरकारों की एक सर्वदलीय बैठक बुलाई जाए। खड़गे का कहना है कि प्रस्तावित मसौदे को संसद में लाने से पहले सभी विपक्षी दलों को उसका अध्ययन करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाए। खड़गे ने अपने पत्र में 16 जुलाई 2026 को लिखे गए अपने पिछले पत्र का हवाला दिया, जिसमें उन्होंने सर्वदलीय बैठक की मांग की थी।

उन्होंने कहा कि केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री द्वारा हाल ही में दिए गए एक टीवी इंटरव्यू के बाद यह साफ होता जा रहा है कि सरकार परिसीमन से जुड़ा नया विधेयक लाने के लिए संसद का विशेष सत्र बुलाने पर विचार कर रही है। खड़गे के अनुसार, शायद यही कारण है कि संसद के मॉनसून सत्र का सत्रावसान करने में लगातार देरी की जा रही है।

क्या है बहुमत का गणित?

आपको बता दें कि 17 अप्रैल 2026 को बजट सत्र के दौरान मोदी सरकार द्वारा लाया गया 131वां संविधान संशोधन विधेयक लोकसभा में अपेक्षित दो-तिहाई बहुमत हासिल नहीं कर सका था। 528 सांसदों में से 298 ने इसके पक्ष में और 230 ने इसके खिलाफ मतदान किया था, जिससे यह विधेयक गिर गया था। हालांकि, पहले की तुलना में संसद में एनडीए की स्थिति मजबूत हुई है। सबसे पहले पंजाब से आने वाले आम आदमी पार्टी के राज्यसभा के सात सांसदों ने भाजपा का दामन थाम लिया था। इसके बाद, पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस को मिली करारी हार के बाद लोकसभा के 20 सांसदों ने अपना अलग गुट बना लिया। सरकार को डीएमके और शरद पवार की पार्टी से भी इस मुद्दे समर्थन मिलने की उम्मीद है।

होटल-रिसॉर्ट की लीज और सरकारी नौकरी का झांसा देकर की 39 लाख रुपए की ठगी

महिला ने स्वयं को ट्रेनी आईएएस और एमपीटी की एडिशनल डायरेक्टर बताकर बनाया भरोसा,भाई समेत 4 लोगों पर केस

● **भोपाल / (हि.स.)**



सरकारी नौकरी और मध्यप्रदेश पर्यटन के होटल-रिसॉर्ट की लीज दिलाने का झांसा देकर 39 लाख रुपए से अधिक की ठगी का मामला सामने आया है। बागसेवनिया पुलिस ने जांच के बाद एक महिला, उसके भाई समेत चार लोगों के खिलाफ धोखाधड़ी और अन्य गंभीर धाराओं में प्रकरण दर्ज किया है।

आरोप है कि महिला ने खुद को ट्रेनी आईएएस अधिकारी बताकर पीड़ित और उसके परिचितों के बीच अपनी ऐसी छवि बनाई कि वे उसके झांसे में आ गए। पुलिस के अनुसार, बालाघाट के खैरलांजी निवासी रोहित लिल्हारे (29) ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि बागमुगलिया निवासी तृप्ति सिंह ने खुद को ट्रेनी आईएएस अधिकारी और मप्र पर्यटन विभाग में एडिशनल डायरेक्टर बताया था। बातचीत के दौरान उसने एमपीटी के होटल और रिसॉर्ट लीज पर दिलाने, सरकारी नौकरी लगवाने का दावा किया। तृप्ति ने अकेले ही अपना प्रभाव नहीं बनाया। उसके भाई सुधांशु सिंह और प्रखर सिंह समेत अन्य लोगों ने भी उसके अधिकारी होने की बात कही। इससे रोहित और उसके परिचितों को तृप्ति पर भरोसा हो गया। इसके बाद होटल-रिसॉर्ट की लीज दिलाने के नाम पर अलग-अलग समय में 35.30 लाख रुपए और नौकरी लगवाने के लिए 3.87 लाख रुपए लिए गए।

रकम लेने के बाद जब काफी समय तक न तो लीज का काम हुआ और न ही सरकारी नौकरी लगी तो रोहित ने अपने पैसे वापस मांगे। आरोपियों ने पूरी रकम लौटाने के बजाय केवल एक लाख रुपए ऑनलाइन वापस किए। शेष 38.17 लाख रुपए नहीं लौटाए गए। इसके बाद रोहित ने पुलिस से शिकायत की। पुलिस ने शिकायत की जांच के दौरान लेन-देन और आरोपों से जुड़े तथ्यों की पड़ताल की। प्रारंभिक जांच के बाद पुलिस ने तृप्ति सिंह, उसके भाई सुधांशु सिंह और दो अन्य लोगों के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर लिया है।

बेंगलुरु के नेशनल लॉ स्कूल ने रद्द किया दीक्षांत समारोह

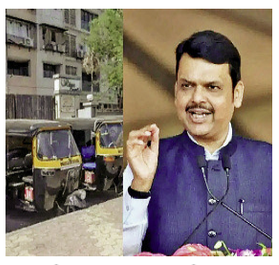
नई दिल्ली, आरएनएन। बेंगलुरु की नेशनल लॉ स्कूल ऑफ़ इंडिया यूनिवर्सिटी ने 12 सितंबर को होने वाला अपना 34वां सालाना दीक्षांत समारोह रद्द कर दिया है। समारोह में भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और बार काउंसिल ऑफ इंडिया के चेयरमैन मनन कुमार मिश्रा के शामिल होने के प्रस्ताव का छात्रों द्वारा विरोध किए जाने के बीच, यूनिवर्सिटी ने अनिवार्य परिस्थितियों का हवाला देते हुए यह फैसला लिया। यूनिवर्सिटी ने 27 अगस्त को जारी एक आधिकारिक नोटिस के जरिए डिग्री पाने वाले छात्रों को इस फैसले की जानकारी दी।

बतौर चीफ गेस्ट थे सीजेआई सूर्यकांत

यूनिवर्सिटी ने कहा कि मिलकर की गई तमाम कोशिशों के बावजूद, वह तय कार्यक्रम के अनुसार सालाना दीक्षांत समारोह आयोजित नहीं कर पाएगी। ग्रेजुएट होने वाले छात्रों को प्रस्तावित तारीख के बारे में पहले ही 3 अगस्त को बता दिया गया था। यूनिवर्सिटी के अनुसार, गवर्निंग बॉडीज़ से ज़रूरी मंज़ूरी मिलने पर सभी ग्रेजुएट होने वाले स्टूडेंट्स को उनकी डिग्रियां इन एब्सेंशिया (यानी उनके वहां मौजूद न होने पर भी) दी जाएंगी।

महाराष्ट्र में गैर-मराठी टैक्सी चालकों को राहत

● **मुंबई/ आरएनएन**



महाराष्ट्र सरकार ने ऑटो, टैक्सी और कैब ड्राइवरों के लिए मराठी भाषा की अनिवार्यता की समय सीमा को एक साल के लिए बढ़ा दिया है। सीएम देवेंद्र फडणवीस ने ऐलान किया कि इस अवधि के दौरान चालकों के खिलाफ भाषा को लेकर कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी। ऑटो और टैक्सी यूनियनों के साथ बैठक के बाद मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा, ऑटो और टैक्सी ड्राइवर्स एसोसिएशन की गुरुवार को मीटिंग हुई है। उन्होंने ऑटो और टैक्सी ड्राइवरों के लिए मराठी को जरूरी बनाने के कदम का स्वागत किया है। इससे पहले महाराष्ट्र सीएम ने कहा था कि सरकार का मकसद हिंदी भाषी लोगों को मराठी भाषा का विद्वान या विशेषज्ञ नहीं बनाना नहीं है। सरकार बस उन्हें केवल व्यावहारिक ज्ञान के लिए कह रही है। सीएम ने ये भी कहा था कि हमारी सरकार भाषा के आधार पर किसी के साथ अन्याय नहीं होने देगी।

सीएम फडणवीस ने लाइसेंस रद्द करने के फैसले पर लगाई रोक

जेपी नड्डा हर्ष दुबे की टीम के सदस्यों से मिले

आंदोलनकारी जाति आधारित आरक्षण व्यवस्था में बदलाव की कर रहे हैं मांग

● **नई दिल्ली/ (हि.स.)।**



दिल्ली के जंतर-मंतर पर आरक्षण सुधार की मांग को लेकर हुए आंदोलन के बाद अब छात्रों और केंद्र सरकार के बीच बातचीत का दौर शुरू हो गया है। केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने आंदोलन से जुड़े प्रतिनिधियों से मुलाकात की और इसकी जानकारी सोशल मीडिया के जरिए साझा की।

जेपी नड्डा ने बताया कि 21 अगस्त को जंतर-मंतर पर हुए आंदोलन के बाद तय कार्यक्रम के अनुसार टीम के सदस्य हर्ष दुबे, रण बहादुर सिंह चौहान और मृत्युंजय पाठक के साथ सौहार्दपूर्ण वार्ता हुई। उन्होंने कहा कि यह संवाद आगे भी जारी रहेगा और जल्द ही फिर बैठक होगी। जंतर-मंतर पर जुटे प्रदर्शनकारी जाति आधारित आरक्षण व्यवस्था में बदलाव की मांग कर रहे हैं। उनका कहना है कि आरक्षण का आधार आर्थिक स्थिति को बनाया जाना चाहिए। इसी मांग को लेकर बड़ी संख्या में लोग दिल्ली में एकत्र हुए थे। जेपी नड्डा से बातचीत से पहले आंदोलन से जुड़े छात्र प्रतिनिधियों ने यूपी के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक से भी मुलाकात की थी।

बिहार सरकार ने मानी छात्रों की मांग

पटना, आरएनएन । बिहार शिक्षक भर्ती परीक्षा (टीआरई 4) को लेकर सम्राट चौधरी सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। सरकार ने अभ्यर्थियों की मांगों को मानते हुए ऐलान किया है कि टीआरई 4 परीक्षा अब दो अलग-अलग चरणों के बजाय एक ही फेज में आयोजित की जाएगी। सरकार और छात्र प्रतिनिधियों के बीच हुई सफल वार्ता के बाद पटना के गर्दनीबाग में चल रहा अनिश्चितकालीन धरना भी खत्म हो गया है।

एक ही फेज में होगी शिक्षक भर्ती परीक्षा, धरना भी खत्म

अभ्यर्थी 18 अगस्त से गर्दनीबाग धरना स्थल पर परीक्षा को एक ही चरण में कराने और पारदर्शिता की मांग को लेकर डटे हुए थे। आंदोलन के बढ़ते दबाव के बीच राज्य सरकार की ओर से छात्र प्रतिनिधियों को बातचीत के लिए न्योता दिया गया था। सीएम सम्राट चौधरी के साथ हुई इस उच्चस्तरीय बैठक में छात्रों ने अपनी परेशानियां सामने रखीं। सरकार ने छात्रों के तर्कों को जायज मानते हुए एकल परीक्षा कराने की मांग पर अपनी सहमति दे दी। प्रमुख मांगों पर सहमति बनने के बाद छात्र संगठनों ने अपना विरोध प्रदर्शन खत्म करने का ऐलान किया और सरकार के फैसले का स्वागत किया।

मुंबई में 10वीं मंजिल से कूदी महिला, पेड़ पर अटकी



मुंबई, आरएनएन। फायर ब्रिगेड ने एक 26 साल की महिला को बड़ी मुश्किल से बचाया। मुंबई की इस महिला ने उपनगरीय भांडुप इलाके की एक बिल्डिंग की 10वीं मंज़िल से छलांग लगा दी थी। कूदने के बाद वह जमीन पर गिरने के बजाय पास के एक पेड़ पर जा गिरी। वह पेड़ से लटकने लगी। उसके चीखने की आवाज सुनकर आसपास के लोग और सोसायटी में रहनेवाले लोग जमा हो गए। फायर ब्रिगेड को सूचना दी गई। घंटों की मशक्कत के बाद दमकल कर्मियों ने महिला को रेस्क्यू किया। उसकी जान बच गई, हालांकि महिला के पांव में चोट आई है। महिला की शादी 4 महीने पहले ही हुई थी। महिला का नाम प्रतीक्षा हिवराले है। पुलिस ने बताया कि महिला लेक रोड पर स्थित सनशाइन बिल्डिंग में रहती है।

दमकल कर्मियों ने रेस्क्यू कर बचाया

फैसला अलगाव को अलग-थलग करके नहीं देखा जा सकता, यह एक लंबे वैवाहिक इतिहास का हिस्सा

पति-पत्नी का एक ही घर में अलग रहना क्रूरता नहीं

● **नई दिल्ली / (एजेंसी)**



कर्नाटक हाईकोर्ट ने हाल ही में यह फैसला सुनाया कि एक ही घर में अलग-अलग कमरों में रहना मात्र वैवाहिक क्रूरता नहीं है। जस्टिस डीके सिंह और एच शांति भूषण की पीठ ने कहा कि इस तरह के अलगाव का महत्व तब बढ़ जाता है जब इसे दंपति के व्यापक वैवाहिक इतिहास के संदर्भ में देखा जाता है।

अदालत ने गौर किया कि इस मामले में पति ने स्वयं स्वीकार किया था कि दोनों पक्ष काफी समय से अलग-अलग कमरों में रह रहे थे। न्यायालय ने कहा कि केवल इसी आधार पर ऐसी व्यवस्था को क्रूरता नहीं माना जा सकता। केवल इस तथ्य से कि पति-पत्नी अलग-अलग कमरों में रहते हैं। इसके अलावा और कुछ नहीं, क्रूरता साबित करने का औचित्य सिद्ध नहीं होता। न्यायालय ने माना कि इस अलगाव को अलग-थलग करके नहीं देखा जा सकता और यह एक लंबे वैवाहिक इतिहास का हिस्सा था जिसमें बार-बार होने वाले विवाद, दुर्व्यवहार के आरोप, अलगाव, पहले की वैवाहिक कार्यवाही और अंततः रिश्ते की विफलता शामिल थी। अदालत ने यह टिप्पणी एक व्यक्ति द्वारा पारिवारिक अदालत के उस फैसले के खिलाफ दायर अपील को खारिज करते हुए की।

निरंतर गलत आचरण को सहन करना मानसिक पीड़ा

पीठ ने कहा कि किसी जीवनसाथी से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह अनिश्चित काल तक ऐसे आचरण को सहन करे जो निरंतर मानसिक पीड़ा का कारण बनता है और साथ, विश्वास और वैवाहिक सुरक्षा के मूलभूत तत्वों को नष्ट कर देता है। इसमें यह माना गया कि इन परिस्थितियों का संचयी प्रभाव हिंदू विवाह अधिनियम की धारा 13(1)(आईए) के अर्थ में मानसिक क्रूरता स्थापित करने के लिए पर्याप्त है। न्यायालय ने पारिवारिक न्यायालय के उस निर्देश को भी बरकरार रखा जिसमें पति को स्थायी गुजारा भत्ता के रूप में प्रति माह 25,000 रुपये का भुगतान करने का आदेश दिया गया था। न्यायालय ने कहा कि पत्नी का रोजगार और आय अपने आप में उसे स्थायी गुजारा भत्ता प्राप्त करने से वंचित नहीं करते हैं।

हर मामले में वैवाहिक क्रूरता नहीं माना जाता

अदालत ने पति के इस तर्क को खारिज कर दिया कि पत्नी की आईपीसी की धारा 498-ए के तहत पहले दर्ज की गई शिकायत, जिसमें उसे बरी कर दिया गया था। उसको स्वयं वैवाहिक क्रूरता माना जाना चाहिए। पीठ ने फैसला सुनाया कि एक पति या पत्नी द्वारा दूसरे के खिलाफ आपराधिक शिकायत दर्ज कराना, हर मामले में वैवाहिक क्रूरता नहीं माना जाता है। इसमें आगे यह भी कहा गया कि आपराधिक कार्यवाही में बरी होने से अपने आप यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि शिकायत झूठी या दुर्भावनापूर्ण थी। न्यायालय ने पाया कि शिकायत लंबे समय से चले आ रहे वैवाहिक कलह की पृष्ठभूमि में दर्ज की गई थी, जिसके बाद परिवार के सदस्यों ने हस्तक्षेप किया और दोनों पक्षों ने अपने वैवाहिक जीवन को पुनः आरंभ करने की कोशिश की। अंततः यह सुलह असफल रही। न्यायालय ने कहा कि इन परिस्थितियों को अलग-थलग घटनाएं नहीं माना जा सकता है और इनका महत्व वैवाहिक संबंधों पर इनके निरंतर और संचयी प्रभाव में निहित है।

अगर सच में पितृसत्ता खत्म करना चाहते हैं तो वंदे मातरम् पूरा गाइए

भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज की राहुल गांधी को चुनौती

● **नई दिल्ली/**



राहुल गांधी के स्मैश द पैट्रियार्की यानी पितृसत्ता को खत्म करने वाले बयान पर बीजेपी सांसद बांसुरी स्वराज ने राहुल गांधी को चुनौती देते हुए कहा कि अगर वह सच में पितृसत्ता खत्म करना चाहते हैं तो पूरा वंदे मातरम गाकर दिखाएं।

उन्होंने कहा कि मुझे क्रिसमस कैरल गाने में भी कोई दिक्कत नहीं, पूरा वंदे मातरम गाने में भी वह सहज हैं और वह शिव तांडव का पाठ भी कर सकती हैं। बांसुरी ने आगे कहा कि राहुल गांधी को भी वंदे मातरम का पूरा गायन करके दिखाना चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि संसद ने वंदे मातरम को जन गण मन के समान सम्मान देने का फैसला किया है, लेकिन कांग्रेस इसे नहीं मानती। बांसुरी ने कांग्रेस पर मनुस्मृति की सोच की बात करने के बावजूद जिहादी माइंडसेट के सामने झुकने का आरोप भी लगाया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस मादरे वतन और भारत माता को देवी के रूप में दिखाने वाले वंदे मातरम के हिस्से को काटती है।

वहीं सुप्रिया श्रीनेत ने बांसुरी का वीडियो एक्स पर शेयर कर इसी बात को लेकर सवाल उठाया। उन्होंने लिखा, यू वांट टू स्मैश पैटियार्की - सिंग वंदे मातरम यानी अगर पितृसत्ता खत्म करनी है तो वंदे मातरम गाइए। सुप्रिया ने आगे बांसुरी के बयान को पीक आइडियोसी बताया। उनका कहना था कि ऐसी बात महिलाओं के सामने मौजूद असली समस्याओं को कमजोर करती है। उन्होंने कहा कि महिलाएं हर दिन जिस पुरुषवादी सोच और भेदभाव का सामना करती हैं, उस गंभीर मुद्दे को इस तरह की बातों से छोटा किया जाता है।

संपादकीय

समुद्र भी तपने लगा, अब किसे बचाएगा पानी?

उमस भरी गर्मी में समुद्र किनारे जाकर पानी में उतरना कभी राहत का अनुभव देता था, लेकिन जलवायु परिवर्तन के दौर में समुद्र का यही ठंडा पानी अब एक नई चिंता का कारण बनता जा रहा है। यूरोप से लेकर एशिया और ऑस्ट्रेलिया तक समुद्र के कई हिस्सों में तापमान सामान्य से लगातार अधिक दर्ज किया जा रहा है। वैज्ञानिक इसे मरीन हीटवेव यानी समुद्री गर्मी की लहर कहते हैं। यह केवल समुद्र की सतह के गर्म होने की कहानी नहीं है, बल्कि इसके भीतर समुद्री पारिस्थितिकी, मछलियों, प्रवाल भित्तियों, तटीय अर्थव्यवस्था और अंततः इंसान की थाली तक असर पहुंचाने वाला संकट छिपा है।

मरीन हीटवेव तब मानी जाती है, जब किसी समुद्री क्षेत्र का तापमान उस स्थान और मौसम के सामान्य स्तर से असामान्य रूप से अधिक हो और यह स्थिति कम से कम पांच दिन तक बनी रहे। जमीन पर आने वाली हीटवेव की तरह समुद्री गर्मी भी अचानक पैदा हो सकती है, लेकिन कई बार यह हफ्तों या महीनों तक बनी रहती है। इसकी खास चिंता इसलिए है क्योंकि समुद्र वायुमंडल में मौजूद अतिरिक्त गर्मी का बहुत बड़ा हिस्सा सोखता है। वैज्ञानिक आकलनों के अनुसार, मानव गतिविधियों से पैदा हुई अतिरिक्त गर्मी का 90 प्रतिशत से अधिक हिस्सा समुद्र ने अपने भीतर समाहित किया है। समुद्र ने दशकों तक धरती को अत्यधिक गर्म होने से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन अब उसी क्षमता पर दबाव बढ़ रहा है। समुद्री तापमान बढ़ने के पीछे केवल ग्रीनहाउस गैसों से पैदा हुई दीर्घकालिक गर्मी जिम्मेदार नहीं है। हवा की गति में कमी, बादलों की स्थिति, तेज धूप, समुद्री धाराओं में बदलाव और अल नीनो जैसी प्राकृतिक घटनाएं भी किसी क्षेत्र में समुद्री गर्मी को अचानक बढ़ा सकती हैं। जब ये प्राकृतिक परिस्थितियां मानव-जनित जलवायु परिवर्तन से पैदा हुई गर्म पृष्ठभूमि के साथ मिलती हैं तो मरीन हीटवेव की तीव्रता और अवधि दोनों बढ़ सकती हैं।

ब्रिटेन और उत्तर अटलांटिक के समुद्री क्षेत्रों में हाल के वर्षों में ऐसी घटनाओं ने वैज्ञानिकों की चिंता बढ़ाई है। जून 2023 में ब्रिटेन के आसपास समुद्री तापमान में असाधारण वृद्धि दर्ज की गई थी। कई क्षेत्रों में तापमान सामान्य से कई डिग्री अधिक पहुंच गया था। इसके बाद भी समुद्री गर्मी की घटनाएं सामने आती रहीं। समस्या यह है कि समुद्र की गर्मी का पूरा प्रभाव तुरंत दिखाई नहीं देता। जमीन पर तापमान बढ़ने का असर कुछ घंटों या दिनों में महसूस हो सकता है, लेकिन समुद्र में तापमान परिवर्तन से पैदा होने वाले पारिस्थितिक बदलाव कई महीनों या वर्षों तक सामने आते रहते हैं।

समुद्री जीवों पर इसका सबसे गंभीर प्रभाव पड़ता है। सूक्ष्म प्लैंकटन से लेकर व्हेल तक पूरी समुद्री खाद्य शृंखला तापमान के प्रति संवेदनशील है। समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र का आधार माने जाने वाले प्लैंकटन की प्रजातियों और उनकी संख्या में बदलाव होने पर उसका असर उन मछलियों तक पहुंचता है जो इन्हें भोजन के रूप में इस्तेमाल करती हैं। इसके बाद यही बदलाव समुद्री पक्षियों, बड़े शिकारी जीवों और अंततः उन समुदायों तक पहुंच सकता है जो मछली पकड़ने पर निर्भर हैं। केल्प यानी समुद्र के भीतर बनने वाले विशाल शैवाल के जंगल इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। ये जंगल छोटी मछलियों और दूसरे समुद्री जीवों को भोजन और आश्रय देते हैं। तापमान बढ़ने पर कई क्षेत्रों में केल्प की वृद्धि प्रभावित हो सकती है और बड़े क्षेत्र में इसके जंगल खत्म हो सकते हैं। इसी तरह समुद्री घास के मैदान भी गर्म पानी के प्रति संवेदनशील हैं। ये केवल समुद्री जीवों का आवास नहीं हैं, बल्कि कार्बन को अवशोषित करने और तटीय क्षेत्रों को स्थिर रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सबसे चिंताजनक प्रभाव प्रवाल भित्तियों पर दिखाई देता है। कोरल रीफ को समुद्र का वर्षावन कहा जाता है क्योंकि इनमें असाधारण जैव विविधता पाई जाती है। जब समुद्र का तापमान सामान्य सीमा से अधिक बढ़ता है तो प्रवाल अपने ऊतकों में रहने वाले सूक्ष्म शैवालों को बाहर निकाल देते हैं। इसके कारण वे सफेद दिखाई देने लगते हैं, जिसे कोरल ब्लीचिंग कहा जाता है।

यदि गर्मी लंबे समय तक बनी रहे तो प्रवाल मर सकते हैं और उनके साथ उन पर निर्भर पूरा पारिस्थितिकी तंत्र भी कमजोर पड़ सकता है।

ऑस्ट्रेलिया का ग्रेट बैरियर रीफ इस खतरे का बड़ा उदाहरण है। वहां पिछले वर्षों में कई बड़े पैमाने पर कोरल ब्लीचिंग की घटनाएं दर्ज की गई हैं। पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में 2011 की समुद्री हीटवेव ने भी सैकड़ों किलोमीटर के क्षेत्र में केल्प जंगलों को नुकसान पहुंचाया था और अबालोन, झींगा तथा केकड़े से जुड़े उद्योगों पर असर पड़ा था। इससे पता चलता है कि मरीन हीटवेव का प्रभाव केवल पर्यावरण तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सीधे स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार पर भी पड़ता है। समुद्र के गर्म होने के साथ समुद्री जीवों के भौगोलिक ठिकाने भी बदल रहे हैं। ठंडे पानी में रहने वाली कई मछलियां अधिक ठंडे अक्षांशों की ओर बढ़ने लगती हैं।

कलाई पर बँधा विश्वास

डॉ कीर्ति शर्मा

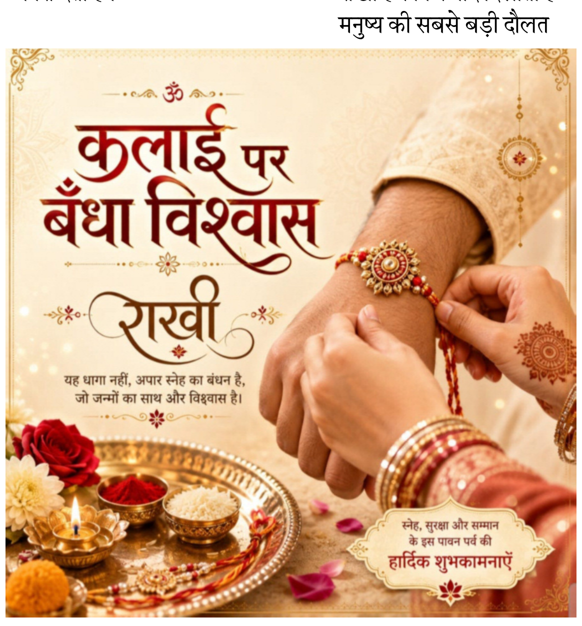
राखी केवल
रेशम का धागा नहीं,
यह उस विश्वास की गाँठ है
जो समय की आँधियों में भी
ढीली नहीं पड़ती।

बहन जब भाई की कलाई पर
राखी बाँधती है,
तो मानो अपने बचपन के
सारे आँगन,
सारी शरारतें,
सारी शिकायतें
एक छोटे-से धागे में
पिरो देती है।

एक-दूसरे के सुख-दुःख में
चट्टान-सा खड़े रहने की
अनकही प्रतिज्ञा है।

समय बदलता है,
घर बदलते हैं,
दूरियाँ बढ़ती हैं,
पर कुछ रिश्ते
दूरी से छोटे नहीं होते
वे स्मृतियों की धूप में
और उजले हो जाते हैं।

आज जब संबंध
सुविधाओं में तौले जाते हैं,
राखी हमें फिर याद दिलाती है
मनुष्य की सबसे बड़ी दौलत



उसके अपने लोग हैं।

वह धागा कहता है
ह्लतुम जहाँ भी रहो,
मेरी प्रार्थना
तुम्हारे साथ चलेगी ह्व

और भाई के मौन में
एक संकल्प जन्म लेता है
ह्लतुम्हारी आँखों में
कभी भय न उतरने दूँगा,
तुम्हारे सम्मान पर
कभी आँच न आने दूँगा ह्व

राखी का अर्थ
केवल रक्षा नहीं,
यह रिश्तों की मयार्दा है,
स्नेह की जिम्मेदारी है,

आओ, इस राखी
केवल कलाई पर धागा न बाँधें,
मन में भी एक गाँठ बाँधें
विश्वास की,
सम्मान की,
साथ निभाने की।

क्योंकि
राखी का उत्सव
एक दिन का पर्व नहीं,
यह जीवन भर
एक-दूसरे के लिए
दीप बने रहने का
पवित्र संकल्प है।

रिश्तों की पवित्रता और सुरक्षा के संकल्प का पर्व रक्षाबंधन

योगेश कुमार गोयल

रक्षाबंधन पर्व रक्षा के तात्पर्य से बांधने वाला ऐसा सूत्र है, जिसमें बहनें अपने भाइयों के माथे पर तिलक लगाकर जीवन के हर संघर्ष तथा मोर्चे पर उनके सफल होने तथा निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहने की ईश्वर से प्रार्थना करती हैं तथा उनके सुखद जीवन के लिए मंगलकामना करती हैं। भाई इस कच्चे धागे के बदले अपनी बहनों की हर प्रकार की विपत्ति से रक्षा करने का वचन देते हैं और उनके शील एवं मयार्दा की रक्षा करने का संकल्प लेते हैं। वास्तव में भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक पर्व रक्षाबंधन स्नेह, सौहार्द एवं सद्भावना का एक ऐसा पर्व है, जो उन्हें अटूट एकता के सूत्र में बांध देता है।

श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाए जाने वाले रक्षाबंधन पर्व की भारतीय समाज और संस्कृति में कितनी महत्ता है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि बहनों के हाथ अपने भाइयों की कलाईयों पर राखियां बांधने के लिए मचल उठते हैं और कलाई पर बांधे जाने वाले मामूली से दिखने वाले इन्हीं कच्चे धागों से पक्के रिश्ते बनते हैं। पवित्रता तथा स्नेह का सूचक यह पर्व भाई-बहन को पवित्र स्नेह के बंधन में बांधने का पवित्र एवं यादगार दिवस है। इस पर्व को भारत के कई हिस्सों में श्रावणी के नाम से जाना जाता है। पश्चिम बंगाल में ह्यगुरु महापूर्णिमाह्ल, दक्षिण भारत में ह्यनारियल पूर्णिमाह्ल तथा नेपाल में इसे जनेऊ पूर्णिमा के नाम से जाना जाता है।

रक्षाबंधन मनाए जाने के संबंध में अनेक पौराणिक एवं ऐतिहासिक प्रसंगों का उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि जब देवराज इन्द्र बार-बार राक्षसों से परास्त होते रहे और हर बार राक्षसों के हाथों देवताओं की हार से निराश हो गए तो इन्द्राणी ने बहुत कठिन तपस्या की और अपने तपोबल से एक रक्षासूत्र तैयार किया। यह रक्षासूत्र इन्द्राणी ने देवराज इन्द्र की कलाई पर बांध दिया। तपोबल से युक्त इस रक्षासूत्र के प्रभाव से देवराज इन्द्र राक्षसों को परास्त करने में सफल हुए। तभी से रक्षाबंधन पर्व की शुरूआत हुई। एक उल्लेख यह भी मिलता है कि जब भगवान विष्णु ने वामन अवतार लिया था, तब उन्होंने एक ब्राह्मण वेश धारण कर अपनी दानशील प्रवृत्ति के लिए तीनों लोकों में प्रसिद्ध राजा बलि से तीन पग भूमि दान में मांगी और बलि द्वारा उनकी मांग स्वीकार कर लिए जाने पर भगवान वामन ने अपने पग से सम्पूर्ण पृथ्वी को नापते हुए बलि को पाताल लोक भेज दिया। कहा जाता है कि उसी की याद में रक्षाबंधन पर्व मनाया गया।



रक्षाबंधन पर्व से कई ऐतिहासिक प्रसंग भी जुड़े हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से इस पर्व की शुरूआत मध्यकालीन युग से मानी जाती है। भारतीय इतिहास ऐसे प्रसंगों से भरा पड़ा है, जब राजपूत योद्धा अपनी जान की बाजी लगाकर युद्ध के मैदान में जाते थे तो उनके देश की बेटियां उन वीर सैनिकों की आरती उतारकर उनकी कलाई पर रक्षा सूत्र बांधा करती थी तथा वीर रस के गीत गाकर उनकी हौसला अफजाई करते हुए उनसे राष्ट्र की रक्षा का प्रण भी कराती थी। कहा जाता है कि उस जमाने में अधिकांश मुस्लिम शासक हिन्दू युवतियों का बलपूर्वक अपहरण करके उन्हें अपने हरम की शोभा बनाने का प्रयास किया करते थे और ऐसी परिस्थितियों से बचने के लिए राजपूत कन्याओं ने बलशाली राजाओं को राखियां भेजकर उनके साथ भ्रातृत्व संबंध स्थापित कर अपने शील की रक्षा करनी आरंभ कर दी थी। उसी परम्परा ने बाद में रक्षाबंधन पर्व का रूप ले लिया।

चितौड़ की महारानी कर्मावती का प्रसंग तो इस संबंध में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जब गुजरात के शासक बहादुरशाह ने चितौड़ पर आक्रमण कर दिया तो चितौड़ की महारानी कर्मावती घबरा गई। उन्हें चितौड़ के साथ-साथ स्वयं की तथा चितौड़ की अन्य राजपूत बालाओं की सुरक्षा का कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। कोई उपाय न सूझने पर रानी कर्मावती ने बादशाह हुमायूं को राखी के धागे में रक्षा का पैगाम भेजा और हुमायूं को अपना भाई मानते हुए उनसे अपनी सुरक्षा की प्रार्थना की। बादशाह हुमायूं महारानी कर्मावती का यह रक्षासूत्र और संदेश पाकर भाव विभोर हो गए और अपनी इस अनदेखी बहन के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाने तुरन्त अपनी विशाल सेना लेकर चितौड़ की ओर रवाना हो गए लेकिन जब तक वह चितौड़ पहुंचे, तब तक महारानी कर्मावती और चितौड़ की हजारों वीरांगनाएं अपने शील की रक्षा हेतु अपने शरीर की अग्नि में आहूति दे चुकी थी। उसके बाद हुमायूं ने महारानी कर्मावती की चिता की राख से अपने माथे पर तिलक लगाकर बहन के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करने के लिए जो कुछ किया, वह इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया तथा इसी के साथ रक्षाबंधन पर्व के इतिहास में एक अविस्मरणीय अध्याय भी जुड़ गया। इस ऐतिहासिक घटना के बाद ही यह परम्परा बनी कि कोई भी महिला या युवती जब किसी व्यक्ति को राखी बांधती है तो वह व्यक्ति उसका भाई माना जाता है। समय के साथ-साथ रक्षाबंधन पर्व के स्वरूप और मूल उद्देश्य में बहुत बदलाव आया है। तेजी से आधुनिकता की ओर अग्रसर आज के इस भागदौड़ भरे और स्वार्थपरक जमाने में जहां बहनों के लिए अब राखी का अर्थ भाई से महंगे उपहार तथा नकदी इत्यादि पाना हो गया है, वहीं भाई भी अपनी निजी जिन्दगी की व्यस्तताओं के चलते बहनों के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वहन सही ढंग से नहीं कर पाते। ऐसे में यह पवित्र पर्व अब रुपये-पैसे तथा साड़ी, आभूषण व अन्य कीमती उपहारों इत्यादि के लेन-देन का पर्व बनता जा रहा है और भाई-बहन के बीच राखी का मोलभाव होने की वजह से धीरे-धीरे इस पर्व की मूल भावनाएं सिकुड़ रही हैं। कच्चे धागों की जगह रेशम के धागों ने ले ली और अब इन धागों की अहमियत कम होती जा रही है। रक्षाबंधन महज कलाई पर एक धागा बांधने की रस्म नहीं है बल्कि यह भाई-बहन के अटूट स्नेह, पवित्रता और सद्भावना का पर्व है। यह पर्व रिश्तों की पवित्रता और वचनबद्धता का प्रतीक है। इसलिए रक्षाबंधन पर्व को चंद रुपयों या कीमती उपहारों से तोलकर देखना इस पर्व के अंतस में विद्यमान पवित्र भावना का अपमान है।

हिमालय की आपदा और नेपाल-भारत के लिए चेतावनी

डॉ. अरविंद नाथ तिवारी

नेपाल-तिब्बत सीमा के पास आई विनाशकारी बाढ़ ने एक बार फिर पूरे हिमालयी क्षेत्र को झकझोर दिया है। रसुवा क्षेत्र में ल्हेन्डे खोला, भोटेकोशी और त्रिशूली नदी तंत्र में अचानक आया पानी और मलबे का सैलाब अपने साथ घर, वाहन, सड़कें, पुल और इंसानी जिंदगियां बहा ले गया। 27 अगस्त 2026 तक उपलब्ध रिपोर्टों में नेपाल में 157 मौतों और चीन के तिब्बत क्षेत्र में तीन मौतों की जानकारी सामने आई है, जबकि 750 से अधिक लोग लापता बताए जा रहे हैं। लापता लोगों में 133 भारतीय नागरिक भी शामिल हैं।

इस त्रासदी की भयावहता इसलिए भी अधिक है क्योंकि यह केवल नेपाल की समस्या नहीं है। हिमालय से निकलने वाली नदियां सीमाओं को नहीं पहचानतीं। नेपाल में आई आपदा का सीधा असर भारत, विशेषकर बिहार और उत्तर प्रदेश के नदी क्षेत्रों पर पड़ सकता है। इसलिए यह समय केवल राहत और बचाव का नहीं, बल्कि भविष्य की आपदाओं के लिए स्थायी रणनीति बनाने का है।

2025 की त्रासदी से क्या सीखा?

एक तथ्य को स्पष्ट करना जरूरी है। पिछली बड़ी रसुवा-भोटेकोशी आपदा 8 जुलाई 2025 को हुई थी। नेपाल सरकार की आपदा रिपोर्ट के अनुसार उस समय तिब्बत में एक सुप्राग्लेशियल झील के अचानक खाली होने से ल्हेन्डे नदी में फ्लैश फ्लड आया था। कम से कम नौ लोगों की मौत हुई और 19 लोग लापता हुए थे

यानी लगभग एक वर्ष के भीतर उसी व्यापक सीमा क्षेत्र में दो बड़ी घटनाएं सामने आ चुकी हैं। साल 2025 में भी नेपाल के अधिकारी और विशेषज्ञों ने सीमा पार ग्लेशियल झीलों के खतरे की ओर संकेत किया था।

लेकिन सवाल है कि क्या उस चेतावनी को पर्याप्त गंभीरता से लिया गया?

नेपाल के अपने आपदा रिकॉर्ड बताते हैं कि बाढ़ कोई नई चुनौती नहीं है। 1978 में तिनाऊ बेसिन, 1980 में कोसी, 1985 में तादी, 1987 में सुनकोशी और 1993 में मध्य नेपाल में भीषण बाढ़ ने तबाही मचाई थी। 1993 की आपदा में लगभग 1,336 लोगों की जान गई थी।

इसलिए लाव 2026 की त्रासदी को महज एक आकस्मिक प्राकृतिक घटना मानकर आगे बढ़ जाना सबसे बड़ी भूल होगी।

असली खतरा क्या है?

इस बार शुरूआत में भूकंप को बाढ़ का कारण माना गया लेकिन अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के विश्लेषण के अनुसार दर्ज हुआ भूकंपीय संकेत स्वयं एक बड़े बर्फ-पत्थर के भूस्खलन से पैदा हुआ था, यानी पहाड़ का विशाल हिस्सा खिसका, उसने नदी तंत्र को प्रभावित किया और फिर पानी, बर्फ, पत्थर तथा मलबे की विनाशकारी दीवार नीचे की ओर चली गई।

यही हिमालय की नई चुनौती है- भूकंप, ग्लेशियर, भूस्खलन और बाढ़ अब अलग-अलग खतरे नहीं रह गए हैं; वे एक-दूसरे को जन्म देने वाली आपदाओं की श्रृंखला बन सकते हैं।

साल 2025 में भी तिब्बत से निकलने वाली ग्लेशियल झील के अचानक फटने से भोटेकोशी में बाढ़ आई थी। वैज्ञानिक अध्ययनों ने चीन-नेपाल सीमा क्षेत्र में ग्लेशियल झीलों के बढ़ते खतरे को पहले ही रेखांकित किया है। एक अध्ययन में 28 अत्यधिक संवेदनशील ग्लेशियल झीलों की पहचान की गई और अनुमान लगाया गया कि चरम स्थिति में हजारों इमारतें, दर्जनों पुल, जलविद्युत परियोजनाएं और सड़कें प्रभावित हो सकती हैं।



क्या चीन को पहले से पता था?

यही सबसे कठिन और संवेदनशील प्रश्न है।

यह कहना कि चीन को इस आपदा की पहले से पूरी जानकारी थी और उसने जानबूझकर नेपाल को तबाह होने दिया- बिना ठोस प्रमाण के एक गंभीर आरोप होगा। अभी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध प्रमाण इस निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

लेकिन इसका दूसरा पहलू भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

जब किसी नदी का उद्गम या उसका ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र एक देश में और आबादी वाला निचला हिस्सा दूसरे देश में हो, तब उपग्रह निगरानी, ग्लेशियल झीलों की स्थिति, जलस्तर और भूस्खलन की सूचना साझा करना केवल सद्भावना का विषय नहीं बल्कि मानवीय जिम्मेदारी का विषय होना चाहिए।

वैज्ञानिक शोध भी चीन-नेपाल सीमा के ग्लेशियल बेसिनों में क्रॉस-बॉर्डर अर्ली वार्निंग सिस्टम और संयुक्त आपदा प्रबंधन की जरूरत पर जोर देता है। इसलिए चीन से नेपाल को स्पष्ट जवाब मांगना चाहिए- क्या ऊपरी क्षेत्र में किसी असामान्य ग्लेशियल गतिविधि, झील के आकार में बदलाव, भूस्खलन या नदी अवरोध की जानकारी उपलब्ध थी? यदि थी, तो नेपाल को कब और किस माध्यम से चेतावनी दी गई? यह सवाल राजनीतिक आरोप की बजाय वैज्ञानिक पारदर्शिता और अंतरराष्ट्रीय जवाबदेही के रूप में पूछा जाना चाहिए।

नेपाल को अब क्या करना चाहिए?

पहला कदम होना चाहिए- राष्ट्रीय ग्लेशियल डिजास्टर मॉनिटरिंग सिस्टम।

नेपाल को चीन और अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्थानों के साथ मिलकर सीमा क्षेत्र की प्रत्येक संवेदनशील ग्लेशियल झील की नियमित उपग्रह निगरानी करनी चाहिए। जहां खतरा अधिक हो, वहां सेंसर, कैमरा, जलस्तर मापक और सायरन आधारित चेतावनी तंत्र लगाया जाना चाहिए।

दूसरा, नदियों के किनारे बेतरतीब निर्माण रोकना होगा। जलविद्युत परियोजना, पुल, सड़क, होटल और बस्तियों के निर्माण में केवल आर्थिक लाभ नहीं बल्कि आपदा जोखिम मानचित्र को आधार बनाना होगा।

तीसरा, स्थानीय लोगों को केवल आपदा आने के बाद राहत देने की नीति से बाहर निकलना होगा। हर संवेदनशील गांव में नियमित मॉक ड्रिल, सुरक्षित ऊंचे स्थान, निकासी मार्ग और सामुदायिक आपदा दल होने चाहिए।

चौथा, नेपाल-चीन के बीच रियल-टाइम डेटा शेयरिंग समझौता होना चाहिए। किसी ग्लेशियल झील में असामान्य परिवर्तन दिखे तो उसकी सूचना कुछ घंटों में नहीं, कुछ मिनटों में नीचे के क्षेत्रों तक पहुंचे।

भारत को क्या तैयारी करनी चाहिए?

भारत के लिए यह खतरा और गंभीर है। नेपाल से निकलने वाली नदियां बिहार में प्रवेश करती हैं। इसलिए भारत को नेपाल में होने वाली प्रत्येक बड़ी हिमालयी घटना को संभावित सीमा-पार आपदा मानना चाहिए। भारत को नेपाल के साथ मिलकर रियल-टाइम फ्लड अर्ली वार्निंग नेटवर्क बनाना चाहिए। बिहार के सीमावर्ती जिलों में सायरन, मोबाइल अलर्ट, पंचायत-स्तरीय चेतावनी केंद्र और नदी जलस्तर निगरानी प्रणाली को मजबूत करना चाहिए।

भारतीय मौसम विभाग, केंद्रीय जल आयोग, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और बिहार आपदा प्रबंधन विभाग को नेपाल से मिलने वाले आंकड़ों को एकीकृत करना चाहिए। विशेष रूप से गंडक और कोसी जैसी नदियों के लिए ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र में होने वाली असामान्य घटनाओं की सूचना तत्काल निचले इलाकों तक पहुंचनी चाहिए।

भारत को अपने स्तर पर भी उपग्रहों और रिमोट सेंसिंग के माध्यम से हिमालयी क्षेत्र की निगरानी बढ़ानी होगी। साथ ही सेना, वायुसेना, एनडीआरएफ और एसडीआरएफ को हेलीकॉप्टर आधारित त्वरित बचाव की संयुक्त योजना तैयार रखनी चाहिए।

अहम सवाल

आज सबसे बड़ा सवाल यह नहीं है कि यह आपदा प्राकृतिक थी या मानवीय चूक का परिणाम।

सबसे बड़ा सवाल है कि क्या अगली आपदा आने से पहले हम तैयार होंगे?

नेपाल को 1978 से लेकर 1993, 2008, 2017, 2025 और 2026 तक की आपदाओं को अलग-अलग घटनाओं के रूप में नहीं बल्कि एक लंबी चेतावनी श्रृंखला के रूप में देखना होगा। हिमालय तेजी से बदल रहा है और जलवायु परिवर्तन ग्लेशियरों तथा हिमनद झीलों के जोखिम को बढ़ा रहा है।

चीन को भी समझना होगा कि तिब्बत की नदियां केवल चीन की भौगोलिक संपत्ति नहीं हैं; उनका पानी नेपाल और भारत की करोड़ों आबादी के जीवन से जुड़ा है। पारदर्शी सूचना-साझाकरण किसी देश पर एहसान नहीं बल्कि सीमा पार मानवीय सुरक्षा की अनिवार्यता है। और भारत को भी यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि नेपाल में आने वाली बाढ़ नेपाल की सीमा पर रुक जायेगी।

हिमालय की नदियां राजनीति से बड़ी हैं। उनका पानी सीमा नहीं देखता, इसलिए आपदा प्रबंधन भी सीमा में बंधा नहीं रह सकता।

अब समय है कि नेपाल, चीन और भारत आरोप-प्रत्यारोप से ऊपर उठकर एक साझा हिमालयी आपदा चेतावनी तंत्र बनाएं। क्योंकि अगली बार चेतावनी के लिए हमारे पास शायद कुछ मिनट भी न हों।

(लेखक, हिन्दुस्थान समाचार से संबद्ध हैं।)

बीती पीढ़ी की जेन-जी को भी जानें, जिन्हें हम आज भी याद करते हैं

स्नेहा सिंह

आज के दौर में जेन-जी शब्द केवल एक पीढ़ी की पहचान नहीं रह गया है, बल्कि यह एक पूरी मानसिकता बन गया है। तकनीक के साथ जन्मी पीढ़ी, अपने विचारों को निडरता से व्यक्त करने वाली पीढ़ी, परंपराओं पर सवाल उठाने वाली पीढ़ी, दुनिया को एक गांव की तरह देखने वाली पीढ़ी तथा तेजी से सीखने और तेजी से बदलने वाली पीढ़ी, ऐसी अनेक विशेषताओं के साथ जेन-जी की चर्चा होती है। आम तौर पर 1997 से 2012 के बीच जन्मी पीढ़ी को जेन-जी कहा जाता है। यानी आज इसके सबसे बड़े सदस्य लगभग 29 वर्ष के हैं।

लेकिन यहां एक दिलचस्प सवाल उठता है कि क्या अपने समय की परंपराओं पर सवाल उठाने वाले, नई दिशा तलाशने वाले, दुनिया को चुनौती देने वाले और कम उम्र में ही अपनी अलग पहचान बनाने वाले युवा केवल आज की पीढ़ी में ही हैं? इतिहास इसका जवाब देता है, नहीं।

भारत की इस युवा परंपरा को समझने के लिए 19वीं सदी से शुरूआत करनी होगी।

समाज में अंधकार-

19वीं सदी का भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था। समाज में जातिभेद, महिला शिक्षा का अभाव, बाल विवाह, अंधविश्वास और अनेक सामाजिक रूढ़ियां थीं। लेकिन इसी अंधकार के बीच ऐसी युवा प्रतिभाएं सामने आईं, जिन्होंने सवाल पूछना शुरू किया।

सावित्रीबाई फुले इसका अद्भुत उदाहरण हैं। 1848 में पुणे के भिड़ेवाड़ा में लड़कियों के लिए स्कूल शुरू किया गया, तब वह केवल 17 वर्ष की थीं। ऐसे समाज में, जहां लड़कियों को शिक्षा देने का विचार भी स्वीकार्य नहीं था, एक किशोरी शिक्षिका बनकर खड़ी हुई। सावित्रीबाई ने शिक्षा को केवल व्यक्तिगत प्रगति का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक मुक्ति का हथियार बनाया।



आज जेन जी, जेंडर इक्वलिटी , इन्क्लूशन और इक्वल अपोर्चुनिटी जैसे शब्दों से परिचित है। सावित्रीबाई ने इन्हीं मूल्यों के लिए उस समय संघर्ष किया, जब इन विचारों के लिए सामाजिक कीमत चुकानी पड़ती थी।

उनके साथ ज्योतिराव फुले की युवावस्था भी सामाजिक सवालों से भरी थी। उन्होंने शिक्षा और सामाजिक समानता को केंद्र में रखकर युवावस्था में ही ऐसी विचारधारा विकसित की, जो आगे चलकर भारत के सामाजिक सुधार आंदोलनों की नींव बनी।

शिक्षा के दूत-

ईश्वरचंद्र विद्यासागर 21 वर्ष की उम्र में फोर्ट विलियम कालेज में संस्कृत विभाग के प्रमुख बन गए थे। आगे चलकर महिला शिक्षा और विधवा पुनर्विवाह के लिए उनके प्रयासों ने भारतीय समाज सुधार के इतिहास में विशेष स्थान बनाया।

गुजरात के लिए दादाभाई नौरोजी का नाम विशेष महत्व रखता है। युवावस्था में ही वे शिक्षा के क्षेत्र में आगे आए और 27 वर्ष की उम्र में एलफिंस्टन कालेज में गणित और प्राकृतिक विज्ञान के प्रोफेसर बने। 30 वर्ष की उम्र में वे लंदन गए और आगे चलकर वहां की संसद के लिए भी चुने गए। उन्होंने लंन में भारतीय हितों की आवाज बुलंद की। रास्त गोफ्तार अखबार का प्रकाशन किया। वे कांग्रेस के संस्थापक सदस्यों में रहे और तीन बार उसके अध्यक्ष चुने गए। यानी भारत के युवाओं का वैश्वीकरण आज की घटना नहीं है।

साहित्य और कला- साहित्य में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने लगभग 27 वर्ष की उम्र में दुर्गेशनंदिनी के माध्यम से बंगाली उपन्यास को नई दिशा दी। रवींद्रनाथ टैगोर तो किशोरावस्था से ही रचनात्मकता के मार्ग पर चल पड़े थे। लगभग 16 वर्ष की उम्र में उनकी रचनाएं प्रकाशित होने लगी थीं। आगे चलकर वे नोबेल पुरस्कार विजेता बने।

कला में राजा रवि वर्मा का उदाहरण भी ऐसा ही है। उन्होंने भारतीय पौराणिक कथाओं और पात्रों को पश्चिमी ऑयल पेंटिंग तकनीक के साथ जोड़कर एक नई दृश्य भाषा तैयार की। 25 वर्ष की उम्र से ही उन्हें अंग्रेजों से प्रशंसा मिलने लगी थी। 35 वर्ष की उम्र में वे वियना में आयोजित विश्व चित्रकला प्रदर्शनी और प्रतियोगिता में शीर्ष पर रहे।

भारत की छवि-

इसी दौर में स्वामी दयानंद सरस्वती की आध्यात्मिक खोज भी शुरू हुई। उन्होंने युवावस्था में ही पारंपरिक मान्यताओं को आंख मूंदकर स्वीकार करने के बजाय सत्य की खोज का मार्ग चुना। देश को पिछड़ी मानसिकता से बाहर निकालने का उनका महत्वपूर्ण कार्य 25 वर्ष की उम्र से उनकी साधना और सक्रियता के साथ आगे बढ़ा। 51 वर्ष की उम्र में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की।

इसके बाद भारत के इतिहास में प्रमुख रूप से सामने आने वाली हस्ती हैं स्वामी विवेकानंद। यहां ऐतिहासिक सटीकता जरूरी है। शिकागो की विश्व धर्म संसद में उनका ऐतिहासिक भाषण हुआ, तब वे 30 वर्ष के थे, इसलिए वे 29 वर्ष की जेन-जी आयु सीमा में नहीं आते। लेकिन युवावस्था में ही नरेंद्रनाथ दत्त ने भारतीय आध्यात्मिकता, तर्क और मानवता के सवालों पर गहरा चिंतन शुरू कर दिया था। उन्होंने भारत की आध्यात्मिक प्रतिष्ठा को दुनिया में नई पहचान दिलाई।

युवा क्रांति का दौर-

20वीं सदी में भारत की युवा शक्ति का चेहरा अधिक आक्रामक, अधिक राष्ट्रवादी और अधिक वैज्ञानिक होता गया। स्वतंत्रता की लड़ाई जोर पकड़ रही थी और अनेक युवाओं के लिए जीवन का अर्थ व्यक्तिगत कैरियर से कहीं बड़ा था।

भगत सिंह इसका सबसे प्रतीकात्मक उदाहरण हैं। केवल 23 वर्ष की उम्र में वे शहीद हुए और चंद्रशेखर आजाद 25 वर्ष की उम्र में शहीद हुए। गांधीजी को दक्षिण अफ्रीका के रेलवे स्टेशन पर टिकट चेकर ने रंगभेद के कारण अपमानित किया और धक्का देकर ट्रेन से बाहर फेंक दिया। इसी घटना के बाद आगे चलकर मोहनदास से महात्मा गांधी बनने की उनकी जीवनयात्रा शुरू हुई। ट्रेन में अपमान के समय गांधीजी की उम्र केवल 24 वर्ष थी।

सुभाष चंद्र बोस ने भी लगभग 24 वर्ष की उम्र में आईसीएस जैसी प्रतिष्ठित नौकरी का रास्ता छोड़कर राष्ट्रीय आंदोलन का मार्ग चुना।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की युवावस्था भी ज्ञान और संघर्ष का अनूठा मिश्रण थी। उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने के अवसर का उपयोग करते हुए उन्होंने अर्थशास्त्र, कानून और सामाजिक व्यवस्था का गहन अध्ययन किया। आगे चलकर वे भारतीय संविधान के प्रमुख शिल्पकार बने, लेकिन उनकी बौद्धिक लड़ाई की नींव युवावस्था में ही तैयार हो गई थी।

विज्ञान की राह पर-

यदि राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में ये युवा सवाल पूछ रहे थे, तो विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय युवा दुनिया के सामने नए सवालों के जवाब दे रहे थे। श्रीनिवास रामानुजन का नाम यहां सबसे प्रेरणादायी है। पारंपरिक विश्वविद्यालयी शिक्षा की सीमाओं के बावजूद उनकी गणितीय प्रतिभा ऐसी थी कि लगभग 26 वर्ष की उम्र में वे ब्रिटिश गणितज्ञ जी. एच. हार्डी के संपर्क में आए और कुछ ही समय में कैम्ब्रिज की वैज्ञानिक दुनिया तक पहुंच गए।

रामानुजन के पास कंप्यूटर नहीं था, इंटरनेट नहीं था, डिजिटल लाइब्रेरी नहीं थी, लेकिन उनके पास सवाल थे और उन्हें हल करने की असाधारण आंतरिक शक्ति थी।

सत्येंद्रनाथ बोस ने भी 20 वर्ष की उम्र के अंतिम वर्षों में आधुनिक भौतिक विज्ञान को ऐसी दिशा दी कि अल्बर्ट आइंस्टीन तक उनकी प्रतिभा का प्रभाव पहुंचा।

ऑस्ट्रेलिया अंडर-19 के खिलाफ मल्टी-डे मैचों में दम दिखाएंगे यूपी के अयान अकरम

कानपुर। उत्तर प्रदेश के उभरते मध्यम तेज गेंदबाज अयान अकरम को ऑस्ट्रेलिया अंडर-19 के खिलाफ होने वाले आगामी दो मल्टी-डे मुकाबलों के लिए भारतीय अंडर-19 क्रिकेट टीम में शामिल किया गया है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) द्वारा घोषित टीम में जगह बनाने वाले अयान मूल रूप से सहारनपुर के रहने वाले हैं और जूनियर क्रिकेट में लगातार प्रभावी प्रदर्शन के दम पर राष्ट्रीय टीम तक पहुंचे हैं।

उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन की मीडिया कमेटी के चेयरमैन मोहम्मद फहीम ने बताया कि अयान फिलहाल उत्तर प्रदेश अंडर-19 टीम के कप्तान हैं। 2025-26 सत्र में भारतीय अंडर-19 क्रिकेट में उन्होंने 37 विकेट लेकर अपनी गेंदबाजी क्षमता का प्रभावी प्रदर्शन किया।

अयान ने 2025-26 कूच बिहार अंडर-19 ट्रॉफी में उत्तर प्रदेश की टीम की सफलता में अहम भूमिका निभाई। उनकी तेज और अनुशासित गेंदबाजी



की बदौलत उत्तर प्रदेश ने लगातार तीन मुकाबले जीतकर नॉकआउट चरण में जगह बनाई। चंडीगढ़, छत्तीसगढ़ और असम के खिलाफ मुकाबलों में भी अयान ने प्रभावशाली गेंदबाजी करते हुए टीम की जीत में योगदान दिया।

नवंबर 2025 में आयोजित अंडर-19 चैलेंजर ट्रॉफी में भी अयान उत्तर प्रदेश की ओर से चुने गए एकमात्र खिलाड़ी थे।

राष्ट्रीय स्तर के इस टूर्नामेंट में उनके प्रदर्शन ने चयनकर्ताओं का ध्यान आकर्षित किया। जूनियर क्रिकेट में लगातार अच्छे प्रदर्शन और तेज गेंदबाजी में सुधार के चलते अयान ने अपनी अलग पहचान बनाई है। ऑस्ट्रेलिया अंडर-19 के खिलाफ भारतीय टीम में चयन उनके क्रिकेट करियर की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। भारत और ऑस्ट्रेलिया अंडर-19 के बीच दो मल्टी-डे मुकाबले खेले जाएंगे। पहला मैच 27 से 30 सितंबर तक राजकोट में और दूसरा 5 से 8 अक्टूबर तक अहमदाबाद के बी ग्राउंड में होगा। उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव प्रेम मनोहर गुप्ता, कोषाध्यक्ष सचिन आनंद शुक्ला और सीईओ अंकित चटर्जी ने अयान अकरम के चयन पर उन्हें बधाई दी। उन्होंने कहा कि अयान ने मेहनत, अनुशासन और लगातार अच्छे प्रदर्शन के दम पर यह उपलब्धि हासिल की है।

यूपीसीए के पदाधिकारियों ने उम्मीद जताई कि अयान भारतीय अंडर-19 टीम के साथ भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। भारतीय अंडर-19 मल्टी-डे टीम में यशवर्धन चौहान (कप्तान), लक्ष्य रायचंदानी (उपकप्तान), सागर निकड़, कुशाग्र ओझा, मनव चौहान, कुश पटेल, मानव कृष्णा (विकेटकीपर), अभिप्राय बिस्वास (विकेटकीपर), रोहित यादव, ईशान ओम, अयान अकरम, प्रणव राघवेंद्र, प्रियांशु सिंह, मोहित उरवा और आर्यन यादव।

कार्यक्रमः पहला मल्टी-डे मैच : 27 से 30 सितंबर, राजकोट। दूसरा मल्टी-डे मैच : 5 से 8 अक्टूबर, अहमदाबाद (बी ग्राउंड)।

रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में रामायणी सम्मान का भव्य आयोजन

वाराणसी। गोस्वामी तुलसीदास जयंती के पावन अवसर पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय (इलव), वाराणसी में रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में रामायणी सम्मान का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें देशभर की 28 प्रतिष्ठित हस्तियों को उनके विशिष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। सम्मान चयन प्रक्रिया के बारे में जानकारी देते हुए चयन समिति के सदस्य एवं ट्रस्टी डॉ. भारत नागर ने कहा कि श्रीराम, सीतामाता और रामायण के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों तक पहुंचने के लिए काउंसिल द्वारा पूरे वर्ष प्रत्येक जिले में विशेष अभियान चलाया जाएगा, ताकि उनके योगदान को पहचान, सम्मान और प्रोत्साहन दिया जा सके। इसका उद्देश्य वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करना तथा यह संदेश विश्वभर में फैलाना है। नैनीताल-ऊधम सिंह नगर (उत्तराखंड) के सांसद एवं काउंसिल के अध्यक्ष ने कहा कि देश में रामायण साहित्य, भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय हित के क्षेत्र में कार्य करने वाली अनेक प्रतिभाएं हैं, जिन्हें मंच प्रदान करना आवश्यक है। छत्तीसगढ़ के सरगुजा से सांसद चिंतामणि महाराज ने कहा कि आज के समय में प्रोत्साहन देना अत्यंत आवश्यक है और युवाओं को सही दिशा दिखाने की जरूरत है।कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अजीत चतुर्वेदी ने ह्यरामायणी सम्मान के आयोजन को सभी के लिए गौरव का विषय बताया।



इस अवसर पर भजन सम्राट एवं पद्मश्री से सम्मानित अनुप जलोटा, जो स्वयं भी सम्मानित हुए, ने श्रीराम के प्रति समर्पित भजन प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया।

रामायण रिसर्च काउंसिल के ट्रस्टी एवं रामायणी सम्मान के संयोजक देवदत्त शर्मा (सेवानिवृत्त कअर) ने बताया कि इस पहल का उद्देश्य उन व्यक्तियों को सम्मानित करना है, जिन्होंने अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। कार्यक्रम का संचालन पीतांबर मिश्रा ने किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों में महर्षि योगी मधुसूदन जी (संस्थापक, महर्षि योग आश्रम, कंकाल, हरिद्वार), पद्मश्री आचार्य डॉ. हरिहर कृपालु त्रिपाठी जी महाराज (पूर्व अध्यक्ष, श्री काशी विश्वनाथ मंदिर ट्रस्ट), पद्मभूषण प्रो. (डॉ.) देवी प्रसाद द्विवेदी, ज्योतिषाचार्य प्रो. चंद्रमौली उपाध्याय, विश्व भूषण मिश्रा (उएड, काशी विश्वनाथ मंदिर ट्रस्ट) सहित अनेक विद्वान उपस्थित रहे।

अनुप जलोटा, अनुराधा पौडवाल, आर.के. सिन्हा, किशोर कुणाल (मरणोपरांत), डॉ. अर्चना प्रकाश, भगवान दास, डॉ. उदय प्रताप सिंह, डॉ. अवधिहारी, योगेश्वर प्रसाद देवरानी, आदित्य जैन, अभय मानके, संत हरिओम, नरेंद्रनाथ गगन, योगेश चंद्र शर्मा योगी, संजीव कुमार, डॉ. आशा ओझा, मदुगुल्ला प्रफुल्ला, विनोद कुमार तिवारी, डॉ. चंद्र प्रभा मदान, आचार्य संतोष पांडेय, अजय याग्निक, विंध्याचल मणि त्रिपाठी, राजराधे कृष्ण शर्मा, प्रेम प्रकाश दुबे, त्रिलोकी नाथ पांडेय, रामभानी द्विवेदी, डॉ. रविशंकर पांडेय और रेखा मेहरा। इस अवसर पर अजय भट्ट ने बताया कि सीतामढ़ी (बिहार) में, जो माता सीता की प्रकट स्थली मानी जाती है, बिहार सरकार द्वारा श्री रामजानकी के प्राचीन स्थल के लिए 12 एकड़ भूमि आवंटित की गई है।

यहां 51 शक्तिपीठों की मिट्टी से अखंड ज्योति स्थापित की जाएगी और चतुर्भुजी महालक्ष्मी जी की प्रतिमा भी स्थापित की जाएगी। 25 अप्रैल 2026 को बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी द्वारा यहां भूमि पूजन भी किया गया था।

उत्सव ने एटॉमिक कैपिटल के नेतृत्व में सीरीज ए के लिए जुटाई रु 36 करोड़

भारतीय जीवन में आस्था का सबसे गहरा महत्व है। देश में लगभग 6,50,000 मंदिर हैं - यानी हर 5 वर्ग किलोमीटर की दूरी पर तकरीबन एक मंदिर - फिर भी इनके आस-पास का इकोसिस्टम ऑफलाइन, बिखरा हुआ और अव्यवस्थित है।

पूजा बुक करने से लेकर प्रसाद पाने तक, श्रद्धालुओं को आज भी किस्मत, दूरी और लोगों की बातों पर ही निर्भर करना पड़ता है। रोजाना में जबरदस्त मांग और लगभग न के बराबर डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर के बीच का यह अंतर भारत के सबसे बड़े अवसरों में से एक है जिनका अभी तक पूरा इस्तेमाल नहीं हुआ है। भारत के रिलीजन-टेक और पूजा बुकिंग प्लेटफॉर्म, उत्सव ने एटॉमिक कैपिटल के नेतृत्व में सीरीज ए फंडिंग में रु 36 करोड़ की राशि जुटाई है। इसमें मौजूदा निवेशकों इंडिया कोशेंट और इक्वानिमिटी इन्वेस्टमेंट्स ने भी निवेश किया है, इस तरह जुटाई गई कुल राशि रु36 करोड़ हो गई है। इस धनराशि का उपयोग प्रोडक्ट, टेक्नोलॉजी, विकास एवं टीम के विस्तार के लिए किया जाएगा, क्योंकि उत्सव देश-विदेश में रहने वाले श्रद्धालुओं, मंदिरों और रीति-रिवाजों को जोड़ने वाला एक डिजिटल प्लेटफॉर्म बना रहा है। प्रोडक्ट-मार्केट फिट और अच्छे यूनिट इकोनॉमिक्स के बाद यह फंडिंग राउंड



पूरा हुआ है।

फरवरी 2025 में रु6.35 करोड़ के राउंड के बाद से राजस्व में 8 गुना बढ़ोतरी हुई है और अब यह प्लेटफॉर्म हर महीने 2.5 लाख ऑर्डर पूरे करता है।

आस्था का सिलसिला जारी रहता है: अमावस्या, पूर्णिमा, एकादशी, संक्रांति, श्रावण और नवरात्रि साल भर एक लय बनाए रखते हैं। लेकिन जगह की दूरी इस लय को तोड़ देती है और अनुमान के मुताबिक 40 करोड़ श्रद्धालु साल में सिर्फ.एक बार तीर्थयात्रा करते हैं, और कई लोगों के लिए किसी खास मंदिर में दर्शन करना जीवन में एक बार पूरी होने वाली इच्छा ही बनी रहती है।

इसी दूरी को कम करने के लिए उत्सव को डिजाइन किया गया है।

उत्सव इस इकोसिस्टम के लिए टेक्नोलॉजी का निर्माण कर रहा है। यह भक्तों को एक ऐसा अनुभव देता है जिसका वे बेसब्री से इंतजार करते हैं। दुबई में रहने वाला कोई परिवार किसी प्रतिष्ठित मंदिर में पूजा बुक कर सकता है, किसी वेरिफाइड पुजारी से जुड़ सकता है, संकल्प में अपना नाम और गोत्र सुन सकता है, पूजा-विधि को लाइव देख सकता है और कुछ दिनों बाद अपने घर पर ही पवित्र प्रसाद पा सकता है। इस तरह पूजा एवं पुजारी से सलाह लेने से लेकर प्रसाद एवं खास तौर पर अपने लिए की जाने वाली पूजा-विधियों तक, सभी धार्मिक जरूरतें एक ही भरोसेमंद प्लेटफॉर्म के जरिए पूरी हो जाती हैं। आने वाले समय में नई सुविधाएँ जुड़ने के साथ भक्तों के लिए यह अनुभव और भी बेहतर होता जाएगा, साथ ही मंदिर अपनी भौगोलिक सीमाओं से कहीं आगे तक पहुँच पाएँगे। सौरजीत बासु, अंकिता डे और प्रजता सामंत द्वारा शुरू किया गया उत्सव, स्केलेबल टेक्नोलॉजी और संचालन के बेहतर तरीकों को आस्था, पूजा-विधि और भरोसे की गहरी समझ के साथ जोड़ता है।

कंपनी मंदिरों के पुजारियों, विद्वानों और आचार्यों के साथ मिलकर सुनिश्चित करती है कि प्लेटफॉर्म पर होने वाली हर पूजा-विधि को वे लोग ही तय करें और मंजूरी दें जो शास्त्रों के सबसे अच्छे जानकार हैं। उनकी सोच एकदम स्पष्ट है: टेक्नोलॉजी भक्ति की जगह न ले, इसके बजाए भक्तों तक पहुंच आसान बनाए। एटॉमिक कैपिटल के पार्टनर अपूर्व गौतम ने कहा भारत की डिवोशनल इकॉनमी (आध्यात्मिक और धार्मिक गतिविधियों से जुड़ी अर्थव्यवस्था) बहुत बड़ी है, इसमें लगातार गतिविधियां होती रहती है। यह हर क्षेत्र, हर आय वर्ग और हर पीढ़ी तक फैली है, इसके बावजूद यह आज भी टेक्नोलॉजी से अछूती है। उत्सव इसे टेक्नोलॉजी से जोड़कर व्यवस्थित बनाना चाहता है।

टीम के काम करने के तरीके ने हमें सबसे ज्यादा प्रभावित किया है। इस टीम ने कम लागत में बड़े स्तर पर बिजनेस खड़ा किया है और ग्राहक बार-बार इनके पास आते हैं। जो इस बात का.संकेत है कि मांग भी है और बिजनेस मॉडल भी मजबूत है; ऐसे में हमें इस क्षेत्र में विकास की ढेरों संभावनाएं दिखाई देती हैं।



भारत में बदलते मौसमः सर्दी, एलर्जी या फ्लू, कैसे पहचानें?

कई पीढ़ियों से भारत में लोग मौसमी बदलावों को देखकर यह अनुमान लगाते आए हैं कि किस मौसम में किस तरह के संक्रमण होने की संभावना रहती है। सर्दियों में आमतौर पर सर्दी-जुकाम और खांसी होती थी, गर्मियों में त्वचा पर चकत्ते और एलर्जी देखने को मिलती थी, जबकि मानसून अक्सर वायरल बुखार के साथ आता था। लेकिन आज मौसम के ये परिचित पैटर्न बदल रहे हैं। मौसम अब अधिक अनिश्चित हो गया है, जिसमें बढ़ता तापमान, अचानक बारिश, कम या उतार-चढ़ाव वाली सर्दियां और मौसम में अप्रत्याशित बदलाव देखने को मिल रहे हैं। पिछले साल ही कई शहरों में नवंबर तक भारी बारिश हुई थी।[1][2] ये बदलाव वायरल संक्रमण, खासकर श्वसन संक्रमण, के होने के समय और उनकी आवृत्ति को भी प्रभावित कर सकते हैं। मौसम में अचानक होने वाले बदलाव से वायरस के जीवित रहने और फैलने के तरीके प्रभावित हो सकते हैं, जिनके हम पहले उतने अभ्यस्त नहीं थे।[3] वहीं, कई शहरों में वायु गुणवत्ता लगातार खराब हो रही है,[4] जिससे हमारे फेफड़ों पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। जब ये दोनों कारक, यानी अनिश्चित मौसम और प्रदूषण, एक साथ आते हैं, तो वे हमारे श्वसन स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं और हमें संक्रमण के प्रति अधिक संवेदनशील बना सकते हैं।[5] डॉ. बाकुल जे. पारेख, वरिष्ठ बाल रोग विशेषज्ञ, टऊ उळल, ऋक्षअढ, बाकुल पारेख चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल, मुंबई, कहते हैं कई लोगों में छींक आना, खांसी, बुखार, थकान, नाक बंद होना या नाक बहना और गले में खराश जैसे लक्षण दिखाई देते हैं, और अक्सर इनमें से एक से अधिक लक्षण एक साथ होते हैं। क्योंकि इन लक्षणों में काफी समानता होती है, इसलिए यह समझना मुश्किल हो सकता है कि यह सर्दी-जुकाम है, एलर्जी है या फ्लू। लेकिन इनके बीच अंतर समझना महत्वपूर्ण है, खासकर इसलिए क्योंकि इन्फ्लुएंजा (फ्लू) का समय पर इलाज न होने पर यह गंभीर हो सकता है। डॉ. दास आगे बताते हैं



फ्लू सामान्य सर्दी-जुकाम जैसा नहीं होता। हालांकि सर्दी-जुकाम और फ्लू दोनों अचानक शुरू हो सकते हैं, लेकिन फ्लू के लक्षण सर्दी-जुकाम की तुलना में अधिक गंभीर होते हैं।[6] इसकी शुरूआत अक्सर तेज बुखार, शरीर में तेज दर्द, सिरदर्द, अत्यधिक थकान और सूखी खांसी के साथ होती है। फ्लू से बचाव के सबसे अच्छे तरीकों में से एक वार्षिक इन्फ्लुएंजा वैक्सीन लगवाना है, जो गंभीर बीमारी के जोखिम को कम करने में मदद करती है और पूरे साल सुरक्षा प्रदान करती है।

एक मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली संक्रमणों के खिलाफ शरीर की प्राकृतिक सुरक्षा है और इसे मजबूत बनाने का सबसे अच्छा तरीका लगातार स्वस्थ आदतों का पालन करना है।[1] अच्छा पोषण प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाए रखने और फ्लू जैसे संक्रमणों से लड़ने के लिए शरीर को तैयार रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।[7] पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन लेना और फाइबर से भरपूर खाद्य पदार्थों को आहार में शामिल करना स्वस्थ आंत (४३) को बनाए रखने में मदद कर सकता है, जो समग्र प्रतिरक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। विटामिन उ, जिंक और विटामिन ऊजैसे पोषक तत्व भी शरीर की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए इन पोषक तत्वों से भरपूर आहार पर ध्यान देना आपकी प्रतिरक्षा को प्राकृतिक रूप से मजबूत करने में मदद कर सकता है। दुनिया भर में हर साल एक अरब से अधिक लोग फ्लू से प्रभावित होते हैं, जिनमें से 30 से 50 लाख मामले गंभीर हो जाते हैं।[8] अच्छी बात यह है कि साल में एक बार लगाया जाने वाला फ्लू का टीका निमोनिया जैसी गंभीर जटिलताओं की संभावना को काफी कम कर सकता है, खासकर उन लोगों में जो अधिक जोखिम में हैं, जैसे बुजुर्ग और लंबे समय से किसी स्वास्थ्य समस्या से जूझ रहे लोग।[9] टीका लगवाने वाले लोगों को फ्लू हो भी जाए, तो उनके लक्षण आमतौर पर कम गंभीर होते हैं और वे बिना टीका लगवाए लोगों की तुलना में जल्दी ठीक हो जाते हैं।

डॉ. जेजो करनकुमार, मेडिकल अफेयर्स डायरेक्टर, एबॉट इंडिया, कहते हैं जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन बीमारी के पैटर्न को प्रभावित कर रहा है, रोकथाम पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। इन्फ्लुएंजा का टीकाकरण एक प्रमाणित और प्रभावी उपाय है, जो लोगों को फ्लू से जुड़ी गंभीर बीमारियों से सुरक्षित रखने में मदद कर सकता है। भारत में, जहां मौसमी बदलाव अधिक अनिश्चित होते जा रहे हैं, सही समय पर टीकाकरण सार्वजनिक स्वास्थ्य की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। फ्लू का टीकाकरण उन लोगों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जिनमें फ्लू से गंभीर बीमारी का जोखिम अधिक होता है। उदाहरण के लिए, यह मधुमेह से पीड़ित लोगों में अस्पताल में भर्ती होने की संभावना को कम करने में मदद करता है, क्योंकि उन्हें फ्लू से जटिलताओं का अधिक जोखिम हो सकता है। यह गर्भवती महिलाओं में फ्लू से जुड़ी श्वसन संबंधी समस्याओं को भी काफी हद तक कम कर सकता है, जिससे मां और बच्चे दोनों की सुरक्षा में मदद मिलती है। बुजुर्ग और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोग, जो आमतौर पर संक्रमण के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, वे भी टीकाकरण से लाभ उठा सकते हैं, क्योंकि यह उनके शरीर को वायरस से लड़ने के लिए अतिरिक्त सहायता दे सकता है।[11]

एक मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली बनाए रखना और अच्छी स्वच्छता का पालन करना स्वस्थ रहने के लिए जरूरी है, लेकिन वार्षिक फ्लू टीकाकरण व्यापक सुरक्षा प्रदान करने में मदद कर सकता है। यह खास तौर पर महत्वपूर्ण है क्योंकि इन्फ्लुएंजा वायरस तेजी से बदलता है। यही कारण है कि हर साल फ्लू के टीके को अपडेट किया जाता है, ताकि उस समय फैल रहे सबसे प्रमुख वायरस स्ट्रेन से सुरक्षा मिल सके। यह अपडेट विश्व स्वास्थ्य संगठन (हल्ड) के मार्गदर्शन के आधार पर किया जाता है। सार्वजनिक स्थानों पर रहते समय छोटी-छोटी सावधानियां बड़ा अंतर पैदा कर सकती हैं। खांसते या छींकते समय अपने मुंह और नाक को ढकना याद रखें। इससे आपके आसपास के लोगों को संक्रमण से बचाने में मदद मिलती है। नियमित रूप से हाथ धोना और जब आप बीमार हों तो दूसरों से थोड़ी दूरी बनाए रखना संक्रमणों के प्रसार को रोकने के सरल और जिम्मेदार तरीके हैं। इन आदतों को लगातार अपनाकर हम न केवल अपने स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं, बल्कि अपने समुदाय के लोगों की सेहत और सुरक्षा में भी योगदान देते हैं।



जानकारी

प्रेग्नेंसी में न हो बीपी लो

अक्सर प्रेग्नेंसी के पहले तीन महीने में लो ब्लड प्रेशर की समस्या सामने आती है। इस दौरान अगर अपना पूरा ध्यान न रखा गया, तो गर्भपात भी हो सकता है। इसलिए डॉक्टर समय-समय पर बीपी के रूटीन चेकअप की सलाह देते हैं। इस बारे में पूरी जानकारी रख कर इस समस्या से बचाव किया जा सकता है।



गर्भावस्था में ब्लडप्रेशर लो होना आम समस्या है। अतः इस दौरान अपना ख्याल रखना भी जरूरी है, ताकि इस समस्या से बचा जा सके। प्रेग्नेंसी के दौरान लो बीपी से कई समस्याएं हो सकती हैं। यह समस्या अक्सर प्रेग्नेंसी के पहले तीन महीनों में होती है। कई बार जानकारी की कमी से महिलाएं इससे घबरा जाती हैं। इस समस्या से बचने के लिए इसके लक्षणों और बचाव को जानना जरूरी है। शुरुआती दौर में कई महिलाओं को इस दौरान मार्निंग सिकनेस और वोमिटिंग हो सकती है। सिस्टोलिक 120 और डायस्टोलिक 80 को नॉर्मल ब्लड प्रेशर माना जाता है। प्रेग्नेंसी में लगभग सिस्टोलिक 5 से 10 और डायस्टोलिक करीब 10 से 15 तक बीपी कम होता है। अतः समय-समय पर ब्लड प्रेशर की जांच जरूरी है। इसके कारण कभी-कभी गर्भपात भी हो सकता है। अधिक रक्त स्राव की वजह से भी ब्लड प्रेशर पर असर पड़ता है। अतः कंसीव करने के बाद नियमित डॉक्टर के संपर्क में रहें। कई बार इक्टोपिक प्रेग्नेंसी के कारण भी बीपी लो हो जाता है।

यह वह अवस्था है जब गर्भ में बच्चा यूटरेस में होने के बजाय या तो ओवरी में होता है या फिर ट्यूब में। इससे तेज दर्द होता है और शिशु के बढ़ने के साथ ही ट्यूब फट जाता है। इसके कारण भी भारी रक्तस्राव होता है, जो काफी खतरनाक है। अत- प्रेगनेंट होने पर एक बार डॉक्टर से जांच अवश्य करवाएं।

इन बातों का रखें ख्याल

अगर लो बीपी की समस्या है, तो लिक्विड ज्यादा लेना चाहिए। खूब पानी पीएं और खुद को डीहाइड्रेशन से बचाएं। हेल्दी और बैलेंस्ड डायट लें। इसके अलावा विटमिन और फॉलिक एसिड भी रोजाना लें जो डॉक्टर ने बताया हो। खुद को फूड प्वाइजनिंग से बचाएं। डॉक्टर के अनुसार जो भी ब्लड टेस्ट हो, उसे जरूर कराएं। इससे डायबिटीज, ब्लड शूगर, एनिमिया और ब्लड से जुड़ी अन्य समस्याओं का भी पता चलेगा। इसके अलावा ब्लड टेस्ट से बीपी के अलावा बच्चे की सेहत और विकास भी जानकारी मिलेगी।

लो बीपी की समस्या प्रसव के बाद प्रायः समाप्त हो जाती है। फिर भी इस दौरान कुछ अन्य बातों का ध्यान रखकर इस समस्या से बचा जा सकता है। लो बीपी की परेशानी होने पर बायीं करवट सोएं। इससे दिल में रक्त का प्रवाह सही होगा। झटके से न बैठें और न ही खड़े हों। ज्यादा देर तक खड़े न रहें, कैफीन और शराब का सेवन न करें। एक बार में ज्यादा न खाएं। थोड़ा-थोड़ा करके अधिक बार खाएं। प्रेग्नेंसी के 16वें सप्ताह के बाद पीठ के बल ज्यादा देर तक न लेटें। इसके अलावा अगर चक्कर आए, तो तुरंत कुर्सी या बेड पर बैठ जाएं। इससे इंज्यूरी से बचा जा सकता है।

पहचानें इसके लक्षण

हल्का सिर दर्द, चक्कर आना, उबकाई आना, कमजोरी महसूस होना, धुंधला दिखना, ये सारे लक्षण लो बीपी के हैं। इनमें से कोई भी लक्षण दिखाई दे, तो डॉक्टर से तुरंत दिखाएं।

सीजेरियन के बाद ऐसे रखें ख्याल

सीजेरियन डिलिवरी होने के बाद कई बातों का ध्यान रखना जरूरी होता है। कई चीजों से परहेज भी रखना पड़ता है। इन सुझावों को अपना कर कम समय में रिकवरी संभव है।

सर्जरी के कारण कभी-कभी दर्द की शिकायत होती है। ऐसे में डॉक्टर से पेन किलर ले सकते हैं।

एक्टिव रहें : सर्जरी के बाद बैठने से अच्छा है कि कुछ चलते-फिरते रहें। इससे रक्त संचरण सुचारू रहेगा और रक्त का थक्का बनने की आशंका भी कम होगी।

ब्रेस्ट फीडिंग : ब्रेस्ट फीडिंग कराने से कई प्रकार के फायदे होते हैं। इससे बच्चे को तो फायदा होता ही है। यह अप्रत्यक्ष रूप से मां का वजन घटाने में भी मददगार है। इसके अलावा भी मां को इससे कई फायदे होते हैं।

ढीले कपड़े पहनें : सर्जरी के बाद चुभने वाले कपड़ों से परहेज रखना चाहिए। सूती और ढीले कपड़े पहनना अच्छा होता है, जिससे शरीर को आराम मिले।



व्रत के दौरान सावधानी बरतें गर्भवती महिलाएं

सुहागिन स्त्रियों के लिए पर्व काफी महत्व रखते हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान और झारखंड के साथ ही देश के सभी राज्यों में पर्व हिंदू परिवारों में बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं। महिलाएं इस दिन अपने पति की लंबी आयु और परिवार की सलामती के लिए व्रत रखती हैं और नए कपड़े-चूड़ियां आदि पहनकर पूजा करती हैं। व्रत-त्यौहारों में बताए गए नियमों का पालन तो जरूरी है, लेकिन कुछ विशेष स्थितियों में आपको अतिरिक्त ध्यान देने की भी जरूरत पड़ती है। जैसे- यदि कोई महिला प्रेग्नेंट है, यानी गर्भ से है, तो उसे व्रत के दौरान कुछ बातों का विशेष ख्याल रखना चाहिए, ताकि उसके और होने वाले बच्चे के स्वास्थ्य पर इसका असर न पड़े। आइए आपको बताते हैं व्रत के दौरान गर्भवती महिलाों को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

शरीर की जरूरत के अनुसार बनाएं प्लान

गर्भवती महिला के शरीर की जरूरतें सामान्य महिला से बहुत ज्यादा अलग होती हैं। प्रेग्नेंसी के दौरान महिलाओं में आयरन, कैल्शियम और एनर्जी की जरूरतें बढ़ जाती हैं। इसलिए यदि कोई महिला प्रेग्नेंट है, तो उसे व्रत के बारे में पहले से थोड़ी प्लानिंग कर लेनी चाहिए। क्या खाना है, कब खाना है और कितना खाना है, इस बारे में चाहें तो अपने डॉक्टर या डायटीशियन से बात कर लें, ताकि आपको और शिशु को किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े।

निर्जला व्रत न रखें प्रेग्नेंट महिलाएं

गर्भवती महिला को कभी भी निर्जला व्रत नहीं रखना चाहिए। गर्भ में भ्रूण के विकास के दौरान महिला के शरीर में पानी की जरूरतें भी बढ़ जाती हैं। डिहाइड्रेशन (निर्जलीकरण) शिशु के लिए खतरनाक हो सकता है। गर्मी और बारिश के कारण उमस बढ़ने से इस मौसम में पसीना निकलने, प्यास ज्यादा लगने और पेशाब ज्यादा लगने के कारण, शरीर की पानी की जरूरतें बढ़ जाती हैं। इसलिए व्रत के दौरान तरल आहार जैसे- सादा पानी, नींबू पानी, फलों का जूस, छाछ आदि का सेवन करती रहें।

चाय-कॉफी कम पिएं

प्रेग्नेंसी के दौरान बहुत सारी महिलाओं को गैस, कब्ज और बदहजमी की समस्याएं होती हैं। व्रत के दौरान बहुत सारे लोग चाय-कॉफी खूब पीते हैं। मगर गर्भवती महिलाओं को ऐसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि चाय-कॉफी में मौजूद तत्व आपके पेट की समस्या को और बढ़ा सकते हैं।

प्रेग्नेंसी के दौरान व्रत में रखें अन्य सावधानियां

- गर्भवती महिलाएं व्रत के दौरान झूला न झूलें और न ही पेट पर दबाव डालने वाला कोई काम करें।
- बहुत देर तक एक ही जगह पर बैठें, लेटें या खड़ी न रहें। इसके बजाय थोड़ी-थोड़ी देर में कुछ दूर चलकर अपने शरीर में रक्त प्रवाह (ब्लड सर्कुलेशन) को ठीक करें।
- भूख कम करने के लिए और कमजोरी दूर करने के लिए आप मुख्य खाने के अतिरिक्त बीच-बीच में ड्राई फ्रूट्स (सूखे मेवे) खा सकती हैं।
- व्रत के दौरान बहुत अधिक मीठी चीजें, रिफाइंड शुगर वाली चीजें खाने से परहेज करना चाहिए। ये शिशु के लिए खतरनाक हो सकता है। इसके बजाय फल और कच्ची सब्जियां खाएं, जिससे आपको प्राकृतक शुगर के साथ पर्याप्त फाइबर भी मिल सके।

लंबे समय तक व्रत न रखें गर्भवती महिलाएं

गर्भवती महिलाओं को लंबे समय तक भूखा नहीं रहना चाहिए। दरअसल लंबे समय तक भूखा रहने से आपके शरीर में ग्लूकोज का स्तर बहुत अधिक कम हो सकता है, जो कई बार खतरनाक स्थिति हो सकती है। शरीर में ग्लूकोज की कमी से महिला हाइपोग्लाइसीमिया का शिकार हो सकती है, जो शिशु के लिए जानलेवा स्थिति हो सकती है। इसलिए लंबे समय तक भूखा रहने से बचें।



सुझाव

एंटीबायोटिक लेते वक्त इन 7 बातों का रखें विशेष ख्याल

हालांकि एंटीबायोटिक दवाओं को लेने से आपको तुरंत आराम मिलता है, लेकिन एंटीबायोटिक दवाओं को लेते समय कुछ बातों को ध्यान में रखना बहुत जरूरी होता है। आइए ऐसी ही कुछ बातों की जानकारी लें।

एंटीबायोटिक के सेवन के दौरान सावधानी



एंटीबायोटिक दवाइयां सूक्ष्म जीवाणुओं द्वारा बनाई जाती हैं, जो दूसरे-जीवाणुओं को मार देती हैं। इससे आपको तुरंत आराम मिलता है, लेकिन एंटीबायोटिक दवाओं को लेते समय कुछ बातों को ध्यान में रखना बहुत जरूरी होता है। सबसे पहले दवा को पूरी तरह प्रभावशाली करने के लिए दवाओं को ठीक प्रकार से लेना बहुत जरूरी होता है। सही तरीके से दवा न लेने से एंटीबायोटिक प्रतिरोध करने लगती है और इसका मतलब आपको अन्य कोर्स लेने की जरूरत है। आइए जानें एंटीबायोटिक दवाओं को लेते समय किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

एंटीबायोटिक कोर्स को पूरा करें

एंटीबायोटिक दवाओं को लेते समय इस बात को ध्यान में रखना बहुत जरूरी है कि निर्धारित एंटीबायोटिक दवाओं के कोर्स को पूरा करे। अक्सर लोग ठीक महसूस होने के बाद और अधिक दवाओं को लेने की जरूरत महसूस नहीं करते। ऐसा करने से पूरा कोर्स बेकार हो जाता है। इसलिए चिकित्सक द्वारा निर्धारित दिनों की सही संख्या के अनुसार दवाएं लें।

प्रोबायोटिक्स को अपने आहार में शामिल करें

जब भी आप एंटीबायटिक का कोर्स लेते हैं, तब आपको नियमित आधार पर दही के रूप में प्रोबायोटिक्स भी लेना चाहिए और कोर्स पूरा होने के बाद प्रोबायोटिक्स लंबे समय तक जारी रखना चाहिए। प्रोबायोटिक्स अपने आहार का नियमित हिस्सा बनाना आपके लिए अच्छा विचार है।

शराब से दूरी

शराब एंटीबायोटिक दवाओं की गतिविधि या चयापचयन में दखल देती है। इससे लिवर एंजाइम की गतिविधि प्रभावित होती है, जिससे एंटीबायोटिक दवाओं का प्रभाव खत्म हो जाता है। इसलिए ऐसे एंटीबायोटिक्स लेने के दौरान शराब का सेवन नहीं करना चाहिए।

कब लेनी चाहिए

एंटीबायोटिग दवाओं को सही समय पर लेना भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। अगर आपको एक दिन में दो बार दवा लेने के लिए कहा गया है, तो आपको दवा की एक भी खुराक को छोड़ना नहीं चाहिए। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखें कि दवा आपको खाने से पहले लेनी चाहिए या बाद में। क्योंकि कुछ दवाओं को खाली पेट और कुछ को भोजन के बाद लेना होता है। हमेशा लेबल को पढ़े और अपने डॉक्टर या फार्मासिस्ट से दवा लेने के सही समय के बारे में पूछें।

साइड इफेक्ट

आमतौर पर एंटीबायोटिक दवाओं को सुरक्षित और अच्छी तरह सहन करने योग्य माना जाता है, पर ये व्यापक रूप से प्रतिकूल प्रभाव से भी जुड़ी हुई होती है। विविध रूपों वाली और पूरी तरह एंटीबायोटिक के उपयोग और लक्ष्यित किये जाने वाले सूक्ष्मजीवों पर निर्भर होते हैं। एंटीबायोटिक के साइड इफेक्ट बुखार और मिचली से लेकर फोटोडर्माटाइटिस और एनाफिलिक्स जैसे बड़े एलर्जी तक के रूप में देखने को मिल सकते हैं।

कुछ खाद्य पदार्थों से बचें

कुछ एंटीबायोटिक दवाएं कैल्शियम और आयरन जैसे विटामिन और मिनरल लेने के दौरान प्रभावी नहीं होती है। अगर ऐसा है तो दवाओं के लेने के दौरान कैल्शियम और आयरन के सप्लीमेंट और कैल्शियम युक्त आहार को लेने से बचना चाहिए। इसके साथ ही एंटीबायोटिक के सेवन के दौरान या बाद में कई महीनों तक आपके पाचन तंत्र पर बुरा असर पड़ता है। इसलिए आसानी से पचने वाला और हल्के भोजन का सेवन करना चाहिए।

गर्भावस्था में जरूरी होने पर लें दवाएं

अगर आप गर्भवती हैं और आपको एंटीबायोटिक दवाएं लेने के लिए कहा गया है, तो इस बात का ध्यान रखें कि डॉक्टर आपकी गर्भावस्था के बारे में जानता हो। कुछ एंटीबायोटिक दवाओं का गर्भावस्था के दौरान इस्तेमाल नहीं कराना चाहिए, इसलिए आपके डॉक्टर को पता होना चाहिए, ताकि वे गर्भवती महिलाओं के लिए उपयुक्त दवाएं आपके लिए बताए।

कहीं आपको डिमेंशिया का शिकार तो नहीं बना रही दवाएं

हम अपने जीवन में कई तरह की दवाओं का रोज सेवन करते हैं, कभी डॉक्टर की सलाह से तो कभी अपनी मर्जी से, लेकिन हम नहीं जानते इन्हीं में से कई दवाएं हमें डिमेंशिया का शिकार बना सकती हैं। डिमेंशिया एक मानसिक रोग है और इसके कई प्रकार हैं, जिनमें से अल्जाइमर प्रमुख है। इस रोग में मनुष्य की मानसिक समझ धीरे-धीरे क्षीण होने लगती है और भूलने की बीमारी से लेकर अन्य कई मानसिक बीमारियां उसे घेरने लगती हैं। आलेख में हम जानेंगे कि कैसी दवाएं हमें डिमेंशिया की ओर ले जाती हैं-

एलर्जी की दवा संभलकर लें: बहुत से लोगों को विभिन्न तरह की एलर्जियां होती हैं और उसके लिए वह डॉक्टर की सलाह पर कई तरह की दवाओं का सेवन करते हैं, लेकिन आपको अपने डॉक्टर से इस बारे में बातचीत करनी चाहिए कि उस दवा में एंटीहिस्टामाइन तत्व की मात्रा अनियंत्रित तो नहीं है, जो कि आमतौर पर इस तरह की दवाओं का सामान्य अंग होता है। यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन, सियाटेल के एक शोध में यह पाया गया कि इस तरह की दवाओं का तीन वर्ष से लगातार सेवन कर रहे लोगों में डिमेंशिया होने की संभावना सामान्य लोगों की तुलना में 10 प्रतिशत अधिक होती है।

नींद की गोली से करें तौबा: जब कभी आप लंबी उड़ान तय करके एक देश से दूसरे देश की यात्रा करते हैं तो नींद में खलल पड़ जाता है, ऐसे समय में डॉक्टर से पूछताछ करके कभी-कभी नींद की गोली लेना कोई ज्यादा नुकसानदायक नहीं है, लेकिन अगर यह आपकी रोज की आदत में शुमार है तो आपको सचेत होने की जरूरत है, क्योंकि न्यूयॉर्क के माउंट सिनाई स्कूल ऑफ मेडिसिन के एक शोध में यह पाया गया कि 65 की उम्र पार कर चुके 10 प्रतिशत लोग ऐसे जिन्हें लगता है कि वे डिमेंशिया के शिकार हैं, वास्तव में वह नींद की गोलियों के साइड इफैक्ट से जूझ रहे होते हैं। इसलिए बेहतर यह होगा कि आप अभी से अपनी दिनचर्या सुधारें और नींद के लिए योग पर निर्भर रहें। योग इस काम में बेहतर विकल्प हो सकता है।

क्या कहते हैं शोध: माउंट सिनाई स्कूल ऑफ मेडिसिन के शोध में ही यह पाया गया कि नींद की गोलियां हमारे शरीर और मस्तिष्क को निष्क्रिय बनाती हैं और लोगों की इसकी लत



लग जाती है। वह इसे विटामिन की गोलियों की तरह लेना शुरू कर देते हैं, जिससे दीर्घावधि में बहुत नुकसान होता है। इनमें पाए जाने वाले जोल्पिडम, डायजेपम, क्लोनाजेपम, एल्पराजोलम और लोराजेपम जैसे सॉल्ट नींद को बढ़ावा देते हैं, लेकिन हमें डिमेंशिया की ओर ले जाते हैं।

एंटीकॉलिनर्जिक दवाओं का संभलकर करें प्रयोग: एंटीकॉलिनर्जिक एक ऐसा अवयव है, जो यूरिन, अस्थमा और डिप्रेशन से जुड़ी कई आम दवाओं में पाया जाता है। यह आपके नर्वस सिस्टम में बहने वाले एक द्रव एसेटाइलकोलीन के प्रवाह को अवरूद्ध करता है और इससे आपके सोचने की शक्ति पर व्यापक असर पड़ता है। इंडियाना यूनिवर्सिटी के एक शोध में पाया गया कि ऐसी दवाओं का ज्यादा सेवन करने वाले लोगों का मस्तिष्क सिकुड़कर छोटा होता जाता है और जब ऐसे लोगों से सोचने संबंधी काम करने को कहा जाता है तो उनकी क्षमता उनसे कम होती है जो इस दवा का प्रयोग नहीं करते हैं। हालांकि इस बात पर शोधार्थी सहमत नहीं है कि यह डिमेंशिया के लिए पूरी तरह जिम्मेदार है, लेकिन उसके बहुत से कारणों में से एक अवश्य है। इसलिए बेहतर है कि डॉक्टर की सलाह से ऐसी दवाओं का सीमित इस्तेमाल किया जाए।

केवल बुढापा ही नहीं है एल्जाइमर का कारण

छोटी-छोटी बातों को भूल जाने की आदत को अक्सर हम लापरवाही समझ लेते हैं। पर ये लापरवाही नहीं डिमेंशिया या अल्जाइमर के खतरे का संकेत भी हो सकता है। इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि ये बीमारी अब सिर्फ बुढ़ापे तक सीमित नहीं रह गई है। कम उम्र के लोग भी इसका शिकार बन रहे हैं। ये एक गलत धारणा है कि डिमेंशिया या अल्जाइमर जैसी बीमारी सिर्फ बुढ़ापे में हो सकती है। जबकि शोध बताते हैं कि आजकल 30 से 40 की उम्र के लोगों में भी इस बीमारी के लक्षण आसानी से देखे जा सकते हैं। छोटी-छोटी बातों को भूलने की आदत कब हमारे पहचानने, सोचने और समझने की शक्ति को छीन लेती है और उम्र बढ़ने के साथ-साथ लोगों को एल्जाइमर और डिमेन्शिया जैसी बीमारी का शिकार बना देती है, पता ही नहीं चल पाता। इसलिए कम उम्र मे भी अगर आपको ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हो तो डॉक्टर्स से जरूर मिले।

कम उम्र में अल्जाइमर

मस्तिष्क परिवर्तनशील है, जिसमें उम्र के साथ बदलाव होता रहता है। कम उम्र से ही स्वस्थ जीवनशैली संबंधी आदतों से दिमाग पर बुरे असर को कम किया जा सकता है। जैसे-जैसे पेट का आकार बढ़ता है, दिमाग सिकुड़ने लगता है। ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार 30 वर्ष की आयु में मोटापे के शिकार लोगों में डिमेंशिया होने की आशंका तीन गुणा बढ़ जाती है। डिमेंशिया चालीस-पचास या उससे भी कम उम्र में हो सकता है। नामों को याद न रख पाना, भ्रम होना, व्यवहार परिवर्तन, मूड में तेजी से उतार-चढ़ाव, सामान्य संख्याओं को याद करने एवं लिखने में परेशानी होना, दिमाग पर संतुलन न रहना एवं सामान्य से अलग ढंग से पेश आना जैसे लक्षण देखने को मिलते हैं।

क्या होते हैं इसके कारण

डब्ल्यूएचओ के अनुसार धूम्रपान करने वालों में डिमेंशिया का खतरा 45प्रतिशत अधिक होता है। दुनियाभर में अल्जाइमर के 14 प्रतिशत मामलों में धूम्रपान प्रमुख कारण के रूप में पाया गया है। विशेषज्ञों के अनुसार धूम्रपान कई तरह से नुकसान पहुंचाता है। इससे दिमाग की रक्त धमनियां संकरी हो जाती हैं और मस्तिष्क तक पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं पहुंच पाती। डिमेंशिया से पीड़ित लोगों को डिमेंशिया का खतरा अधिक होता है। डिप्रेशन एवं अधिक तनाव की स्थिति में शुरुआत से ही उपचार पर ध्यान देना अल्जाइमर को रोकता है। किसी एक अकेले कारण को एल्जाइमर रोग के लिए कारण के रूप में बतलाया नहीं गया है। यह संभव है कि आयु, आनुवांशिक विरासत और परिस्थितियों को शामिल कर संसर्ग कारक इसके लिए जिम्मेवार हैं। नाड़ी संबंधी डिमेंशिया दिमाग के लिए आपूर्ति करने वाली रक्त नसों को क्षति पहुंचने से होता है। कम उम्र से इन समस्याओं से पीड़ित रहना मस्तिष्कीय प्रक्रिया को भी नुकसान पहुंचाता है। एक सीमा से अधिक ग्लूकोज स्तर का बढ़ना चीजों को याद रखने, निर्णय लेने और दिमाग के संकेतों को ग्रहण करने की क्षमता में बाधा पहुंचाता है।



ब्लडप्रेशर की दवा का भी रखें ध्यान

एंटीकॉलिनर्जिक का इस्तेमाल उच्च रक्तचाप, अनियमित धड़कन, माइग्रेन और ग्लूकोमा की दवाओं में भी होता है। इसके अलावा लंबी फेफड़ों संबंधी बीमारी, कोलेस्ट्रॉल स्तर कम रखने वाली और कुछ पेट संबंधी बीमारियों के इलाज में दी जाने वाली दवाओं में भी इस तत्व का प्रयोग होता है। कई अध्ययनों में देखा गया है कि इन दवाओं का अत्यधिक सेवन करने वाले लोगों मे डिमेंशिया के लक्षण देखे गए और जब उन्होंने इन दवाओं का सेवन बंद किया तो उनकी हालत में सुधार हुआ। इन सब समस्याओं से बचने का सबसे बेहतरीन तरीका है कि दवाओं का सेवन संयमित मात्रा में और हमेशा डॉक्टर की सलाह से करें। नियमित और संतुलित जीवन शैली अपनाएं और मानसिक व्यायाम करें, जिसके लिए योग का सहारा लिया जा सकता है।

रेसिपी

मशरूम-चेस्टनट स्टफिंग



सामग्री

- मशहरूम: 30 ग्राम
- ताजा ब्रेड का चूरा: 175 ग्राम
- मक्खन (पिघला हुआ): 50 ग्राम
- शाहबलूत (कटे हुए और भुने हुए): 50 ग्राम
- नमक और काली मिर्च
- अजवायन की ताजा पत्तियां: दो बड़े चम्मच
- अखरोट (कटे और भुने हुए): 75 ग्राम

विधि

ओवन को 180-190 डिग्री फारनेहाइट पर प्री-हीट करें। एक बड़े बर्तन में 20 मिलीलीटर उबले पानी में मशरूम को 15 मिनट तक भिगोए रखें। अब करीब 45 मिली लीटर (तीन बड़े चम्मच) पानी मशरूम में रहने दें, बाकी को निकाल दें। अब मशरूम को काटकर बाकी बची हुई सामग्री इसमें डालें। हल्के हाथों से इस मिश्रण की छोटी-छोटी बॉल बनाएं और फॉइल लगी हुई बेकिंग ट्रे पर रखें। ओवनप्रूफ बर्तन की ग्रीसिंग करके उसके ऊपर इन बॉल्स को रखें और करीब 20 मिनट तक हल्का सुनहरा होने तक बेक करें। नॉनवेज डिश के साथ यह शुद्ध बेज साइड डिश अच्छा विकल्प है।

बूंदी लड्डू



सामग्री

- बेसन: 250 ग्राम, ■ सूजी: 50 ग्राम
- चीनी: 400 ग्राम ■ छोटी इलायची: 3-4
- बूंदी बनाने वाले सांचा या छन्नी/झारा
- पानी: 2 लीटर ■ तेल: तलने के लिए
- खाने वाला पीला, हरा, ऑरेंज कलर

विधि

एक बड़े बर्तन में बेसन और सूजी डालकर अच्छी तरह मिला लें। इसके बाद इसमें धीरे-धीरे पानी डालते हुए मिलाते जाएं। एक बार में ही पूरा पानी न डालें नहीं तो घोल पतला हो जाएगा। घोल ऐसा होना चाहिए कि ये छन्नी से आसानी से छन जाए। तैयार घोल को 15 मिनट के लिए रख देंगे। अब कड़ाही में तेल डालकर गरम कर लें। घोल को तीन अलग-अलग भागों में बांट लें। पहले घोल में दो चुटकी पीला कलर डालकर अच्छी तरह मिक्स कर लें। दूसरी कटोरी वाले घोल में एक चुटकी हरा कलर और तीसरी में ऑरेंज कलर डालेंगे। कड़ाही में तेल गर्म होने के बाद सबसे पहले पीली कलर की बूंदी छन्नी से छान लें। तेल में बूंदी को 1 मिनट से ज्यादा न पकाएं। बूंदी को पहले आटा चालने की चलनी में डालें, फिर टिश्यू पेपर पर निकाल लें, जिससे एक्सट्रा ऑयल निकल जाए। अब इसी तरीके से हरी और ऑरेंज कलर की बूंदी भी तल लें। अब एक पैन में चीनी और एक कप से थोड़ा ज्यादा कप पानी डालकर उसकी चाशनी तैयार कर लें। इसे 5 मिनट तक तेज आंच पर उबालें। इसमें थोड़ा-थोड़ा संतरा और पीला कलर मिलाकर आधा तार की चाशनी बना लें। जब चाशनी बन जाए तो इसमें पीली बूंदी डालकर अच्छी तरह मिक्स कर लें। तेज आंच में 30 सेकंड्स तक चलाते हुए मिलाएं फिर आंच बंद कर दें। इसके बाद इसमें ऑरेंज और हरे कलर वाली बूंदी डालकर मिक्स करके इसे ठंडा कर लें। 8-10 मिनट ठंडा होने के बाद इसके लड्डू बना लें।

लंबे समय तक बैठे रहने को लेकर वैज्ञानिकों का अध्ययन

दिनभर कुर्सी पर बैठे रहना दिल के लिए बन सकता है खतरा

- दिल की बीमारी का खतरा उम्र, वजन, ब्लड प्रेशर, धूम्रपान और खान-पान पर निर्भर
- बैठकर काम करने में बहुत कम कैलोरी खर्च करता है शरीर



नई दिल्ली, 27 अगस्त (एजेंसियां)। आज के समय में लंबे समय तक एक ही जगह बैठकर काम करने की आदत बनती जा रही है। काम शुरू करने के बाद कई लोग लगातार घंटों बीत जाने के बाद भी कुर्सी से उठते नहीं हैं। बीच में खाना, चाय और फोन जैसी चीजें भी अक्सर बैठे-बैठे ही हो जाती हैं। बाहर से देखने पर यह दिनचर्या आरामदायक लग सकती है, लेकिन शरीर के लिए लगातार कम एक्टिव रहना अच्छी बात नहीं है। कई वैज्ञानिक रिसर्च में लंबे समय तक बैठे रहने और दिल से जुड़ी बीमारियों के बीच संबंध पाया गया है।

जब हम लंबे समय तक बैठे रहते हैं, तो हमारा शरीर बहुत कम काम करता है। पैरों और शरीर की दूसरी मांसपेशियां भी ज्यादा नहीं चलतीं। ऐसे में शरीर जितनी ऊर्जा चलने-फिरने के दौरान खर्च करता है, उतनी बैठने पर नहीं करता। अगर यह आदत रोज बनी रहे तो वजन बढ़ सकता है, ब्लड प्रेशर बढ़ सकता है और ब्लड शुगर को संभालना भी मुश्किल हो सकता है। ये सभी चीजें लंबे समय में दिल की बीमारी का खतरा बढ़ा सकती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने भी लोगों को लंबे समय तक बैठे रहने का समय कम करने और दिन में ज्यादा एक्टिव रहने की सलाह दी है।

लंबे समय तक बैठे रहने और दिल की बीमारी के बीच संबंध को लेकर कई रिसर्च हुई हैं। 2024 में प्रकाशित एक रिसर्च में करीब 4.8 लाख लोगों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। इसमें पाया गया कि जो लोग काम के दौरान ज्यादातर समय बैठे रहते थे, उनमें दिल की बीमारी से मौत का खतरा उन लोगों की तुलना में ज्यादा था जो काम के दौरान कम बैठते थे। रिसर्च में यह भी सामने आया कि रोजाना थोड़ी ज्यादा शारीरिक गतिविधि करने से इस खतरे को कम करने में मदद मिल सकती है।

पाचन से लेकर इम्यूनिटी तक के लिए फायदेमंद है इमली

पक्षियों, गिलहरियों व अन्य छोटे वन्यजीवों को आश्रय प्रदान करते हैं घने वृक्ष



नई दिल्ली, 27 अगस्त (एजेंसियां)। रसोई में खट्टापन घोलने वाली इमली सिर्फ स्वाद नहीं बढ़ाती, बल्कि सेहत का खजाना भी है। टैमारिंडस इंडिका वैज्ञानिक नाम वाली इमली में विटामिन-सी, एंटीऑक्सीडेंट, फाइबर और आयरन भरपूर मात्रा में होते हैं। आयुर्वेद में इसे पाचन, कब्ज और पित्त दोष के लिए रामबाण माना गया है।

उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में शुष्क से लेकर आर्द्र जलवायु तक अच्छी तरह विकसित

नमामि गंगे ने एक्स पोस्ट माध्यम से बताया कि इमली की उत्पत्ति उष्णकटिबंधीय अफ्रीका मानी जाती है, लेकिन यह भारत में बड़े पैमाने पर उगाई जाती है। यह दक्षिण एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, अफ्रीका तथा अन्य उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में भी व्यापक रूप से वितरित है। भारत में यह मैदानी एवं पठारी क्षेत्रों में विशेष रूप से सामान्य है। इमली का जैव-भौगोलिक क्षेत्र दक्कन प्रायद्वीप, मध्य उच्चभूमि, गंगा का मैदानी क्षेत्र, पूर्वी एवं पश्चिमी घाट, अर्ध-शुष्क एवं शुष्क है। इसका वृक्ष बड़ा, दीर्घायु एवं सदाबहार से अर्ध-सदाबहार होता है। इमली उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में शुष्क से लेकर आर्द्र जलवायु तक अच्छी तरह विकसित होती है। यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, किंतु अच्छी जल निकासी वाली दोमट एवं बलुई-दोमट मिट्टी में सर्वोत्तम वृद्धि करती है। यह सूखा एवं उच्च तापमान सहन करने की क्षमता रखती है। इमली भारत में प्राचीन काल से प्राकृतिक रूप से है। इमली का फूल अप्रैल - जून के बीच आता है, जबकि फल दिसम्बर-अप्रैल के बीच में आता है। इमली के घने वृक्ष पक्षियों, गिलहरियों एवं अन्य छोटे वन्यजीवों को आश्रय प्रदान करते हैं, जबकि इसके फल अनेक जीवों के भोजन का स्रोत होते हैं। इसकी विस्तृत जड़ प्रणाली मिट्टी के कटाव को कम करने तथा कार्बन अवशोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह वृक्ष शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में उत्कृष्ट छायादार वृक्ष के रूप में भी महत्वपूर्ण है। इमली के गूदे का उपयोग भोजन, पेय पदार्थ, चटनी, अचार तथा विभिन्न व्यंजनों में खट्टे स्वाद के लिए किया जाता है। इसके फल विटामिन एवं खनिजों से भरपूर होते हैं। पत्तियों, छाल एवं फल का उपयोग आयुर्वेद एवं पारंपरिक चिकित्सा में पाचन, ज्वर तथा अन्य रोगों के उपचार में किया जाता है। इसकी कठोर एवं टिकाऊ लकड़ी का उपयोग कृषि उपकरण, फर्नीचर, हस्तशिल्प एवं ईंधन के रूप में किया जाता है।

कपूरथला के महाराजा ने अपनी 90 प्रतिशत शाही संपत्ति माई भागो गर्ल्स आर्म्ड फोर्सेज प्रिपरेटरी इंस्टीट्यूट के नाम की

कपूरथला 27 अगस्त (एजेंसियां)। कपूरथला के ब्रिगेडियर (सेवानिवृत्त) महाराजा सुखजीत सिंह, जिन्हें महा वीर चक्र से सम्मानित किया जा चुका है और जो सिंध हॉर्स के पूर्व अधिकारी रहे हैं, ने अपनी पंजीकृत वसीयत में माई भागो आर्म्ड फोर्सेज प्रिपरेटरी इंस्टीट्यूट फॉर गर्ल्ड को अपनी संपत्ति का मुख्य लाभार्थी बनाया है। 91 वर्षीय महाराजा ने अपनी कुल संपत्ति का 90 प्रतिशत हिस्सा इस संस्थान को दिए जाने का प्रावधान किया है। इसके अलावा उन्होंने दिल्ली के माता गुजरी मेडिकल सेंटर और अपनी रेजिमेंट सिंध हॉर्स के लिए भी अलग-अलग प्रावधान किए हैं। अपनी वसीयत पंजीकृत कराने के बाद योद्धा-महाराजा ने 29 जून 2026 को अपनी देखभालकर्ता मीरा बसंत कौर से विवाह कर लिया। वसीयत में उन्होंने यह भी प्रावधान किया है कि माई भागो इंस्टीट्यूट की कपूरथला एक्सटेंशन शाखा में प्रवेश केवल उन सिख



लड़कियों तक सीमित रहेगा, जिनके पास 10 वर्ष से अधिक पुराने आधार कार्ड हों और जिनमें तत्कालीन कपूरथला रियासत के 1,632 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में उनका भौगोलिक निवास दर्ज हो। यह शर्त इस बात से प्रभावित नहीं होगी कि जिला पुनर्गठन के बाद वह क्षेत्र वर्तमान में पंजाब के किस जिले में आता है। महाराजा सुखजीत सिंह ने नई दिल्ली के ग्रेटर कैलाश-1 स्थित बी-90ए में अपनी हिस्सेदारी को ग्रेटर कैलाश-1 के पहाड़ी वाला गुरुद्वारा स्थित माता गुजरी मेडिकल सेंटर को देने का निर्देश दिया है। उन्होंने दिल्ली सिख गुरुद्वारा कमेटी से यह सुनिश्चित करने को कहा है कि मेडिकल सेंटर को यह संपत्ति प्राप्त हो। महाराजा ने अपनी संपत्ति का अलग से 10 प्रतिशत हिस्सा अपनी रेजिमेंट 'सिंध हॉर्स' के लिए निर्धारित किया है। उनकी इच्छा है कि जहां तक संभव हो, इसका लाभ कपूरथला के लोगों के लिए किया जाए। इसके अलावा उन्होंने अपने पदक भी अपनी रेजिमेंट को देने का प्रावधान किया है।

महाराजा सुखजीत सिंह को 6 जून 1954 को भारतीय सेना में अधिकारी के रूप में कमीशन मिला था। 1955 में कपूरथला के महाराजा के रूप में मान्यता मिलने के बाद भी उन्होंने अपनी सैन्य सेवा जारी रखी। उन्होंने 1965 में पाकिस्तान के खिलाफ सियालकोट सेक्टर में युद्ध लड़ा।

जुबिन नौटियाल ने 'श्यामा आ बसो' में श्यामा के प्रति विरह और प्रेम को किया जीवंत

मुंबई, 27 अगस्त (एजेंसियां)। गायक जुबिन नौटियाल इस उत्सवी मौसम में अपने नए भक्ति गीत 'श्यामा आ बसो' के साथ भक्ति, प्रेम और विरह के भाव को आत्मीय अंदाज में पेश कर रहे हैं। टी-सीरीज द्वारा प्रस्तुत यह गीत कृष्ण के वृंदावन लौटने की शाश्वत प्रतीक्षा और भक्त के मन में उनके सान्निध्य की तड़प को दर्शाता है। 'श्यामा आ बसो' एक भक्त की उस अंतरंग पुकार को आवाज देता है, जिसमें वह अपने आराध्य से घर लौट आने की विनती करता है। जुबिन की भावपूर्ण आवाज इस प्रतीक्षा और प्रेम को बेहद व्यक्तिगत और हृदयस्पर्शी बना देती है। राज आशू के संगीत से सजे इस गीत के बोल मनोज मुंतशिर ने लिखे हैं। गीत में एक भक्त की मासूम पुकार और कृष्ण के लिए उसकी गहरी तड़प को सरल और भावुक शब्दों में व्यक्त किया गया है। जुबिन की गायकी गीत में भक्ति और मधुरता का खूबसूरत संगम प्रस्तुत करती है। 'श्यामा आ बसो' का म्यूजिक वीडियो हितेन शाह के निर्देशन में तैयार किया गया है। वीडियो में एक लड़की को श्यामा के विचारों में डूबा हुआ दिखाया गया है, जो उनके लौटने की प्रतीक्षा और शांत भक्ति के भाव को सामने लाती है। वहीं, जुबिन नौटियाल कृष्ण के स्वरूप और भाव को अपनी सहज उपस्थिति के साथ जीवंत करते नजर आते हैं।

उत्सवी माहौल में रिलीज हुआ यह गीत श्यामा और उनके भक्तों के बीच प्रेम, आस्था और भक्ति के उस अटूट रिश्ते को रेखांकित करता है, जो समय के साथ और गहरा होता जाता है।

एच1एन1 को लेकर घबराने की नहीं, सावधानी बरतने की जरूरत

- सार्वजनिक जगहों पर जाने से परहेज करें
- संक्रमित लोग ज्यादा पानी पीए, अपने आप को हाइड्रेट रखें



नई दिल्ली, 26 अगस्त (एजेंसियां)। दिल्ली में एच1एन1 वायरस के बढ़ते मामलों पर दिल्ली मेडिकल एसोसिएशन की अध्यक्ष डॉ. नीलम लेखी ने चिंता जताई। उन्होंने कहा कि दिल्ली मेडिकल एसोसिएशन राजधानी में मेडिकल प्रैक्टिशनर और एलोपैथिक मेडिकल प्रैक्टिशनर की सबसे बड़ी बॉडी है। आजकल इन्फ्लुएंजा (एच1एन1) वायरस जिस प्रकार से दिल्ली-एनसीआर में फैल रहा है और ज्यादा संख्या में लोग इससे ग्रसित हो रहे हैं, इसके लिए हम लोगों के स्वास्थ्य के प्रति चिंतित हैं। एच1एन1 वायरस जिस प्रकार से फैल रहा है, इसके लिए हमने एक मैसेज जारी किया है, ताकि लोगों में इसके प्रति जागरूकता बढ़े और इसी के साथ इसकी रोकथाम की जा सके। एडवाइजरी के तौर पर उन्होंने बताया कि यह फ्यू सांस के माध्यम से एक-दूसरे में फैल रहा है। ऐसे में अगर आप किसी सार्वजनिक जगह पर जा रहे हैं तो मास्क जरूर लगाएं। समय-समय पर हाथों को साफ करते रहें। छींकते या खांसते समय रुमाल या टिश्यू पेपर का इस्तेमाल करें और समय-दर-समय उसे बदलते रहें। जब तक स्थिति सामान्य नहीं हो जाती, उन्होंने लोगों को सार्वजनिक जगहों पर जाने से परहेज करने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि जब बहुत जरूरी हो तभी भीड़भाड़ वाले इलाकों में जाएं।

इसी के साथ उन्होंने खासतौर पर ऐसे लोगों को मास्क लगाने के साथ हाइजीन का ध्यान रखने की सलाह दी है, जिनका काम लोगों के इर्द-गिर्द होता है। वहीं, जिन लोगों को थोड़ा सा भी अपने अंदर एच1एन1 का लक्षण नजर आ रहा है, उन्होंने उन्हें डॉक्टर से जांच कराने की सलाह दी है। ऐसे लोगों को डॉक्टर ने ज्यादा से ज्यादा पानी पीने, अपने आप को हाइड्रेट रखने, पूरी नींद लेने, घर का खाना खाने और रेस्पिरेटरी हाइजीन का खास ध्यान रखने को कहा है।

27 वर्षीय युवक ने मौत को दी मात, कैलाश अस्पताल में बची जान



नोएडा 27 अगस्त (देशबन्धु)। नोएडा के कैलाश हॉस्पिटल एंड न्यूरो इंस्टीट्यूट के डॉक्टरों ने दिल्ली के एक 27 साल के व्यक्ति को एक भयानक सड़क दुर्घटना के बाद ठीक होने में मदद की। इस दुर्घटना में उसे दिमाग में गंभीर चोट लगी थी और उसके चेहरे, छाती, फेफड़ों और बाएं हाथ पर भी गंभीर चोटें आई थीं। जब उसे हॉस्पिटल लाया गया, तो वह बेहोश था और उसे सांस लेने में बहुत दिक्कत हो रही थी। उसे तुरंत इंट्यूबेशन, मैकेनिकल वेंटिलेशन और ICU में देखभाल दी गई। कई तरह के इलाज और कई जटिल प्रक्रियाओं के बाद आखिरकार उसे स्थिर हालत में हॉस्पिटल से डिस्चार्ज किया गया। कैलाश हॉस्पिटल एंड न्यूरो इंस्टीट्यूट की न्यूरोसाइंस टीम ने दूसरे स्पेशलिस्ट विभागों की मदद से इस मामले में मरीज का इलाज किया।

कैलाश हेल्थकेयर के न्यूरोसाइंसेज के डॉयरेक्टर डॉ श्रीकांत शर्मा ने कहा, 'नीरज हमारे पास सिर में गंभीर चोट और बहुत कम होश की हालत में आए थे, साथ ही उनके शरीर के कई अन्य हिस्सों में भी चोटें थीं। हमारी पहली प्राथमिकता उन्हें स्थिर करना और उनके दिमाग की स्थिति पर बारीकी से नज़र रखना थी। हमने नियमित रूप से उनके न्यूरोलॉजिकल स्वास्थ्य की जाँच की और फ़ॉलो-अप स्कैन किए। इसके साथ ही उनकी अन्य चोटों का भी इलाज किया। फ़ॉलो-अप स्कैन में दिखा सुधार उत्साहजनक था। उनके ठीक होने में अलग-अलग मेडिकल टीमों के आपसी सहयोग और तालमेल ने अहम भूमिका निभाई।

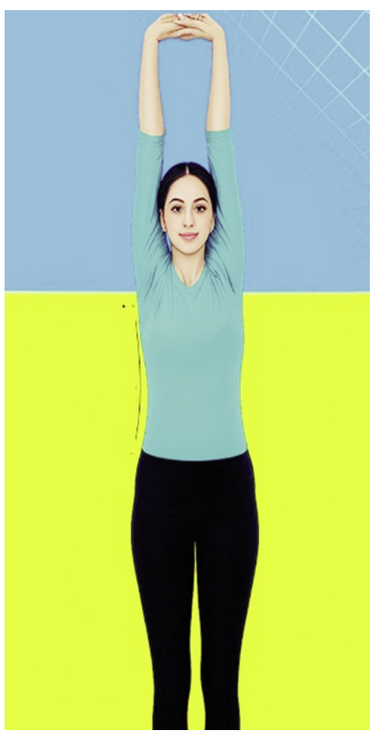
स्पाइन को सीधा रखने में मदद करता है ताड़ासन

नई दिल्ली, 27 अगस्त (एजेंसियां)। भारतीय योग संस्कृति में ताड़ासन को सभी आसनों का आधार माना जाता है। इस आसन में शरीर को ताड़ के वृक्ष की तरह सीधा और संतुलित रखा जाता है। नियमित अभ्यास से शरीर में स्फूर्ति आती है और सही ढंग से खड़े होने की आदत विकसित होती है।

ताड़ासन का अर्थ पेड़ से है और आसन का अर्थ योग से होता है। यानी कि शरीर को ताड़ के पेड़ की तरह लम्बा बनाने में मदद करता है। वैसे संस्कृत में ताड़ को पर्वत का पर्यायवाची भी कहा जाता है,जो लम्बाई का प्रतिक होता है।

पोस्चर सुधारने के साथ बढ़ता है आत्मविश्वास

भारत सरकार के आयुष मंत्रालय ने इस आसन को लेकर अपनी राय दी है। उनका कहना है कि ताड़ासन को नियमित रूप से अपने जीवनशैली में अपनाना चाहिए। उनके अनुसार, ताड़ासन एक आसान योगासन है जिसे खड़े होकर किया जाता है। इसे करने से शरीर में स्थिरता आती है और बैलेंस बेहतर होता है। योग एक्सपर्ट का मानना है कि ताड़ासन के नियमित अभ्यास से शरीर के पोस्चर में सुधार, स्थिरता बनाना और



स्पाइनल अलाइनमेंट को सपोर्ट करना एक आसान स्टैंडिंग पोज से शुरू किया जा सकता है। यह रीढ़ की हड्डी को मजबूत और सीधा रखता है, कंधों और गर्दन की जकड़न कम करता है, शरीर के संतुलन और स्थिरता को बढ़ाता है। आत्मविश्वास बढ़ाता है और मन को एकाग्र करता है और पूरे शरीर में ऊर्जा का संचार करता है।

ताड़ासन को रोजाना आसानी से किया जा सकता है, जिसके लिए साधक सबसे पहले सीधे खड़े हो जाएं। इसके बाद दोनों पैरों को जोड़कर रखें और वजन समान रूप से दोनों पैरों पर बांटें। फिर घुटनों को सीधा रखते हुए जांघों को थोड़ा अंदर की ओर खींचते हुए पेट को हल्का अंदर की ओर रखें और छाती को आगे की ओर करें और कंधों को पीछे व नीचे की ओर रखें ताकि रीढ़ सीधी रहे। इस दौरान गर्दन सीधी रखें और आंखों को आगे किसी बिंदु पर केंद्रित करें व हाथों को शरीर के दोनों ओर सीधा रखें या फिर दोनों हाथों की हथेलियों को जोड़कर नमस्कार मुद्रा में छाती के सामने रखें। अभ्यास के दौरान गहरी सांस लेते और छोड़ते रहें। इस मुद्रा में 30 से 60 सेकंड तक रहें। लो बीपी या चक्कर आने की समस्या वाले लोगों को पंजों पर संतुलन बनाते समय सतर्क रहना चाहिए। गर्भवती महिलाओं को यह आसन किसी योग प्रशिक्षक की देखरेख में करना चाहिए।

रक्षाबंधन स्पेशल : पुराने से नए दौर तक

भाई-बहन के रिश्ते पर बने थे सबसे खास गाने

मुंबई, 27 अगस्त (एजेंसियां)। रक्षाबंधन आते ही घरों में एक अलग तरह की रौनक देखने को मिलती है। बाजारों में रंग-बिरंगी राखियां सज जाती हैं और मिठाइयों की खुशबू आने लगती है। इस त्योहार की खुशी सिर्फ राखी बांधने और



मिठाई खिलाने तक सीमित नहीं है। कुछ चीजें ऐसी हैं, जो हर साल इस दिन की यादों को और खास बना देती हैं। इनमें बॉलीवुड के वो गाने भी शामिल हैं, जो भाई-बहन के रिश्ते को कभी प्यार, कभी भावुकता और कभी मस्ती के साथ सामने लाते हैं। यही वजह है कि रक्षाबंधन के मौके पर इन गानों के बिना त्योहार की रौनक कुछ अधूरी सी लगती है।

भैया मेरे राखी के बंधन को निभाना : साल 1959 में आई फिल्म 'छोटी बहन' का यह गाना आज भी रक्षाबंधन की पहचान बना हुआ है। लता मंगेशकर की आवाज में इस गीत में एक बहन अपने भाई से रिश्ते को निभाने की बात कहती है। इसके भाव सीधे दिल तक पहुंचते हैं। यही कारण है कि 67 साल से ज्यादा समय बीत जाने के बाद भी जब राखी का त्योहार आता है, तो यह गाना कई घरों में जरूर सुनाई देता है। इस गाने में शंकर-जयकिशन की धुन और शैलेंद्र के लिखे बोल हैं। फिल्म 'छोटी बहन' में बलराज साहनी, नंदा और रहमान जैसे कलाकार नजर आए थे।

फूलों का तारों का : साल 1971 की फिल्म 'हरे रामा हरे कृष्णा' का यह गीत भाई-बहन के प्यार को बेहद प्यारे अंदाज में दिखाता है। किशोर कुमार की आवाज में गाया गया यह गीत भाई की अपनी बहन के लिए भावनाओं को दिखाता है। गाने में भाई-बहन के बीच के रिश्ते की झलक मिलती है, इसमें बचपन की शरारत के साथ-साथ एक-दूसरे के लिए गहरा प्यार भी होता है। यह गाना राखी के दिन ही नहीं, बल्कि दूसरे खास मौकों पर भी याद किया जाता है।

बहना ने भाई की कलाई से : साल 1974 में आई फिल्म 'रेशम की डोरी' का यह गीत सुमन कल्याणपुर की आवाज में है। धर्मेंद्र और सायरा बानो पर फिल्माया गया यह गीत राखी के त्योहार से जुड़ी बहन की भावनाओं को जाहिर करता है। इसमें बहन अपने भाई की लंबी उम्र और खुशियों की कामना करती नजर आती है। गीत की सादगी ही इसकी सबसे बड़ी ताकत है।

धागों से बांधा : अक्षय कुमार की फिल्म 'रक्षा बंधन' का यह गाना भाई-बहन के रिश्ते को नए अंदाज में पेश करता है। अरिजीत सिंह और श्रेया घोषाल की आवाज में यह गाना भाई-बहन के साथ बड़े होने, बचपन की यादों और एक-दूसरे के लिए किए गए छोटे-बड़े त्याग की बात करता है। इसकी धुन और भाव आज की पीढ़ी को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं।

तैनू संग रखना : फिल्म 'जिगरा' का यह गाना भाई-बहन के रिश्ते की गहराई को दिखाता है। अरिजीत सिंह की आवाज इस गाने के भाव को शानदार बनाती है। फिल्म की कहानी में भाई और बहन का रिश्ता ही सबसे अहम है, इसलिए यह गीत रक्षाबंधन के मौके पर आज की पीढ़ी को आसानी से जोड़ता है।

एक फिल्म में रोमांस, दूसरी में बने भाई-बहन

बॉलीवुड फिल्मों में एक्टर और एक्ट्रेस को अलग-अलग तरह के रिश्तों में देखना कोई नई बात नहीं है। कभी दो कलाकार पर्दे पर एक-दूसरे के प्यार में डूबे नजर आते हैं, तो किसी दूसरी फिल्म



में वही कलाकार भाई-बहन बन जाते हैं। फिल्मों की कहानी और किरदार बदलते रहते हैं, लेकिन ये अक्सर दर्शकों को चौंका देते है। रक्षाबंधन के मौके पर जब भाई-बहन के रिश्ते की बात होती है।

स्पेस मिशन में देश व दुनियाभर की छात्राओं के भागीदारी की पहल

■ विशालधर दुबे

ग्रेटर नोएडा, 27 अगस्त (देशबन्धु)। शक्तिसेट मिशन प्रत्येक देश की 108 प्रतिभाशाली छात्राओं को एक सुनहरा अवसर प्रदान करने और उनके जुनून को जागृत करने के लिए प्रतिबद्ध है। गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय में 23 अगस्त को कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ था जो (एजेंसी) चलेगा। स्पेस किड्ज इंडिया की साआआ डा. श्रामाथी केसन ने बताया कि अंतरिक्ष क्षेत्र में मात्र 20 प्रतिश नौकरियां महिलाओं के पास हैं। लड़कियों को शामिल करना केवल एक अंतर को कम करना नहीं है, बल्कि यह छिपी प्रतिभाओं के एक नए ब्रह्मांड को खोलना है। हर लड़की सितारों तक पहुंचने की हकदार है। आइए रूढ़ियों को तोड़ें और अग्रणी अंतरिक्ष यात्रियों की अगली पीढ़ी को प्रेरित करें। अंतरिक्ष कार्यक्रमों में शामिल लड़कियां आत्मविश्वास से भरी नेतृतव में परिवर्तित होती हैं जो विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) के भविष्य को आकार देती हैं। पारंपरिक रूप से पुरुष-प्रधान क्षेत्रों में लड़कियों को उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना केवल करियर के बारे में नहीं है, बल्कि यह रूढ़ियों को तोड़ने और असंभव को हासिल करने के बारे में है। उन्होंने कहा कि आज 108 देश एक साथ मिलकर



- दुनिया के कई देश हैं जहां के बच्चे स्पेश मिशन कार्यक्रम से हैं दूर
- भारत की डॉ. श्रीमाथी केसन, स्पेस किड्ज इंडिया ने दुनियाभर के बच्चों को एक मंच पर किया एकत्रित

काम कर रहे हैं, यह सिर्फ विविधता नहीं है, यह पृथ्वी के हर कोने से आए प्रतिभाशाली दिमागों का एक अद्भुत संगम है। जो सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामय का संदेश देता है। उन्होंने बताया कि मिशन शक्तिसैट का उद्देश्य दुनिया की प्रतिभाशाली छात्राओं को अंतरिक्ष विज्ञान और तकनीक से जोड़ना है। छात्राओं को उपग्रह निर्माण, पेलोड विकास, इलेक्ट्रॉनिक्स, सिस्टम इंजीनियरिंग और स्टेम शिक्षा का प्रशिक्षण दिया जाएगा। छात्राएं उपग्रह की डिजाइन से लेकर विकास, परीक्षण और अंतरिक्ष में तैनाती तक की प्रक्रिया को समझेंगी। मिशन के तहत शक्तिसैट-लियो और शक्तिसैट-मून सहित छात्र-निर्मित उपग्रह विकसित करने की योजना है। उन्होंने बताया कि अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस पर सैटेलाइट लॉन्च होगी। उन्होंने कहा कि देश की हर लड़की अब आगे बढ़ने को तैयार है।

मिशन शक्तिसेट अभियान एक नजर में

- 16 जनवरी, 2025 को वैश्विक राजदूत और सलाहकारों की बैठक
- 18 अप्रैल, 2025 पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन
- 23 अगस्त- से 2 सितम्बर को प्रशिक्षण और पेलोड निर्माण के लिए भारत आने वाले राजदूत और छात्र,
- सितम्बर 2026 को पेलोड और ग्राउंड स्टेशन सेटअप का परीक्षण
- अक्टूबर 2026 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (आईएसआरओ) द्वारा दी गई तिथि के अनुसार निम्न पृथ्वी कक्षा में होगा प्रक्षेपण
- 2027-चंद्रमा पर अंतरिक्ष यान के प्रक्षेपण की योजना।

मिशन शक्तिसैट में लगे थर्मल कैमरे से रखी जाएगी नजर, जापान से होगा लांच

मिशन शक्तिसैट कार्यक्रम के तहत भारत समेत 108 देशों की छात्राएं इसरो के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में दो सैटेलाइट तैयार किया जा रहा है। इनमें शक्तिसैट-लोअर अर्थ ऑर्बिट (लियो) सैटेलाइट भी शामिल है, जिसे जापान से लॉन्च किया जाएगा। इस मिशन में ऑस्ट्रेलिया की छात्राओं ने 'माल्य' नाम का विशेष पेलोड तैयार किया है, जिसमें थर्मल कैमरा लगाया गया है। यह कैमरा अंतरिक्ष से पृथ्वी के अलग-अलग हिस्सों में तापमान और मौसम में होने वाले अचानक बदलावों की निगरानी करेगा। इसके जरिए अत्यधिक गर्म या ठंडे क्षेत्रों की पहचान कर संभावित समस्याओं के समाधान में मदद मिल सकेगी। कैमरे से प्राप्त आंकड़े भविष्य में पर्यावरण और आपदा प्रबंधन के लिए भी उपयोगी हो सकते हैं। छात्राओं कटरीना और सना साइट के अनुसार, माल्य पेलोड में अत्याधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। इससे जंगलों में आग की पहचान, तापमान में बदलाव और पर्यावरणीय परिस्थितियों की निगरानी संभव होगी। इसके अलावा पेड़ लगाने के लिए उपयुक्त क्षेत्रों और निर्माण गतिविधियों के लिए अनुकूल स्थानों की पहचान में भी डेटा मददगार हो सकता है। 'माल्य' नाम ऑस्ट्रेलिया के डायमंड पायथन से प्रेरित है, जो गर्मी महसूस कर अंधेरे में शिकार तलाशता है। इसी तरह यह कैमरा अंतरिक्ष से पृथ्वी की गर्मी को पहचानकर जानकारी जुटाएगा।

सर्वाधिक घटने वाले शेयर

एचडीएफसी बैंक	2.08 प्रतिशत
एनटीपीसी	2.03 प्रतिशत
महिंद्रा एंड महिंद्रा	1.77 प्रतिशत
भारती एयरटेल	1.42 प्रतिशत
एचसीएल टेक्नो	1.37 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	1,46,010
बिटुर	88,730
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	39,795
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	2,76,900
वायदा	70,857
चांदी सिक्का लिवाली	900
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	96.98	93.91
पौंड स्टर्लिंग	132.57	127.89
यूरो	113.47	109.28
चीन युआन	15.12	13.39

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2400-3000
गेहूं दडा	2862.70
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

शुगर

चीनी एस	6,036
चीनी एम	4500-4600
मिल डिलीवरी	3620-3720
गुड़	6006.84

दाल-दलहन

चना	5700-5800
दाल चना	7937.36
मसूर काली	8199.88
उड़द दाल	11241.40
मूंग दाल	10204.66
अरहर दाल	11378.80

कनाडाई कंपनियों के अधिकारियों से मिलीं सीतारमण

टोरंटो, 27 अगस्त (एजेंसियां)। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कनाडा यात्रा के दूसरे दिन बुधवार को टोरंटो में एक बिजनेस सम्मेलन में भाग लिया और वहां की विभिन्न कंपनियों के शीर्ष अधिकारियों से द्विपक्षीय मुलाकात की।

वित्त मंत्रालय ने गुरुवार को बताया कि वित्त मंत्री ने कनाडा की प्रमुख कंपनियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों (सीईओ), अध्यक्षों और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आयोजित एक उच्च स्तरीय बिजनेस राउंडटेबल में भाग लिया। इस राउंडटेबल का आयोजन कनाड-इंडिया बिजनेस काउंसिल और भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। इसमें हरित प्रौद्योगिकी, महत्वपूर्ण खनिज, दुर्लभ मृदा तत्व, ऊर्जा भंडारण, टिकाऊ बुनियादी ढांचा, कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, ऑटोमोटिव, कपड़ा, ग्रीन स्टील, एयरोस्पेस, अंतरिक्ष, साइबर सुरक्षा, जैव प्रौद्योगिकी, एआई, परिसंपत्ति प्रबंधन, उच्च शिक्षा और कौशल विकास जैसे क्षेत्रों के प्रमुख कारोबारी नेता शामिल हुए।

इसके अलावा, श्रीमती सीतारमण ने कई कंपनियों के शीर्ष अधिकारियों तथा वित्तीय संस्थानों के साथ द्विपक्षीय बैठकें भी कीं। उन्होंने ओटैरियो टीचर्स पेंशन प्लान



■ बैठक में ओटीपीपी के बुनियादी ढांचा निवेश को बढ़ाने के अवसरों पर हुई चर्चा

(ओटीपीपी) के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी जो टेलर से मुलाकात की और उसके दीर्घकालिक विश्वास और भारत के राष्ट्रीय निवेश एवं अवसंरचना कोष (एनआईआईएफ) के साथ उसकी साझेदारी की सराहना की। बैठक में साझेदारी और सह-निवेश के माध्यम से ओटीपीपी के बुनियादी ढांचा निवेश को बढ़ाने के अवसरों पर चर्चा हुई। वित्त मंत्री ने गिफ्ट-आईएफएससी को वैश्विक निवेशकों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में रेखांकित किया और ओटीपीपी को भारत के साथ अपने जुड़ाव को और मजबूत करने तथा भारत में बड़े निवेश के अवसर तलाशने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने निवेश बैंकिंग एवं वित्तीय सेवा कंपनी कैनअकॉर्ड जेनुइटी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डैन डैविएू और उपाध्यक्ष रॉड फिलिप्स से भी मुलाकात की। बैठक में भारत के साथ कैनअकॉर्ड जेनुइटी की भागीदारी को और गहरा करने के अवसरों पर विचार किया गया। इसमें भारतीय कंपनियों को वैश्विक पूंजी जुटाने, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तार करने तथा विदेशों में प्रौद्योगिकी तथा व्यवसायों के अधिग्रहण में सहायता करने पर चर्चा हुई।

भारत-जापान आर्थिक सहयोग को मिली नई गति

नई दिल्ली। सरकार ने गुरुवार को कहा कि केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल के जापान दौरे ने भारत और जापान के बीच विशेष रणनीतिक एवं वैश्विक साझेदारी को नई मजबूती प्रदान की है। इस यात्रा ने व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी और औद्योगिक सहयोग को गहरा करने के प्रयासों को नया प्रोत्साहन दिया है। साथ ही भारत को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी विनिर्माण, प्रौद्योगिकी और निवेश केंद्र बनाने की दिशा में जापानी कंपनियों की भागीदारी बढ़ाने की मजबूत नींव भी रखी है। एक आधिकारिक बयान में कहा गया कि टोक्यो, नागोया और ओसाका में आयोजित उच्चस्तरीय बैठकों और कार्यक्रमों के साथ संपन्न हुई इस आधिकारिक यात्रा का मुख्य उद्देश्य जापानी निवेश को बढ़ावा देना, औद्योगिक साझेदारियों को मजबूत करना और उभरते तथा रणनीतिक क्षेत्रों में द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग का विस्तार करना था। दौरे के दौरान पीयूष गोयल ने जापान सरकार के वरिष्ठ नेताओं, प्रमुख वित्तीय संस्थानों और उद्योग जगत के प्रतिनिधियों से व्यापक चर्चा की। उन्होंने भारत में निवेश की संभावनाएं तलाश रही या पहले से कारोबार कर रही 30 से अधिक प्रमुख जापानी कंपनियों और वित्तीय संस्थानों के शीर्ष अधिकारियों से मुलाकात की। इन चर्चाओं में निवेश विस्तार, मजबूत और लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं का निर्माण, तकनीकी सहयोग और दोनों देशों के उद्योगों के बीच नए व्यावसायिक अवसरों पर विशेष जोर दिया गया।



■ अधिक निवेश व मजबूत औद्योगिक साझेदारियों का किया आह्वान

देश में प्याज उत्पादन व उपलब्धता की कोई कमी नहीं : निधि खरे

नई दिल्ली, 27 अगस्त (एजेंसियां)। बढ़ती प्याज कीमतों के बीच केंद्र सरकार ने उपभोक्ताओं को राहत देने के लिए मूल्य स्थिरीकरण भंडार से प्याज की खुदरा बिक्री शुरू कर दी है। उपभोक्ता मामलों की सचिव निधि खरे ने गुरुवार को कृषि भवन से प्याज वितरण अभियान को हरी झंडी दिखाकर इसकी शुरुआत की। सरकार की ओर से प्याज को शुरुआती तौर पर 35 रुपए प्रति किलोग्राम की दर से एनसीसीएफ, नाफेड (एनएएफईडी), केंद्रीय भंडार के आउटलेट्स और मोबाइल वैनों के माध्यम से बेचा जाएगा।

इस मौके पर उपभोक्ता मामलों की सचिव निधि खरे ने कहा कि हर साल सरकार यह सुनिश्चित करने का प्रयास करती है कि यदि प्याज की कीमतों में बढ़ोतरी होती है, तो खुदरा हस्तक्षेप के जरिए उपभोक्ताओं को रियायती दरों पर प्याज उपलब्ध कराया जाए।



■ 35 रुपए किलो में खुदरा बिक्री शुरू

उन्होंने कहा कि देश में न तो प्याज उत्पादन की कोई कमी है और न ही उपलब्धता की। उन्होंने बताया कि इस वर्ष निर्यात का स्तर भी पिछले वर्ष के लगभग समान है। उन्होंने कहा कि बाजार में कीमतों को नियंत्रित रखने और उपभोक्ताओं को राहत देने के लिए सरकार समय-समय पर हस्तक्षेप करती रहती है। इस बीच, नाफेड यानी नेशनल एग्रीकल्चरल कोऑपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के प्रबंध निदेशक दीपक अग्रवाल ने न्यूज एजेंसी आईएएनएस से बात करते हुए कहा कि दिल्ली में 40 स्थानों पर मोबाइल वैन के माध्यम से प्याज की बिक्री शुरू की गई है।

सोना बढ़त के साथ खुला, चांदी का दाम 2.40 लाख के पार

मुंबई, 27 अगस्त (एजेंसियां)। सोने और चांदी की शुरुआत गुरुवार को तेजी के साथ हुई। हालांकि, दोनों कीमती धातुओं का दाम एक सीमित दायरे में बना हुआ है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का 5 अक्टूबर, 2026 का कॉन्ट्रैक्ट पिछली क्लोजिंग 1,59,663 रुपए प्रति 10 ग्राम के मुकाबले 836 रुपए की तेजी के साथ 1,60,499 रुपए प्रति 10 ग्राम पर खुला।

यह सुबह 9:45 पर 468 रुपए या 0.29 प्रतिशत की तेजी के साथ 1,60,131 रुपए प्रति 10 ग्राम पर था।

शुरुआती कारोबार में सोने ने 1,59,954 रुपए प्रति 10 ग्राम का न्यूनतम स्तर और 1,60,898 रुपए प्रति 10 ग्राम का उच्चतम स्तर छुआ था। चांदी में भी खरीदारी देखी जा रही है। चांदी का 4 सितंबर, 2026 का कॉन्ट्रैक्ट



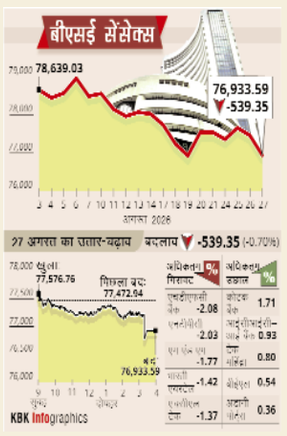
पिछली क्लोंजिग 2,39,638 रुपए प्रति किलो के मुकाबले 3,361 रुपए की मजबूती के साथ 2,42,999 रुपए प्रति किलो पर खुला।

शुरुआती कारोबार में इसमें मुनाफावसूली देखने को मिली। खबर लिखे जाने तक यह 923 रुपए या 0.39 प्रतिशत की तेजी के साथ 2,40,561 रुपए प्रति किलो पर था। अब तक कारोबार में सोने ने 2,40,429 रुपए प्रति किलो का न्यूनतम स्तर और 2,42,999 रुपए प्रति किलो का उच्चतम स्तर छुआ था।

वैश्विक संकेतों से शेयर बाजार में गिरावट

मुंबई, 27 अगस्त (एजेंसियां)। विदेशों से मिले मिश्रित संकेतों के बीच घरेलू शेयर बाजारों में गुरुवार को अंतिम समय में बिकवाली तेज होने से प्रमुख सूचकांक एक सप्ताह के निचले स्तर पर बंद हुए। बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 539.35 अंक (0.70 प्रतिशत) लुढ़ककर 76,933.59 अंक पर आ गया। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 सूचकांक भी 116.90 अंक यानी 0.48 प्रतिशत नीचे 24,090.85 अंक पर बंद हुआ। यह दोनों प्रमुख सूचकांकों का 19 अगस्त के बाद दिन का निचला स्तर है।

बाजार में लगातार दूसरे दिन गिरावट रही है। विशेषकर, बाजार बंद होने से ठीक पहले प्रमुख सूचकांक अचानक तेजी से गिर



गये। सेंसेक्स करीब 104 अंक की बढ़त में 77,576.76 अंक पर खुला, लेकिन कुछ ही देर में लाल निशान में चला गया। यह ऊपर 77,694.97 अंक और नीचे 76,933.59 अंक तक गया।

वृहत बाजार में भी बिकवाली

■ सेंसेक्स 0.70 प्रतिशत लुढ़ककर 76,933.59 अंक पर रहा
■ निफ्टी 0.48 प्रतिशत नीचे 24,090.85 अंक पर बंद

हावी रही। निफ्टी मिडकैप-50 सूचकांक 0.10 प्रतिशत और स्मॉलकैप-100 सूचकांक 0.13 प्रतिशत फिसल गया। सेक्टर आधारित सूचकांकों में बैंकिंग, एफएमसीजी, आईटी, धातु, मीडिया और तेल एवं गैस समूहों में गिरावट रही। फार्मा, स्वास्थ्य और टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद समूहों में तेजी देखी गई। एनएसई में जिन 3,619 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ उनमें से 2,159 के शेयर लाल निशान में और 1,340 के हरे निशान में रहे।

सार संक्षेप

चैटजीपीटी भारत में फ्री और गो टियर यूजर्स के लिए शुरू करेगा विज्ञापन

नई दिल्ली। अमेरिकी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) कंपनी ओपनएआई ने भारत में 'चैटजीपीटी ऐड' का विस्तार करने की घोषणा की है। भारत कंपनी के सबसे बड़े बाजारों में से एक है और यह कदम प्रस्तावित आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) से पहले अपने लोकप्रिय चैटबॉट से कमाई बढ़ाने की दिशा में उठाया गया है। इसकी शुरुआत फ्री और गो टियर पर लॉग-इन करने वाले वयस्क यूजर्स के लिए की जाएगी। भारत में चैटजीपीटी के गो टियर प्लान की कीमत 399 रुपए प्रति माह है। विज्ञापनों में दिखाए जाने वाले प्रायोजित उत्पाद या सेवाएं चैटजीपीटी के जवाबों के नीचे दिखाई देंगी। कंपनी ने कहा कि इन विज्ञापनों पर स्पष्ट रूप से लेबल लगा होगा और उन्हें चैटजीपीटी के जवाबों से अलग तरीके से प्रदर्शित किया जाएगा। प्लस, प्रो, बिजनेस, एंटरप्राइस और एजुकेशन टियर के पेड सब्सक्राइबर्स को पहले की तरह विज्ञापन-मुक्त सेवा मिलती रहेगी।

भारत के फ्लेक्स स्पेस सेगमेंट ने की जनवरी-जून के दौरान वृद्धि

नई दिल्ली। भारत के शीर्ष आठ शहरों में फ्लेक्सिबल वर्कस्पेस ऑपरेटरों ने 2026 की पहली छमाही में 1,91,306 सीटें लीज पर दीं, जो सालाना आधार पर 68.4 प्रतिशत की वृद्धि है। कुशमैन एंड वेकफील्ड की रिपोर्ट के अनुसार, ऑपरेटरों ने ऑफिस मार्केट में अपनी मौजूदगी मजबूत की है। उन्होंने 2026 की पहली छमाही में 8.4 मिलियन वर्ग फुट (एमएसएफ) का ग्रॉस लीजिंग वॉल्यूम (जीएलवी) दर्ज किया, जो इस सेगमेंट का अब तक का सबसे अधिक छमाही स्तर है। यह सालाना आधार पर 55 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दिखाता है। फ्लेक्स ऑपरेटरों की हिस्सेदारी इस अवधि के दौरान कुल लगभग 43 एमएसएफ की ऑफिस लीजिंग गतिविधि में करीब 20 प्रतिशत रही, जो 2025 की पहली छमाही के आंकड़े से 13 प्रतिशत अधिक थी।

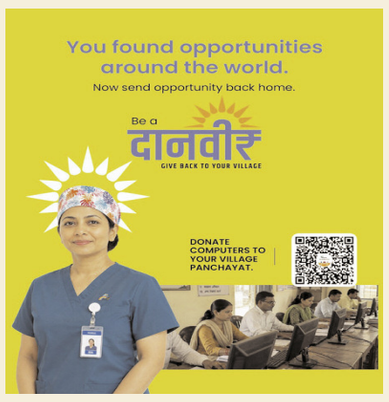
भारत का टैबलेट बाजार 2026 की पहली छमाही में बढ़ा

नई दिल्ली। भारत के टैबलेट बाजार में 2026 की पहली छमाही में सालाना आधार पर 15 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। एक रिपोर्ट के अनुसार, यह वृद्धि प्रीमियम डिवाइसों की बढ़ती मांग और कंज्यूमर, शिक्षा और एंटरप्राइज क्षेत्रों में लगातार मांग के कारण हुई। साइबरमीडिया रिसर्च (सीएमआर) की रिपोर्ट के मुताबिक, 20,000 रुपए से अधिक कीमत वाले प्रीमियम टैबलेट्स की बिक्री सालाना आधार पर 74 प्रतिशत बढ़ी और इनकी बाजार हिस्सेदारी 89 प्रतिशत रही। इससे बेहतर परफॉर्मेंस, बड़े डिस्प्ले और अधिक उत्पादकता वाले डिवाइसों की बढ़ती मांग का संकेत मिलता है। रिपोर्ट में कहा गया कि 10 इंच से बड़े स्क्रीन वाले टैबलेट्स की कुल शिपमेंट में करीब 91 प्रतिशत हिस्सेदारी रही।

सरकार ने लोगों से 'दानवीर' बनने का किया आह्वान

नई दिल्ली, 27 अगस्त (एजेंसियां)। पंचायती राज मंत्रालय ने ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत बनाने के लिए आम नागरिकों की भागीदारी बढ़ाने की दिशा में एक नई पहल शुरू की है। मंत्रालय ने लोगों से 'दानवीर' बनने का आह्वान किया है। यह एक जन-सहभागिता-आधारित कंप्यूटर क्राउडसोर्सिंग पहल है, जिसके तहत व्यक्ति और संस्थाएं सत्यापित ग्राम पंचायतों को सीधे डेस्कटॉप कंप्यूटर दान कर सकते हैं।

पंचायती राज मंत्रालय के अनुसार, 'दानवीर' पहल का उद्देश्य ग्राम पंचायतों में डिजिटल सुविधाओं को मजबूत बनाना और सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों, विशेष रूप से राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान (आरजीएसए) के तहत उपलब्ध कराए जा रहे बुनियादी ढांचे (इंफ्रास्ट्रक्चर) को पूरक सहयोग प्रदान करना है। इस पहल के माध्यम से ग्राम पंचायत को कंप्यूटर दान करने की प्रक्रिया को ऑनलाइन खरीदारी जितना आसान बनाया गया है। मंत्रालय ने बताया कि 'मेरी पंचायत' ऐप के जरिए नागरिक अपने मोबाइल फोन पर उन ग्राम पंचायतों की सूची देख सकते हैं, जिन्हें संबंधित राज्य सरकारों द्वारा सत्यापित किया गया है और जिन्हें डेस्कटॉप कंप्यूटरों की आवश्यकता है।



इच्छुक व्यक्ति अपनी मूल ग्राम पंचायत या किसी अन्य पात्र पंचायत को चुनकर सहयोग कर सकते हैं।

जब कोई दानदाता 'डोनेटें कंप्यूटर' विकल्प पर क्लिक करता है, तो उसे बिना किसी अलग पंजीकरण के सीधे डिजीहाट नामक ओएनडीसी-सक्षम डिजिटल मार्केटप्लेस पर भेज दिया जाता है। वहां चयनित ग्राम पंचायत का पता और प्राप्तकर्ता की जानकारी स्वत: भर जाती है, जिससे किसी प्रकार की मैनुअल जानकारी दर्ज करने की आवश्यकता नहीं होती। दानदाता निर्धारित तकनीकी मानकों

■ सरकार ने गांवों में डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए लोगों से मांगा सहयोग
■ व्यक्ति व संस्थाएं सत्यापित ग्राम पंचायतों को सीधे दान कर सकते हैं डेस्कटॉप कंप्यूटर

के अनुरूप उपलब्ध कंप्यूटर पैकेजों में से चयन कर सकते हैं, डिजिटल भुगतान कर सकते हैं और ऑर्डर की पूरी प्रक्रिया पर नजर रख सकते हैं। ऑर्डर की पुष्टि, डिस्पैच, डिलीवरी और प्राप्ति की सूचना तक हर चरण की वास्तविक समय में निगरानी की जा सकती है, जिससे पूरी प्रक्रिया पारदर्शी बनी रहती है।

ग्राम पंचायत सचिव द्वारा डिलीवरी की पुष्टि किए जाने के बाद दानदाता को डिजिटल रूप से प्रशंसा प्रमाणपत्र भी प्रदान किया जाता है। मंत्रालय का कहना है कि यह व्यवस्था दानदाताओं को उनके योगदान की औपचारिक मान्यता देती है और पूरी प्रक्रिया में जवाबदेही सुनिश्चित करती है। सरकार के अनुसार, किसी ग्राम पंचायत को दान किया गया एक कंप्यूटर स्थानीय प्रशासन की कार्यक्षमता को काफी बढ़ा सकता है।

एसवीसी बैंक की साइबर सेफ्टी मुहिम से लोगों को मिली डिजिटल फ्रॉड से बचने की जानकारी

नई दिल्ली, 27 अगस्त (एजेंसियां)। प्रमुख अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक, एसवीसी को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड, ने अपने 10 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश में फैले 203 ब्रांच के नेटवर्क के जरिए बड़े स्तर पर साइबर जागरूकता मुहिम चलाई। इस पहल के तहत बैंक के कर्मचारियों ने अपनी-अपनी ब्रांच के आसपास की हाउसिंग सोसाइटीज़ में जाकर लोगों के साथ बातचीत की और उन्हें डिजिटल फ्रॉड को पहचानने और उससे बचने के तरीकों के बारे में बताया। इस मुहिम के तहत 213 हाउसिंग सोसाइटीज़ को कवर किया गया और 19,061 से ज्यादा लोगों तक पहुँच स्थापित की गई। यह बैंक की अब तक की सबसे बड़ी कम्युनिटी आधारित फाइनेंशियल लिटरेसी पहलों में से एक रही। जागरूकता सेशंस में साइबर फ्रॉड के नए तरीकों पर प्रेजेंटेशन, एजुकेशनल वीडियो और सुरक्षित डिजिटल बैंकिंग के आसान तरीके बताए गए। लोगों को फिशिंग, फर्जी इन्वेस्टमेंट स्कीम, किसी और के नाम पर ठगी, ओटीपी और यूपीआई फ्रॉड, क्यूआर कोड स्कैम, डिजिटल अरेस्ट फ्रॉड और



फर्जी कस्टमर केयर कॉल्स जैसे आम फ्रॉड के बारे में समझाया गया। ग्राहकों को यह भी बताया गया कि बैंक की असली कम्युनिकेशन को कैसे पहचाना जाए, बैंक और प्रमोशनल मैसेज भेजने वाली आधिकारिक सेंडर आईडी को कैसे समझें और संदिग्ध मैसेज की पहचान कैसे करें। यह पहल ऐसे समय में की गई है, जब देशभर में साइबर फ्रॉड के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। हाल के सरकारी आँकड़ों के मुताबिक, 2026 के पहले छह महीनों में ही 12.7 लाख से ज्यादा साइबर फ्रॉड की शिकायतें दर्ज की गईं, जिनमें 10,178 करोड़ रुपए से ज्यादा के संदिग्ध फ्रॉड ट्रांजैक्शन शामिल हैं।

2026 की दूसरी छमाही की शुरुआत में भारत में कई आर्थिक संकेतों ने दिखाई मजबूती : रिपोर्ट

मुंबई, 27 अगस्त (एजेंसियां)। भारत ने 2026 की छमाही की शुरुआत कई सकारात्मक आर्थिक संकेतों के साथ की है, जिसमें विदेशी निवेशकों की खरीदारी, मानसून की रिकवरी, घरेलू वृद्धि और कंपनियों की आय का मजबूत होना शामिल हैं। यह जानकारी गुरुवार को जारी रिपोर्ट में दी गई। पीएल वेल्थ के ताजा अगस्त 2026 के मार्केट आउटलुक में बताया गया कि कच्चे तेल की बढ़ी हुई कीमतें, भू-राजनीतिक तनाव, वैश्विक स्तर पर ब्याज दरों में अनिश्चितता से बाजारों में व्यापक स्तर पर तेजी आने की संभावना कम है।



पीएल वेल्थ के सीईओ इंदरबीर जॉली ने कहा, 'हमारा मानना है कि निवेशकों के लिए यह समय सोच-समझकर निवेश करने, क्वालिटी पर ध्यान देने और किस्तों में पैसा लगाने का है। भारत को लेकर हमारा लंबे समय का भरोसा बना हुआ है, जिसे घरेलू निवेश, वित्तीय क्षेत्र के विस्तार, डेमोग्राफिक्स और देश में स्ट्रक्चरल ग्रोथ के मौकों का समर्थन मिल रहा है।

रिपोर्ट के अनुसार, भारत की घरेलू विकास की गति मजबूत बनी हुई है। इसे विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) के नेट खरीदार के तौर पर लौटने, बेहतर होते मानसून और वित्त वर्ष 2027 की पहली तिमाही के नतीजों के सीजन की आम तौर पर स्थिर शुरुआत से सहारा मिल रहा है।

भारत की वित्त वर्ष 2026 की जीडीपी विकास दर का शुरुआती अनुमान 7.7 प्रतिशत है, जबकि आरबीआई ने वित्त वर्ष 2027 के लिए विकास दर का अनुमान 6.7 प्रतिशत लगाया है। जुलाई में मैन्युफैक्चरिंग और सर्विस सेक्टर की गतिविधियां वृद्धि के दायरे में रहीं, जिसमें पीएमआई क्रमश: 53.9 और 53.1 रहा। बैंक क्रेडिट ग्रोथ सालाना आधार पर बढ़कर 18.6 प्रतिशत हो गई।

पीएम जन-धन खातों की संख्या 59 करोड़ के पार

नई दिल्ली, 27 अगस्त (एजेंसियां)। पीएम जन-धन योजना (पीएमजेडीवाई) के तहत खुले खातों की संख्या 59 करोड़ से अधिक हो गई है और इसमें जमा राशि 3.17 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच गई है। यह जानकारी वित्त मंत्रालय द्वारा गुरुवार को जारी किए गए बयान में दी गई। पीएमजेडीवाई को 12 वर्ष पूरे हो चुके हैं और इस योजना की शुरुआत 28 अगस्त, 2014 को हुई थी।

मंत्रालय ने बयान में कहा कि पीएमजेडीवाई के तहत 78 प्रतिशत खाते ग्रामीण और अर्ध-शहरी इलाकों में खोले गए हैं और इनमें से 56 प्रतिशत खातों का स्वामित्व महिलाओं के पास है। इसके तहत अबतक 59.09 करोड़ जन-धन खाते खोले गए है जिनमें तीन-चौथाई से अधिक ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में हैं।

19 अगस्त, 2026 तक प्रति खाता औसत जमा राशि 5,356 रुपए है। पिछले 12 वर्षों में प्रति खाता औसत जमा राशि 3.4 गुना बढ़ी है, जो खातों के बढ़ते इस्तेमाल और खाताधारकों में बचत की आदतें विकसित होने का एक और

■ ग्रामीण व अर्ध-शहरी क्षेत्रों में बढ़ा वित्तीय समावेशन
■ 56 प्रतिशत खातों का स्वामित्व महिलाओं के पास

संकेत है। इसके अलावा, हर खाते के साथ एक मुफ्त रुपे डेबिट कार्ड मिलता है, जिसमें 2 लाख रुपए का दुर्घटना बीमा कवर होता है, जिससे डिजिटल लेन-देन और वित्तीय सुरक्षा को बढ़ावा मिलता है। पीएमजेडीवाई के खाताधारक 10,000 रुपए तक की ओवरड्राफ्ट सुविधा के लिए भी पात्र हैं, जो आपातकालीन स्थितियों में एक सुरक्षा कवच का काम करती है। मंत्रालय द्वारा बयान में कहा गया है कि इस योजना सबसे गरीब लोगों तक बिना किसी देरी या बिचौलियों की मदद के वित्तीय सेवाएं पहुंचाना मुमकिन हो गया है। वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने कहा कि पीएमजेडीवाई यह पक्का करता है कि हर उस बालिग व्यक्ति के पास बेसिक बैंक अकाउंट हो, जिसका पहले कोई बैंक अकाउंट नहीं था। इसके लिए न तो मिनिमम बैलेंस की जरूरत है और न ही कोई मेंटेनेंस चार्ज लगता है। इसने लाखों लोगों, खासकर समाज के पिछड़े वर्गों को बैंकिंग और फाइनेंशियल सर्विस का फायदा उठाने और अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में मदद की है। उन्होंने कहा कि अकाउंट होने की वजह से आम आदमी को इंश्योरेंस और पेंशन कवरेज मिल पाया है। हर राज्य और जिले में लगातार चलाए गए बड़े अभियानों के जरिए, हम बैंक अकाउंट के मामले में लगभग हर किसी तक पहुंच बनाने की दिशा में आगे बढ़े हैं और इंश्योरेंस व पेंशन स्कीम का दायरा उन लोगों तक लगातार बढ़ाया है जिन्हें इनकी सबसे ज्यादा जरूरत है।

भारतीय मतदाता संसद

भारतीय मतदाताओं का अपना संसद

जनसभा

जनसभा ही क्यों ?

जब दो बिभिन्न विचारधारा की राजनीतिक पार्टी गठबन्धन कर सरकार बना सकती हैं।
तो फिर मतदाता भी भी ऐसा क्यों नहीं कर सकता ?

करके देखें ! ऐसा करने से अच्छे जनप्रतिनिधि को भी अवसर मिलेगा ! मुठितन्त्र वाली सरकार से जनप्रतिनिधि आजाद होगा ! जनप्रतिनिधि मुठितन्त्र के लिए नही लोकतंत्र के लिए होगा ! तब बदलेगा भारत

अब भारतीय मतदाता हारेगा नही, कियोंकि अपने जनसभा संसद में बैठकर अपनी और दूसरे का विचारधारा बदलेगा, फिर एक विचारधारा बनाएगा

वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था और जनसभा राजनीतिक व्यवस्था में अंतर

वर्तमान व्यवस्था

• किसी विशेष राजनितिक पार्टी या समर्थक के रूप में मतदाता को संगठित किया जाता है। जिस कारण मतदाता को अपना बेहतर और अनुभवी जन प्रतिनिधि के रूप में चुनने का विकल्प नहीं रहता इसीलिये लोकतंत्र लोकतंत्र न रहकर मुट्ठितंत्र बन जाता है।

• अधिकतर मतदाता अपना मत का अधिकार किसी विशेष पार्टी या राजनितिक के कार्यकर्ता या समर्थक के रूप में करता है जिस कारण अपने प्रतिनिधि की छवि या अनुभव महत्व नहीं रखता।

• भारतीय लोकतंत्र में जनता राजा है पर आज जनता नहीं कुछ मुट्ठी भर लोग राज कर रहे हैं।

• मुट्ठी भर लोग राज करने से जनता द्वारा चुने प्रतिनिधि का अधिकार कम हुआ।

• जनप्रतिनधि बनने के इच्छुक चुनाव के समय ही अपनी कुशलता केवल प्रचार के माध्यम से करता है। जिसमें अधिक रुपया खर्चा करना पड़ता है।

• राजनीति में धन-बल का प्रयोग ज्यादा होता है, जिससे विकास और एक समान मूल अधिकार में बाधा उत्पन होती है।

जनसभा व्यवस्था

• मतदाता मतदाता के रूप में संगठित रहेगा इसीलिये मतदाता को अपना बेहतर और अनुभवी जन प्रतिनिधि के रूप में चुनने का विकल्प रहेगा तब लोकतंत्र मुट्ठीतंत्र न बनकर लोकतंत्र रहेगा।

• अधिकतर मतदाता अपना मत का अधिकार अपने प्रतिनिधि की छवि या अनुभव के आधार पर मत का प्रयोग करेगा।

• भारतीय लोकतंत्र का जो सपना है मुट्ठी भर लोग राज नहीं आम जनता राज करे यह सपना साकार होगा।

• आम जनता का राज होने से जनता द्वारा चुने प्रतिनिधि का अधिकार बढ़ेगा।

• जनप्रतिनधि बनने के इच्छुक को अपनी कुशलता रुपया या प्रचार के माध्यम से नहीं जनता की अधिक समय सेवा कर दिखाने का अवसर मिलेगा।

• राजनीति में धन-बल का प्रयोग कम होगा जिससे सभी का विकास और एक समान मूल अधिकार सबको मिलेगा।

▫ करके देखें ▫ मुठितन्त्र से आजाद होगा हमारा जनप्रतिनिधि फिर ▫ भारत बदलेगा

आज ही शब्दवाणी समाचार के स्थाई पाठक बनकर भारतीय मतदाता का अपना संसद जनसभा के सदस्य बनें

शब्दवाणी समाचार विज्ञापन नहीं पाठकों को प्रमुख मानता है इसलिए औरों से अलग है

आज ही शब्दवाणी समाचार (हिंदी दैनिक) के स्थाई पाठक बनें, मात्र 300 रूपये मासिक पर

सम्मान के साथ मिलेगा बहुत कुछ, लेकर देखें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्कर करें

RNI. NO.DELHIN/2003/00049 हिन्दी दैनिक

शब्दवाणी समाचार

Website : Shabdawanisamachar.page

(नई सोच, नई उम्मीद, बेहतर भविष्य, बेहतर भारत)

श्रीलंका के बल्लेबाज दिनुषा ने लगाया नाबाद शतक , भारत से छीनी जीत

कोलंबो में दूसरा टेस्ट मैच रहा ड्रा, टीम इंडिया ने 1-0 से अपने नाम की सीरीज

● कोलंबो / (एजेंसी)

भारत और श्रीलंका के बीच कोलंबो में खेले गए सीरीज का दूसरा मुकाबला ड्रॉ पर खत्म हुआ है। सिंहलीज स्पोर्ट्स क्लब मैदान पर खेले गए इस मैच में टीम इंडिया दूसरी पारी में श्रीलंका को ऑलआउट नहीं कर पाई और यह मैच ड्रॉ पर छूटा। इसी के साथ भारतीय टीम ने सीरीज को 1-0 से जीत लिया। चौथे दिन के स्टंप के समय श्रीलंका का स्कोर 6 विकेट पर 229 रन था।

आखिरी दिन तीन सेशन तक भारतीय गेंदबाज श्रीलंका के दो ही विकेट ले पाए और सोनल दिनुषा के शानदार शतक के दम पर मेजबान टीम खुद को मुकाबला ड्रॉ होने से पहले ऑलआउट से बचा गई। इस मैच में पहली पारी में 9 विकेट खोकर 503 रन बनाने वाली भारतीय टीम ने श्रीलंका को उनकी पहली पारी में 290 रन पर ऑलआउट कर फॉलोऑन खेलने के लिए मजबूर किया था। जिसके बाद श्रीलंकाई बल्लेबाजों ने गजब का जज्बा दिखाते हुए अगली पारी में 9 विकेट खोकर 429 रन बोर्ड पर लगा दिए और अंत में दोनों टीमों को मैच ड्रॉ पर खत्म करना पड़ा।

सोनल दिनुषा और केशारा नुवांता ने भारतीय गेंदबाजी आक्रमण को बेअसर रखते हुए श्रीलंका को को बचाए रखा। दिनुशा और नुवांता के बीच 7वें विकेट लिए के लिए 112 रनों की साझेदारी हुई। भारतीय टीम की श्रीलंका को जल्दी समेटने की कोशिशों को लगातार नाकाम रही।



मानव सुथार ने कराई वापसी

दूसरे सेशन के पहले ही ओवर में भारत को विकेट मिल गया। बाएं हाथ के स्पिनर मानव सुथार ने केशरा नुवांथा को आउट कर दिया। उन्होंने 46 रनों की पारी खेली और 150 गेंदों का सामना किया। इसके बाद उतरे प्रभात जयसूर्या ने 28 गेंदों पर 2 रन बनाए। उनका विकेट रविंद्र जडेजा को मिला। सोनल और जयसूर्या की जोड़ी 71 गेंद रही और 25 रन जोड़े।

डब्ल्यूटीसी तालिका में भारत पांचवें स्थान पर

इस मैच के ड्रॉ होने के साथ भारत के वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल खेलने की उम्मीदों को भी बड़ा झटका लगा है। अगर टीम इंडिया यह मैच जीत जाती तो उसे 12 अंक मिलते और उसका पॉइंट परसेंटेज बढ़कर 63.33 हो जाता जिससे वह आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप की अंक तालिका में चौथे स्थान पर पहुंच जाती। लेकिन मैच ड्रॉ रहने के कारण भारत और श्रीलंका दोनों टीमों को 4-4 अंकों से ही संतोष करना पड़ा। इस नतीजे के बाद भारत का अंक प्रतिशत 53.33 से घटकर 51.51 पर आ गया है।

दिनुषा ने दूसरी पारी में भी ठोका शतक

पूरी सीरीज में शानदार प्रदर्शन करने वाले सोनल दिनुषा तीसरे और आखिरी सेशन में भी नहीं रुके और उन्होंने मैच में अपनी दूसरी सेंचुरी पूरी की। उनका साथ लहिरू कुमारा ने बखूबी निभाया जो श्रीलंका के 8 विकेट गिरने के बाद बैटिंग करने आए थे। कुमारा ने 90 गेंद खेलकर 12 रन की पारी खेली थी। जिससे भारत के इस मुकाबले को जीतने की उम्मीद एकदम खत्म हो गई थी। बाद में असिथा फर्नांडो ने आखिरी बल्लेबाज के तौर पर 24 गेंद तक खेलकर अपना विकेट नहीं दिया।

स्कोर बोर्ड

भारत पहली पारी: 503-9 घोषित

श्रीलंका पहली पारी: 290-10

श्रीलंका	रन	गेंद	4	6
उदारा कॉ. सारांश बो.सिराज	3	15	0	0
कामिल एलबीडब्ल्यू बो. जडेजा	32	39	3	1
पसिंदु रटंप पंत बो.सुथार	92	173	10	1
मेंडिस कॉ.गिल बो.प्रसिद्ध	55	92	2	3
डी सिल्वा कॉ.प्रडिक्कल बो.सुथार	23	44	1	1
दिनुषा नाबाद	133	264	8	2
डिकवेला एलबीडब्ल्यू बो. सारांश	6	12	1	0
नुवानथा कॉ.जुरेल बो.सुथार	46	150	4	0
जयसूर्या कॉ.जुरेल बो.जडेजा	2	28	0	0
कुमारा कॉ.जायसवाल बो.जडेजा	12	90	1	0
फर्नान्डो नाबाद	0	24	0	0

अतिरिक्त: 25, कुल रन: 429-9 (154.0) विकेट पतन: 5-1, 63-2,178-3,209-4,212-5,218-6,330-7,355-8,402-9.

गेंदबाज: प्रसिद्ध: 18.3-3-57-1, सिराज: 15-7-26-1, सुथार: 41-7-121-3, सारांश: 37-4-98-1,जडेजा: 38.3-4-94-3, गिल: 2-0-8-0, जायसवाल: 1-0-9-0, जुरेल: 1-0-1-0.

मुचोवा और मेंसिक ने जीता यूएस ओपन मिश्रित युगल का खिताब

फाइनल में बेनसिच-कोबोली की जोड़ी को हराया

● नई दिल्ली / (एजेंसी)



कैरोलिना मुचोवा और याकुब मेंसिक ने बेलिंडा बेनसिच और फ्लावियो कोबोली को 6-3, 1-6, 10-6 से हराकर यूएस ओपन टेनिस टूर्नामेंट में मिश्रित युगल का खिताब जीत लिया। चेक गणराज्य की जोड़ी ने दो दिन की इस प्रतियोगिता के दूसरे दिन दोनों मुकाबले मैच टाईब्रेक में जीते।

मेंसिक की तेज सर्विस और नेट पर शानदार खेल ने इस जोड़ी की जीत में अहम भूमिका निभाई। मेंसिक ने ऐस के साथ फाइनल का अंत किया। इस जोड़ी को 10 लाख डॉलर की पुरस्कार राशि मिली। सेमीफाइनल में भी मुचोवा और मेंसिक हार के करीब पहुंच गए थे लेकिन दो मैच प्वाइंट बचाने के बाद उन्होंने लगातार चार अंक जीतकर मीरा आंद्रीवा और आंद्रे रुबलेव को 5-4, 3-5, 11-9 से शिकस्त दी।

फाइनल टूर्नामेंट का एकमात्र मुकाबला था जो सामान्य टेनिस मैच जैसा खेला गया। इसमें सेट छह गेम के थे और छह-छह की बराबरी पर टाईब्रेक हुआ। शुरुआती तीन दौर में सेट चार गेम के थे और चार-चार की बराबरी पर टाईब्रेक खेला गया था। बेनसिच और कोबोली ने पहले सेमीफाइनल में एलिना स्वितोलिना और गेल मोनफिल्स की पति-पत्नी की जोड़ी को 4-5, 4-1, 10-5 से हराकर फाइनल में जगह बनाई थी।

आसिफ खान पर आईसीसी ने लगाया 15 महीने का बैन

दुबई, आरएनएन। पाकिस्तान में जन्मे यूएई के बल्लेबाज आसिफ खान पर पिछले साल प्रतियोगिता के इतर किए गए डोप परीक्षण में प्रतिबंधित एनाबॉलिक स्टेरॉयड के लिए पॉजिटिव पाए जाने के बाद 15 महीने का प्रतिबंध लगाया गया है।

आसिफ के आठ सितंबर 2025 को किए गए परीक्षण में मेस्टेरोलोन के मेटाबोलाइट की पुष्टि हुई थी। प्रतिबंध की अवधि आठ सितंबर 2025 से लागू मानी गई है और यह इस साल सात दिसंबर तक चलेगी। आईसीसी ने कहा, 36 साल के आसिफ ने आईसीसी की डोपिंग रोधी संहिता के नियम 2.1 के उल्लंघन की बात स्वीकार कर ली है ।

सहवाग के बेटे आर्यवीर की अंडर-19 इंडिया टीम में एंट्री

द्रविड़ के बेटे अन्वय वनडे टीम में शामिल

● नई दिल्ली / (एजेंसी)



पूर्व भारतीय ओपनर वीरेंद्र सहवाग के बेटे आर्यवीर को पहली बार भारत की अंडर-19 टीम में चुना गया है। उन्हें ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन वनडे मैचों की सीरीज के लिए टीम में जगह मिली है। तीनों मुकाबले सितंबर में राजकोट में खेले जाएंगे।

आर्यवीर दाएं हाथ के बल्लेबाज हैं और फिलहाल दिल्ली प्रीमियर लीग में वेस्ट दिल्ली लायंस की ओर से खेल रहे हैं। राहुल द्रविड़ के बेटे अन्वय को भी वनडे टीम में शामिल किया गया है। अन्वय विकेटकीपर-बल्लेबाज हैं। यानी, वनडे टीम में वीरेंद्र सहवाग और राहुल द्रविड़ के बेटे एक साथ नजर आएंगे।

आर्यवीर और अन्वय दोनों को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाले दो मल्टी-डे मैचों की टीम में जगह नहीं मिली है। आर्यवीर सहवाग ने हाल ही में दिल्ली प्रीमियर लीग के 2026 सीजन में वेस्ट दिल्ली लायंस के लिए खेला है।

ग्रैंड स्लैम के मुख्य ड्रॉ में नहीं पहुंच सके नागल

नई दिल्ली, आरएनएन। भारत के स्टार टेनिस खिलाड़ी सुमित नागल को यूएस ओपन क्वालिफाइंग टूर्नामेंट के पहले दौर में हार का सामना करना पड़ा। शीर्ष वरीय फ्रांस के आर्थर जिया ने नागल को सीधे सेटों में 6-3, 7-6 (4) से हराकर दूसरे दौर में प्रवेश कर लिया।

आर्थर जिया ने सीधे सेटों में हराया

पहले सेट में जिया ने शुरुआत से ही दबाव बनाए रखा और 6-3 से सेट अपने नाम किया। दूसरे सेट में नागल ने कड़ी चुनौती पेश की, लेकिन टाई-ब्रेकर में जिया ने 7-4 से बाजी मारते हुए मैच अपने नाम कर लिया।

इस हार के साथ नागल लगातार सातवें ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के मुख्य ड्रॉ में जगह बनाने से चूक गए। नागल ने किसी ग्रैंड स्लैम के मुख्य ड्रॉ में 2025 ऑस्ट्रेलियन ओपन में हिस्सा लिया था।

महिला टी20 एशिया कप का आज से आगाज, भारत-पाक भिड़ंत 5 को

भारत-श्रीलंका खिताब के दावेदार, 13 सितंबर को फाइनल

● नई दिल्ली / (एजेंसी)



महिला टी20 एशिया कप 2026 का आगाज शुक्रवार यानी 28 अगस्त से यूएई के दुबई में होने जा रहा है। इस बार टूर्नामेंट में आठ टीमें हिस्सा ले रही हैं। भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका और बांग्लादेश के अलावा इंडोनेशिया, हांगकांग चीन, थाईलैंड और मेजबान यूएई खिताब के लिए मैदान में उतरेंगे।

टूर्नामेंट का फाइनल 13 सितंबर को खेला जाएगा। भारत को प्रतियोगिता का प्रबल दावेदार माना जा रहा है, जबकि मौजूदा चैंपियन श्रीलंका की टीम भी शानदार फॉर्म के साथ टूर्नामेंट में पहुंची है। पाकिस्तान और बांग्लादेश भी उलटफेर करने की क्षमता रखते हैं। महिला टी20 एशिया कप में कुल 15 मुकाबले खेले जाएंगे। इनमें 12 लीग मैच, दो सेमीफाइनल और एक फाइनल शामिल है। ग्रुप चरण के मुकाबले 28 अगस्त से आठ सितंबर तक होंगे और इस दौरान हर दिन एक मैच खेला जाएगा। इसके बाद पहला सेमीफाइनल 10 सितंबर और दूसरा सेमीफाइनल 11 सितंबर को होगा।

टूर्नामेंट के सभी मुकाबले दुबई में आयोजित किए जाएंगे। आठ टीमों को दो ग्रुप में बांटा गया है। ग्रुप ए में भारत, पाकिस्तान, हांगकांग चीन और थाईलैंड हैं। वहीं ग्रुप बी में बांग्लादेश, श्रीलंका, यूएई और इंडोनेशिया हैं।

भारत का एशिया कप में रहा है दबदबा

महिला टी20 एशिया कप में भारत का अब तक दबदबा रहा है। टी20 प्रारूप में खेले गए पांच संस्करणों में भारत ने तीन बार खिताब जीता है। हालांकि, दो मौकों पर उसे फाइनल में हार का सामना करना पड़ा। 2018 में बांग्लादेश ने भारत को हराकर खिताब जीता था, जबकि 2024 में श्रीलंका ने भारत को मात देकर पहली बार ट्रॉफी अपने नाम की थी। अब भारत की नजरें खिताब वापस हासिल करने पर होंगी। टूर्नामेंट के सबसे बहुप्रतीक्षित मुकाबलों में भारत और पाकिस्तान की भिड़ंत शामिल है। दोनों टीमें पांच सितंबर को आमने-सामने होंगी। टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में भारत का पाकिस्तान पर दबदबा रहा है।



भारत ने जर्मनी को हराकर पांचवां स्थान हासिल किया

नई दिल्ली, आरएनएन। भारतीय महिला हॉकी टीम ने एफआईएच महिला विश्व कप के क्लासिफिकेशन मुकाबले में शानदार प्रदर्शन करते हुए ऊंची रैंकिंग वाली जर्मनी को 3-1 से हराकर पांचवां स्थान हासिल किया। यह विश्व कप में 52 साल बाद भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।

भारत ने 1974 में टूर्नामेंट के पहले संस्करण में चौथा स्थान हासिल किया था। भारत की जीत की नायिका नवनीत कौर रहीं, जिन्होंने 44वें और 47वें मिनट में गोल कर शानदार डबल दागा। इशिका ने 43वें मिनट में भारत का खाता खोला, जबकि जर्मनी की ओर से लिन क्रिग्स ने 59वें मिनट में एक गोल किया। मुकाबले के शुरुआती 43 मिनट में दोनों टीमों के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिली। दोनों ही टीमें गोल करने में नाकाम रहीं। इसके बाद भारत ने अगले 17 मिनट में तीन गोल दागकर मुकाबले का रुख पूरी तरह बदल दिया। 43वें मिनट में इशिका ने नेहा से मिले पास पर सर्किल में प्रवेश किया और रिवर्स हिट के जरिए गेंद को जर्मन गोलकीपर के ऊपर से गोल में पहुंचा दिया।

वरिष्ठ क्रिकेट कोच सुरेश चेनानी को मिला निष्काम कर्मयोगी अवार्ड

● भोपाल / (एजेंसी)



मध्यप्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन (एमपीसीए) द्वारा ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर, इंदौर में वर्ष 2025-26 का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। समारोह में भोपाल के वरिष्ठ क्रिकेटर एवं कोच सुरेश चेनानी को निष्काम कर्मयोगी अवार्ड से सम्मानित किया गया। चेनानी को चांदी की मोमेंटो के साथ 1,11,111 रुपए प्राप्त हुए ।

श्रीनाथ और सिंधिया ने किया सम्मानित

यह अवार्ड भोपाल के किसी भी खिलाड़ी अथवा कोच को पहली बार प्राप्त हुआ है। पिछले वर्ष के शानदार टीमों के प्रदर्शन के लिए भोपाल डिवीजन को 7,13,500 रुपये का पुरस्कार डिवीजन एवं विजेता टीम (अंडर-18 बॉयज एवं सीनियर वुमन) के खिलाड़ियों के लिए प्राप्त हुआ।

यह पुरस्कार बीडीसीए के सचिव शांति कुमार जैन ने एमपीसीए के मंच से अंतराष्ट्रीय खिलाड़ी जवागल श्रीनाथ, ज्योतिरादित्य सिंधिया, महाआर्यमन सिंधिया ,सुधीर असनानी, विनीत सेठिया और अनुरूधति किरकिरे से प्राप्त किया। साथ ही वर्ष 2024-25 की डिवीजन की इंसेंटिव स्कीम के अंतर्गत 10 डिवीजनों में प्रथम स्थान इंदौर एवं द्वितीय स्थान उज्जैन को क्रमशः 7.50 लाख एवं 5 लाख का अवार्ड दिया गया।

भोपाल डिवीजन अपने 50 वर्षों के इतिहास मैं मात्र 1/2 (आधे) नंबर से पीछे रहते हुए तीसरे स्थान पर रहा, जो कि अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। इस उपलब्धि पर बीडीसीए के प्रेसिडेंट ध्रुव नारायण सिंह, समस्त मैनेजिंग कमेटी मेंबर्स एवं लाइफ मेंबर्स ने सभी खिलाड़ियों, कोचों एवं सुरेश चेनानी को शुभकामनाएं एवं बधाई दी।

संवाद खेल और सहकारिता मंत्री विश्वास सारंग ने खेलो इंडिया संवाद कार्यक्रम में की सहभागिता

खेलों में नवाचार व विकसित भारत के निर्माण पर हुई चर्चा



● रायसेन / (एजेंसी)

युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के मेरा युवा भारत, रायसेन द्वारा रबीन्द्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी, रायसेन में खेलो इंडिया संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

आरएनटीयू में खेलो इंडिया संवाद कार्यक्रम

कार्यक्रम में युवाओं की खेलों में भागीदारी, नवाचार, नेतृत्व क्षमता तथा नशामुक्त विकसित भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका पर चर्चा की गई। आरएनटीयू की प्रो चांसलर डॉ. अदिति चतुर्वेदी वत्स, मुख्य अतिथि विधायक सुरेंद्र पटवा, कुलगुरु डॉ. रवि प्रकाश दुबे, भाजपा जिला अध्यक्ष राकेश शर्मा, मायभारत की डिप्टी डायरेक्टर मोनिका चौधरी, रजिस्ट्रार डॉ. संगीता जौहरी, डीएसी सदस्य जीतू ठाकुर, सहित अन्य शामिल रहे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का वर्चुअल संबोधन हुआ। प्रधानमंत्री मोदी ने युवाओं को खेलों से जुड़ने, अपनी प्रतिभा को निखारने, नवाचार एवं रचनात्मक विचारों को आगे बढ़ाने तथा विकसित भारत के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया।

खेलो इंडिया संवाद युवाओं को विकसित भारत से जोड़ने का मंच

● भोपाल / (एजेंसी)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को खेलो इंडिया संवाद कार्यक्रम के माध्यम से देशभर के युवाओं से वर्चुअली संवाद किया। इस अवसर पर भोपाल में आयोजित कार्यक्रम में सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने सहभागिता कर प्रधानमंत्री के प्रेरणादायी संवाद को सुना।

संवाद कार्यक्रम पश्चात मंत्री सारंग ने उपस्थित युवा साथियों से संवाद कर उनके विचार एवं सुझाव जाने तथा उन्हें नशामुक्त, स्वस्थ एवं विकसित भारत के निर्माण का संकल्प दिलाया। मंत्री सारंग ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत में खेलों को केवल प्रतिस्पर्धा और पदक प्राप्ति तक सीमित न रखते हुए इसे युवा सशक्तिकरण एवं विकसित भारत 2047 के विजन के रूप में विकसित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि देश में 21वीं सदी के अनुरूप आधुनिक एवं सुदृढ़ स्पोर्ट्स इकोसिस्टम तैयार करने की दिशा में निरंतर कार्य हो रहा है।

प्रतिभाओं की पहचान से लेकर उन्हें प्रशिक्षण, संसाधन, अवसर और राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के मंच उपलब्ध कराने तक हर स्तर पर आवश्यक सहयोग सुनिश्चित किया जा रहा है। मंत्री सारंग ने कहा कि खेलो इंडिया संवाद केवल खेलों पर चर्चा का कार्यक्रम नहीं है बल्कि यह देश के युवाओं के विचारों, ऊर्जा, प्रतिभा और आकांक्षाओं को विकसित भारत के राष्ट्रीय विजन से जोड़ने का एक महत्वपूर्ण मंच है। प्रधानमंत्री मोदी का युवाओं से सीधा संवाद उन्हें नई दिशा, नई प्रेरणा और अपने सामर्थ्य को राष्ट्रहित में लगाने का अवसर प्रदान करता है।



भारत की युवा शक्ति देश की सबसे बड़ी ताकत

मंत्री सारंग ने कहा कि भारत की युवा शक्ति देश की सबसे बड़ी ताकत है। खेल युवाओं में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, टीम भावना, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच का विकास करते हैं। यही गुण एक सशक्त नागरिक और मजबूत राष्ट्र की नींव रखते हैं। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता है कि प्रत्येक युवा अपनी प्रतिभा को पहचानकर उसे सकारात्मक दिशा दे और राष्ट्र निर्माण में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करे। आगे उन्होंने कहा कि खेल केवल मेडल जीतने का माध्यम नहीं, बल्कि स्वस्थ समाज और सशक्त राष्ट्र के निर्माण का प्रभावी साधन है। खेलों के साथ संस्कार, अनुशासन और नशामुक्ति को जीवन का हिस्सा बनाकर युवा स्वयं भी सशक्त बनेंगे और समाज को भी नई दिशा देंगे।

नशामुक्त युवा ही विकसित राष्ट्र के मजबूत आधार

मंत्री सारंग ने युवाओं से आह्वान किया कि वे नशे से दूर रहें, स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं और खेलों को अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाएं। नशामुक्त युवा ही स्वस्थ समाज और विकसित राष्ट्र के मजबूत आधार हैं। खेल, संस्कार और नशामुक्ति के संकल्प के साथ मध्यप्रदेश का युवा स्वस्थ, सशक्त और विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। आगे उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विकसित भारत 2047 के संकल्प को साकार करने में देश का युवा निर्णायक भूमिका निभाएगा। भाजपा सरकार युवाओं की प्रतिभा और सामर्थ्य को अवसर प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। खेल एवं युवा कल्याण विभाग के सचिव संजीव सिंह, संचालक अंशुमान यादव, अपर सचिव अजय श्रीवास्तव, साईं के क्षेत्रीय निदेशक अभिषेक चौहान, माय भारत के वालिंटियर्स, खिलाड़ी एवं बड़ी संख्या में युवा उपस्थित रहे।

राजधानी (न्यू बॉम्बे)

दिन	रात
149 = 4	450 = 9
249 = 5	440 = 8

शुभांक

दिन	रात
568 = 9	260 = 8
345 = 2	378 = 8

भाग्यांक

3 5 9 0

www.kalyangame.com



रणबीर कपूर की फिल्म ब्रह्मास्त्र 2 पर आई बड़ी अपडेट; इस रोल में नजर आ सकती हैं दीपिका

रणबीर कपूर इस साल दिवाली पर अपनी बड़ी फिल्म 'रामायण' की रिलीज की तैयारी कर रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक 'ब्रह्मास्त्र 2' के लिए वह अयान मुखर्जी के साथ फिर से काम कर सकते हैं। मेकर्स फिल्म की स्क्रिप्ट पर चर्चा कर रहे हैं। इस बहुप्रतीक्षित सीक्वल का प्री-प्रोडक्शन चल रहा है। खबर है कि रणबीर के अगले साल जनवरी तक 'रामायण: पार्ट 2' की शूटिंग पूरी करने की उम्मीद है। कुछ समय के ब्रेक के बाद अभिनेता 'ब्रह्मास्त्र 2' पर काम शुरू कर सकते हैं। इसमें आलिया भट्ट लीड रोल में होंगी, जो अभिनेता की पत्नी हैं।

क्या होगा दीपिका का रोल?

जहां रणबीर और आलिया शिव और ईशा के अपने किरदारों को दोहराने के लिए तैयार हैं, वहीं एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण भी अमृता का किरदार निभाने के लिए फिल्म से जुड़ सकती हैं। फैंस 'ब्रह्मास्त्र' में शिव की मां के तौर पर दीपिका की झलक देखकर बहुत खुश हुए थे। इससे फिल्म में उनके किरदार और सीक्वल में उनकी भूमिका के बारे में उत्सुकता पैदा हुई।

कैसे कलाकार चाहते हैं अयान?

खबर यह भी है कि अयान और उनकी क्रिएटिव टीम दीपिका को कास्ट करना चाहती है, क्योंकि उन्हें लगता है कि अमृता के किरदार के लिए एक ऐसी एक्ट्रेस की जरूरत है. जो स्क्रीन पर जबरदस्त प्रभाव और मौजूदगी ला सके। हालांकि, अभी भी बातचीत चल रही है। कितने किरदार निभाएंगे रणबीर? 'ब्रह्मास्त्र 2' को लेकर सबसे बड़ी चर्चा का विषय रणबीर का डबल रोल हो सकता है। बताया जा रहा है कि एक्टर शिव और देव दोनों का किरदार निभाएंगे और पहली फिल्म में दिखाए गए टकराव और पौराणिक कथा को आगे बढ़ाएंगे।

क्यों उत्साहित हैं रणबीर?

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, रणबीर इस फ्रेंचाईजी में वापसी करने और चुनौतीपूर्ण डबल रोल निभाने को लेकर उत्साहित हैं। उनके शिव और देव दोनों का किरदार निभाने से सीक्वल को एक बड़ा कैनवस मिल सकता है। कहानी दोनों मुख्य किरदारों के बीच के रिश्ते और टकराव को गहराई से दिखा सकती है।



क्या रिया को याद आया जिंदगी का सबसे कठिन दौर

'द ट्रेटर्स 2' में किसी पर शक होना खेल का हिस्सा है, मगर रिया चक्रवर्ती के लिए 'ट्रेटर' शब्द शायद बाकी खिलाड़ियों जितना हल्का नहीं है। घर में जब उन पर शक बढ़ता है, तो रिया अपनी जिंदगी के उस दौर को याद करती हैं, जब उन्हें लगता था कि दुनिया ने पहले ही उन्हें ट्रेटर मान लिया था। उनकी सफाई में खेल से ज्यादा उनकी अपनी कहानी सामने आ जाती है।

मैं इनोसेंट निकली घर में अपने ऊपर हो रहे शक के बीच रिया कहती हैं, 'मैं सच में ट्रेटर नहीं हूं। मैं कैसे बताऊं? मेरा जो नैरेटिव है ना लाइफ का, यही रहा कि दुनिया ने मुझे ट्रेटर समझा लेकिन मैं इनोसेंट निकली हूं।' रिया का इशारा उस दौर की तरफ है, जब सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद उन्हें लंबे समय तक सवालों और आलोचनाओं का सामना करना पड़ा था। 2025 में सीबीआई ने मामले में क्लोजर रिपोर्ट दाखिल की थी। जांच में रिया के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का सबूत नहीं मिला था।

क्या है रिया की सफाई?

शो में खेल का एक अहम हिस्सा हत्या का है। ट्रेटर्स को चुपचाप किसी खिलाड़ी को खेल से बाहर करने का मौका मिलता है। जबकि बाकी खिलाड़ी यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि आखिर ट्रेटर कौन है। ऐसे में जब रिया पर भी ट्रेटर होने का शक बढ़ता है, तो वह अपनी पुरानी छवि का हवाला देते हुए कहती हैं, 'मैं तो पहले से ही दुनिया को ट्रेटर दिखती हूं, समझ रहे हो? मेरी निजी जिंदगी की वजह से। तो मैं जानबूझकर एक शो में आकर मर्डर-वर्डर थोड़ी करूंगी। ये मेरे लिए बहुत खराब होगा। इसके मीम्स बनेंगे। मैं देश की सबसे ज्यादा ट्रोल होने वाली इंसान हूं, इसका मतलब समझते हो आप?' रिया को लगता है कि अगर उन्होंने खेल में जानबूझकर किसी को धोखा दिया तो लोग इसे सिर्फ खेल की चाल नहीं मानेंगे। उनके लिए यह उनकी पुरानी छवि से भी जुड़ जाएगा।

रिया ने करण से क्या कहा?

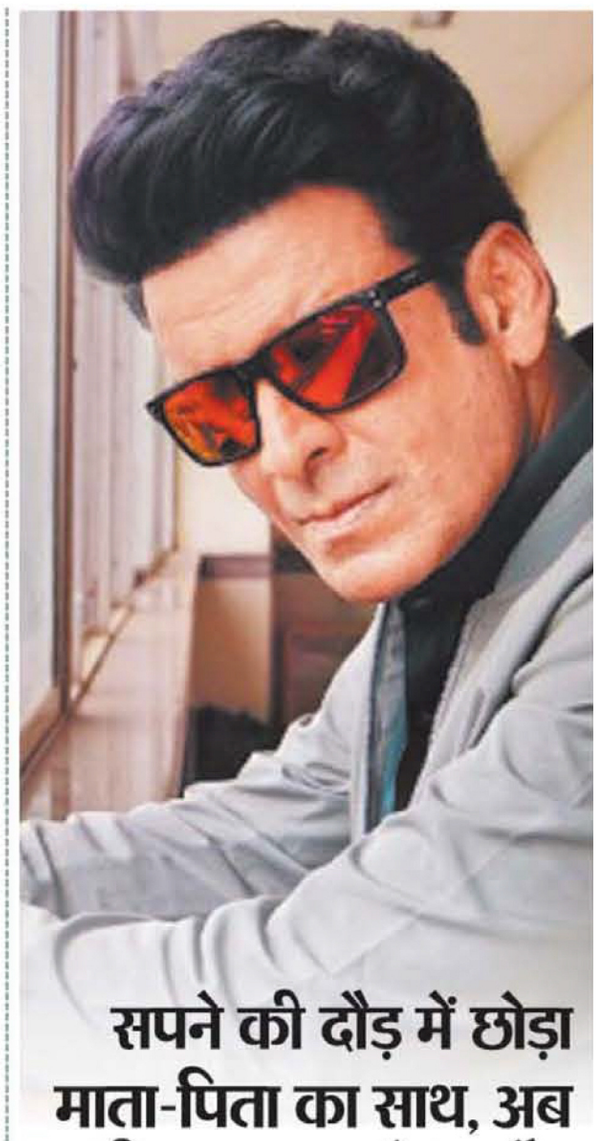
दरअसल, शो के पहले के एक एपिसोड में करण जौहर ने रिया से पूछा था कि वह ट्रेटर बनकर खेलना चाहेंगी या इनोसेंट बनकर। रिया ने साफ कहा था कि वह इनोसेंट बनना चाहती हैं। उन्होंने कहा था, 'एक्चुअली मुझे इसी साल क्लीन चिट मिली है। इसी साल ही लोगों को पता चला है कि मैं इनोसेंट हूं। बहुत देर तक शक में रही हूं, तो वो इतना पसंद नहीं है अब मुझे।'

क्या भाग्यश्री बोर्से के हाथ से फिसली आदित्य रॉय कपूर की फिल्म?

साउथ की चर्चित अभिनेत्री भाग्यश्री बोर्से और बॉलीवुड अभिनेता आदित्य रॉय कपूर, डायरेक्टर मिलाप जवेरी की आगामी फिल्म का हिस्सा होंगे। फिल्मफेयर की एक रिपोर्ट पर आधारित यह खबर पिछले दिनों खूब चर्चा में रही। लेकिन अब नया अपडेट इस बारे में सामने आया है। इस फिल्म को लेकर टी-सीरीज प्रोड्यूस कर रहा है। टी-सीरीज के एक प्रवक्ता ने कहा, 'आदित्य रॉय कपूर के साथ टी-सीरीज और मिलाप जवेरी एक फिल्म बना रहे हैं। इस प्रोजेक्ट में भाग्यश्री बोर्से के शामिल होने की खबरें गलत हैं। प्रोडक्शन हाउस जल्द ही अभिनेत्री के नाम का आधिकारिक घोषणा करेगा।'

भाग्यश्री बोर्से तेलुगु, तमिल और हिंदी फिल्मों में अभिनय करती हैं। वह बॉलीवुड में 'यारियां 2' और 'चंदू चैंपियन' में छोटे लेकिन अहम किरदार निभा चुकी हैं। वहीं फिल्म विजय देवरकोंडा की फिल्म 'किंगडम' का भी वह हिस्सा रही हैं। वह एक तमिल फिल्म 'सियोन' भी कर रही हैं।





सपने की दौड़ में छोड़ा माता-पिता का साथ, अब भी अपराध-बोध और गहरा पछतावा होता है

नेशनल अवॉर्ड जीतने वाले एक्टर मनोज बाजपेयी ने एक बार उस भारी अपराध-बोध के बारे में बात की थी, जिसे उन्होंने अपनी जिंदगी के एक बड़े हिस्से में महसूस किया था। फिल्ममेकर महेश भट्ट के साथ उनकी बातचीत का एक पुराना क्लिप इंटरनेट पर फिर से सामने आया है, जिसमें वह अपने माता-पिता का साथ छोड़ने के पछतावे के बारे में बात करते हुए दिख रहे हैं। उन्होंने वीडियो में कहा, 'मैंने सबसे बड़ी चीज जो छोड़ी, और आप इससे बहुत जुड़ाव महसूस करेंगे, वह थी अपने माता-पिता का साथ, खासकर अपनी मां का साथ। इन पूरे 20 सालों में मैंने उनके साथ कभी भी 10 दिन से ज्यादा समय नहीं बिताया। मेरे मन में अब भी एक अजीब तरह का पछतावा है कि अपने सपने को पूरा करने की दौड़ में मैंने अपने माता-पिता का साथ छोड़ दिया। जब मैंने अपने माता-पिता को स्क्रीन अवॉर्ड के लिए बुलाया, जो मेरा पहला अवॉर्ड था, तो वे दो दिन के लिए आए थे। बातचीत के दौरान उन्होंने बताया, 'बेटा, एक बात याद रखना, जो सफल नहीं हुआ, वह बेवकूफ नहीं होता।' यह बात सिर्फ एक मां ही कह सकती है।'

उन्होंने आगे कहा, 'एक बार मैं दो दिन बिताने दिल्ली गया था। सुबह नहाने के बाद बाल बनाते हुए मैंने पूछा, 'मां, मैं कैसा लग रहा हूं? अच्छा लग रहा हूं न?' उन्होंने कहा, 'बेटा, शोहरत और पैसा मिलने पर तो गधा भी सुंदर लगने लगता है।'' मनोज बाजपेयी का अपनी मां गीता देवी के साथ बहुत करीबी रिश्ता था। वह एक गृहिणी थीं और उनके जीवन भर उनकी हिम्मत का एक अहम स्रोत रहीं। एक्टर ने अक्सर एक्टर बनने के अपने मुश्किल सफर के दौरान अपने माता-पिता के त्याग और उनके सहयोग के बारे में बात की है। गीता देवी का निधन 8 दिसंबर, 2022 को 80 साल की उम्र में हुआ। वह लगभग 20 दिनों से बीमार थीं, और दिल्ली के एक अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था। उनके निधन से लगभग एक साल पहले, 2021 में, एक्टर ने अपने पिता को खो दिया था।

कार्तिक आर्यन ने लॉन्च किया डोपामिन स्टूडियोज़

कार्तिक आर्यन ने अभिनय से आगे बढ़ते हुए अपने प्रोडक्शन बैनर डोपामिन स्टूडियोज की शुरुआत की है। यह बैनर अब मशहूर फिल्म निर्देशक कबीर खान के साथ उनकी आगामी फिल्म से आधिकारिक रूप से जुड़ गया है। यह अभी तक बिना शीर्षक वाली फिल्म कार्तिक और कबीर खान की 2024 की बायोग्राफिकल स्पोर्ट्स ड्रामा 'चंदू चैंपियन' के बाद दूसरी साझेदारी है।

गौरतलब है कि 'चंदू चैंपियन' भारत के पहले पैरालंपिक स्वर्ण पदक विजेता मुरलीकांत पेटकर के जीवन पर आधारित थी, जिसके लिए कार्तिक को हाल ही में भारत के 72वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का सम्मान मिला है। असाधारण सच्ची घटना से प्रेरित इस फिल्म में कार्तिक एक किकबॉक्सिंग कोच की भूमिका निभा रहे हैं, जो कश्मीर की एक युवा लड़की के सफर को दिशा देने में मदद करता है।

माना जा रहा है कि इस फिल्म की कहानी युवा कश्मीरी एथलीट तजामुल इस्लाम के जीवन से प्रेरित है, जिन्होंने किकबॉक्सिंग चैंपियन के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई। कहानी सुनने के बाद से ही कार्तिक इससे इस कदर गहराई से जुड़ गए कि इसकी भावनात्मकता, संघर्ष, दृढ़ता और जज्बे से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाए। इसी जुड़ाव के चलते उन्होंने फिल्म में अभिनय करने के साथ ही डोपामिन स्टूडियोज के माध्यम से निर्माता के रूप में भी जुड़ने का फैसला कर लिया। इस संदर्भ में फिल्म से जुड़े एक सूत्र ने बताया, 'कहानी सुनते ही कार्तिक इससे बहुत गहरे स्तर पर जुड़ गए थे। वास्तविक जीवन की इस कहानी में मौजूद साहस, जुनून और दृढ़ विश्वास ने उन्हें काफी प्रभावित किया। उन्हें लगा कि यह ऐसी कहानी है, जिसे ज्यादा से ज्यादा दर्शकों तक पहुंचना चाहिए। निर्माता के रूप में जुड़ने का उनका फैसला इसी विश्वास और फिल्म को रचनात्मक स्तर पर और गहराई से समर्थन देने की इच्छा से आया।'

डोपामिन स्टूडियोज की शुरुआत कार्तिक आर्यन के करियर में एक नए अध्याय की शुरुआत है, जहां वह अभिनय के साथ-साथ फिल्म निर्माण में भी अपनी रचनात्मक भागीदारी बढ़ा रहे हैं। कबीर खान के साथ उनकी यह दूसरी फिल्म भी संघर्ष, महत्वाकांक्षा, दृढ़ संकल्प और मानवीय जज्बे की जीत जैसी भावनाओं पर केंद्रित है। दिलचस्प बात यह है कि इस भूमिका के लिए कार्तिक ने किस बॉक्सिंग की ट्रेनिंग भी ली है। फिल्म की शूटिंग फिलहाल जारी है और इसके कुछ हिस्सों की शूटिंग मुंबई और कश्मीर में की जा रही है। इसके अलावा फिल्म का शीर्षक, बाकी कलाकारों और रिलीज डेट से जुड़ी अन्य जानकारियां आने वाले समय में आधिकारिक रूप से सामने आने की उम्मीद है।





रुबीना दिलैक ने याद किया 'खतरों के खिलाड़ी' का सफर, बोलीं- हर दिन लगता था कि अब आगे क्या होगा?

टीवी की दुनिया में रुबीना दिलैक अपनी दमदार एक्टिंग के साथ-साथ अपने बेबाक अंदाज के लिए भी जानी जाती हैं। छोटे पर्दे पर डांस से लेकर खतरनाक स्टंट तक, उन्होंने हर जगह अपनी क्षमता दिखाई है। इस कड़ी में उन्होंने बुधवार को अपने पुराने स्टंट रियलिटी शो 'खतरों के खिलाड़ी' से जुड़ी यादों को सोशल मीडिया पर साझा किया है। रुबीना ने शो के दौरान की कई तस्वीरें और वीडियो एक साथ शेयर किए। इनमें उनके स्टंट, दोस्तों के साथ बिताए पल और शो के दौरान उनका अलग अंदाज देखने को मिला। रुबीना ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर की, जिसमें तस्वीरें और कुछ छोटे-छोटे क्लिप्स शामिल हैं। इस वीडियो में वह अलग-अलग अंदाज में नजर आ रही हैं। कुछ तस्वीरों में वह ओरी और जैस्मिन भसीन के साथ मस्ती करती दिखाई दे रही हैं। वहीं कुछ वीडियो में वह शो के मुश्किल स्टंट करती नजर आती हैं। पोस्ट में उनका फैशन स्टाइल भी देखने को मिल रहा है। इन तस्वीरों के साथ रुबीना ने लिखा, ''हर दिन इस सवाल के साथ भरा होता था कि अब आगे क्या होगा, लेकिन हमारे दिल हंसी, खुशी के आंसुओं और डर से भरे रहते थे।'' 'खतरों के खिलाड़ी' ऐसा रियलिटी शो है, जिसमें मनोरंजन की दुनिया से जुड़े सितारे अपने डर का सामना करते हैं। शो में कंटेस्टेंट्स को ऐसे स्टंट दिए जाते हैं, जिनमें कई बार ऊंचाई, पानी, रफ्तार और अलग-अलग तरह की मुश्किल परिस्थितियां शामिल होती हैं। हर स्टंट के दौरान कलाकारों को अपने डर पर काबू पाना पड़ता है। यही वजह है कि शो में सिर्फ शारीरिक ताकत ही नहीं, बल्कि हिम्मत और दिमाग का इस्तेमाल भी जरूरी होता है।

भारत में इस शो की शुरुआत 'फियर फैक्टर इंडिया' के नाम से हुई थी। बाद में इसे 'फियर फैक्टर: खतरों के खिलाड़ी' नाम मिला। शो का पहला सीजन 21 जुलाई 2008 को आया था। साल 2020 में इसका स्पिन-ऑफ 'खतरों के खिलाड़ी: मेड इन इंडिया' भी शुरू किया गया था। शो के पिछले सीजन यानी 'खतरों के खिलाड़ी 14' की शूटिंग रोमानिया में हुई थी। इस सीजन के विजेता करणवीर मेहरा रहे थे, जबकि कृष्णा श्रॉफ रनर-अप बनी थीं। रुबीना दिलैक के करियर की बात करें तो उन्होंने टीवी पर अपनी शुरुआत 'छोटी बहू' से की थी। इस शो में उनके किरदार को काफी पसंद किया गया और वह जल्द ही घर-घर में पहचानी जाने लगीं। इसके बाद उन्होंने 'सास बिना ससुराल', 'पुनर्विवाह- एक नई उम्मीद', 'देवों के देव...महादेव', 'जीनी और जूजू' और 'शक्ति- अस्तित्व के एहसास की' जैसे कई शोज में काम किया। 'शक्ति' में रुबीना के किरदार को खास लोकप्रियता मिली। इसके बाद उन्होंने रियलिटी शोज की दुनिया में भी अपनी जगह बनाई। वह 'बिग बॉस 14' की विजेता रह चुकी हैं। इसके अलावा उन्होंने 'फियर फैक्टर: खतरों के खिलाड़ी 12' और 'झलक दिखला जा 10' में भी हिस्सा लिया। रुबीना ने फिल्मों में भी कदम रखा। साल 2022 में उन्होंने राजपाल यादव और हितेन तेजवानी के साथ फिल्म 'अर्ध' से अपना फिल्मी सफर शुरू किया। इसके अलावा वह होस्ट के तौर पर भी नजर आई। उन्होंने 'द वार्ड' को होस्ट किया, जिसमें 10 गर्भवती महिलाओं के मां बनने के सफर को दिखाया गया।

मोहम्मद जोशी के लिय टाइम्स मास कम्युनिकेशन प्राइवेट लिमिटेड द्वारा पंजीकृत कार्यालय जे 85 सीमापुरी, दिल्ली से प्रकाशित इंकलाब भारत प्रेस जे एण्ड के दिलशाद गार्डन दिल्ली से मुद्रित संपादकीय कार्यालय समाचार भवन एफ-126 शाहिद नगर, चिकम्बरपुर, साहिबाबाद, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201006 ईमेल : shabdwanisamchaarw2003gmail.com www. shabdawanisamachar.page संपादक मोहम्मद जोशी ,सलाहकार संपादक : अशोक लालवानी

refresh™
MATTRESS
SLEEP HEALTHY. Wake beautiful.

HDFC BANK
We understand your world

Mega Exchange Offer
Limited time only

Zero Down Payment &
EMI Available on Selected Models

- Get Value upto ₹12000/- for Old Mattress
- Assured Gifts upto ₹12448/-
- Total Exchange Benifits ₹24448/-

Offer available on
1pc of 72" x 60" or 2pcs of 72" x 30"
and above

Hurry !!! Rush to your nearest dealer

Customer care no. : 18001209630